प्रभा

2013-14

(अंक- 6)

संरक्षक

डॉ. सत्यदेव सिंह

❑

सम्पादक

डॉ. राकेश कुमार राम

❑

सम्पादन सहयोग

डॉ. हबीबुल्लाह

डॉ. पूनम सिंह

श्री अभय लियोनार्ड एक्का

धियो योनः प्रचोदयात्

दयानन्द महाविद्यालय, वाराणसी

डी. ए. वी. पी. जी. कॉलेज

नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

महर्षि दयानन्द मार्ग, वाराणसी- 221001

दूरभाष- 0542-2214438, वेब-साइट : www.davpgvns.ac.in

महाविद्यालय की प्रार्थना

''ओ3म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।''

पृथ्वी, अंतरिक्ष तथा द्युलोक में व्याप्त सविता रूप परमात्मा के उस श्रेष्ठ तेज का हम ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धि को प्रेरित करते हैं।

ओ3म् शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा। शन्न इन्द्रो वृहस्पतिः। शन्नोविष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मवदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु अवतु मामवतु वक्तारम्॥

मित्ररूप परमात्मा हमारे लिये कल्याण करें, वरुण रूप परमात्मा कल्याण करें, अर्यमा रूप परमात्मा हमारे लिये कल्याण करें, व्यापक विष्णु (रूप परमात्मा) हमारे लिये कल्याणकर हों। तुम ब्रह्म हो! तुम्हीं को प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगा, ऋत कहूँगा, सत्य कहूँगा। वह ब्रह्म मेरा रक्षण करे, वह वक्ता का रक्षण करे, पुनः मेरा रक्षण करे और वक्ता की रक्षा करे।

ओ3म् सहनावतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

(परमात्मा) एक साथ हम दोनों गुरु-शिष्य का रक्षण करें, एक साथ हम दोनों का पोषण करें, एक साथ हम दोनों वीर कर्म करें। तेजस्वी हम दोनों का अध्ययन हो, हम दोनों विद्वेष न करें।

ओ3म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योतिव्याधी महारथो जायताम्। दोन्ध्रीं धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्ति : पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु। फलवत्यो नः औषधयः पच्यंताम्। योगक्षेमो नः कल्पताम्।

सब ओर ब्राह्मण ब्रह्म तेजवाला हो, सब ओर राष्ट्र में क्षत्रिय शूर वीर-साधक, व्याधिमुक्त, महारथी हो, गाय दुधारू, बैल वहन करने वाला, घोड़ा द्रुतगति वाला, यज्ञकर्त्ता भी धारणाशील युवा और जयी, श्रेष्ठ रथी, सभ्य हो। मेघ हमारे लिए इच्छाभर बरसें। औषधियाँ हमारे लिए फलवती हों। हमारा योगक्षेम बनें।

''ओ3म् तेजोहसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि। बलमसि बलं मयि धेहि।
ओजोहस्योजो मयि धेहि। मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। सहोहसिस हो मयि धेहि।

(परमात्मन्) आप तेज हो, तेज मुझमें भरो। वीर्यवान् हो, वीरता मुझमें भरो, बल हो, बल मुझमें भरो। ओज हो, ओज मुझमें भरो। सह (धीरता) हो, सह मुझमें भरो।

ओ3म् असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माहृमृतं गमय॥

असत् से मुझे सत् की ओर प्रेरित करो, तम से मुझे ज्योति की ओर प्रेरित करो। मृत्यु से मुझे अमृत की ओर प्रेरित करो।

सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।
''सर्वस्सद्बुद्धिमाप्नोतु सर्वं सर्वत्र नन्दतु।
ओ3म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।''

सभी कठिनाइयाँ पार करें, सब भलाइयाँ देखें। सब सद् बुद्धि पायें, सब सर्वत्र आनन्द पायें।

महाविद्यालय का कुलगीत

परम मनोरम पवित्र सुन्दर,
यह आर्य विद्या का भव्य मंदिर।

यह भक्ति - मुक्ति की भूमि काशी।
सकल कला ज्ञान की प्रकाशी।।
चरण को धोती है जिसके गंगा,
यह ज्ञान - गंगा का भव्य मंदिर।
परम मनोरम .....।।

यह संत-भक्तों की जन्मभूमि।
यह कर्मवीरों की कर्मभूमि।।
हुई निनादित है वेद - वाणी,
यह वेद-विद्या का भव्य मंदिर।
परम मनोरम .....।।

ऋषि दयानंद की ये शिक्षा।
यही यहाँ की पवित्र दीक्षा।।
पुरातनूतन का हो समागम,
यह सर्वविद्या का भव्य मंदिर।
परम मनोरम .....।।

'महामना' के पथानुरागी।
तपी, व्रती, विज्ञ, वीतरागी।।
यह रामनारायण, गौरीशंकर,
के दिव्य सपनों का भव्य मंदिर।
परम मनोरम .....।।

असत् से सत् को गमन करें हम।
हे देव! तुझको नमन करें हम।।
जयी हों जग में , सुकीर्ति फैले,
यह सत्य - शिक्षा का भव्य मंदिर।।

परम मनोरम पवित्र सुन्दर,
यह आर्य विद्या का भव्य मंदिर।।

रचनाकार- डॉ. राकेश कुमार द्विवेदी

अनुक्रम

महाविद्यालय की प्रार्थना		... 2
महाविद्यालय का कुलगीत		... 3
प्रबन्धक की कलम से	श्री अजीत कुमार सिंह	... 6
संरक्षक की कलम से	डॉ. सत्यदेव सिंह	... 7
सम्पादकीय	डॉ. राकेश कुमार राम	... 9
विश्वकवि रवीन्द्रनाथ और गाँधी जी	डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र	... 10
प्राचीन विरासत और इतिहास	डॉ. हीरालाल पाण्डेय	... 11
Pottery Industry in Chunar : Glory if India	Dr. Pradeep Kamal	... 14
भारत-भूटान के मध्य आर्थिक सम्बन्ध	डा. वी. के. एल. श्रीवास्तव	... 17
Importance of Tourism in India	Dr. A.K. Mishra	... 19
स्वास्थ्य एवं चिकित्सा	डॉ. पी. डी. सिंह	... 20
ईश्वर जिस पर प्रसन्न होता है	डॉ. प्रवेश भारद्वाज	... 22
दो कविताएँ	डॉ. अरुण कुमार श्रीवास्तव	... 23
आगम एवं पर्यावरण	डॉ. मिश्री लाल	... 24
भारतीय राजनीति में जाति एवं अपराधीकरण	डॉ. एस. बी. सिंह	... 27
The Importance of Moral Education in India	Dr. S. Gopal Jee	... 28
Standing Out in a Interview	Dr. Richa Rani Yadav	... 30
सुभाषित वचनावली	डॉ. लल्लन प्रसाद जायसवाल	... 31
अर्न्तदृष्टि तथा बुद्धि	डॉ. हरिश्चन्द्र यादव	... 32
अल्लामा इकबाल की हुब्बुलवतनी (देशभक्ति)	डॉ. हबीबुल्लाह	... 33
अर्वाचीन संस्कृत कथाएँ : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में	डॉ. पूनम सिंह	... 35
Mobility of Agriculture Labour and Status of Employment in India	Dr. Anup Kr. Mishra	... 37
दो रचनाएँ	डॉ. कमालुद्दीन शेख	... 43
बुद्धि-विलासी दिल्ली-वासी	डॉ. राकेश द्विवेदी	... 44
शोषित समाज के प्रेरणास्रोत	डॉ. राकेश कुमार राम	... 46
Social Media : A New Paradigm of Communication	Dr. Sangeeta Jain	... 48
शंकराचार्य एक अद्‌भुत व्यक्तित्व	डॉ. सरिता रानी	... 54
भारतीय नारी उत्थान के अग्रदूत ज्योतिराव फूले	डॉ. विनोद कुमार चौधरी	... 56
भारत में खेलों का ऐतिहासिक विकास	डॉ. प्रशान्त कश्यप	... 58
आत्म विश्वास- सफलता का मूलमंत्र	सीमा	... 60
कुछ प्रश्न अपने आप से!	डॉ. सतीश कुमार सिंह	... 61
Women Subjugation as a Curse of History : Shashi Despande's Hear Me, Sanjay	Dr. Indrajeet Mishra	... 62
भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व	डॉ. मुकेश कुमार सिंह	... 65

Nobel Prize in Economics	Dr. Alok Kumar Pandey	... 67
उत्तर आधुनिकतावाद : एक बौद्धिक तर्क	डॉ. स्वाति सुचरिता नन्दा	... 70
वैदिक कालीन समाज में नारी	डॉ. शैलजा सिंह	... 73
परम्परा से आधुनिकता की ओर- भारत के विशेष संदर्भ में	डॉ. हसन बानो	... 75
Conscience, the Ultimate Weapon : Shashi Despande's The Last Enemy	Dr. Naveen Kumar Vishwakarma	... 76
Empowering Rural Women through Panchayati Raj	Sarika Verma	... 78
सूचना का अधिकार- प्रजातांत्रिक हथियार	रेनू यादव, रवि सिंह	... 80
काशी की तीर्थयात्राएँ	विनोद कुमार	... 82
आत्महत्या : एक विश्लेषण	रागिनी मिश्रा	... 85
आत्मसंघर्ष एवं स्वनिर्माण	पूर्णेन्दु शेखर	... 87
डवलपमेन्ट	मानसी दूबे	... 88
कविता	लक्ष्मण जी यादव	... 89
क्या कहूँ	विजय प्रताप सिंह	... 90
जागो और खौलो	संजय कुमार उपाध्याय (संजू)	... 91
NSS : Who is God	**Ashish Kr. Sahu (Divyansh)**	**... 92**
स्वामी विवेकानन्द और उनका संदेश	मोहित अवस्थी	... 93
भ्रष्टाचार	रजनीश कुमार	... 95
दहेज बुरी प्रथा है	दीपक कुमार शर्मा	... 96
हिन्द देश	दीपक कुमार शर्मा	... 96
पंडित की शर्त	बाबू लाल	... 97
दौलत	पीयूष कुमार पाण्डेय	... 98
मैं परवाना हो गया	अजय शंकर गुप्ता	... 99
मेरी आदत	अमृत कुमार तिवारी	... 99
शिक्षा अभियान	अमृत वासन	... 100
हौंसलों की उड़ान	नवीन कुमार गोपालन	... 100
इन्सानियत का दर्द	गुफरान हकीम	... 101
शहीदों के शहादत को सलाम	नलनीश मिश्र	... 102
कभी मत भूलों	अजय कुमार यादव	... 103
मदर्स डे (माँ)	अजय कुमार यादव	104
लापता बचपन	राम विनय मौर्य	105
Article of Couege Magazing	Himalaya Putra Bhattacharya	105
माँ होती ममता की सागर	प्रिन्स चन्द पाण्डेय	106
जंग ए कश्मीर	राम विनय मौर्य	107
About the College	Dr. Vimal Shankar Singh	108

प्रबन्धक की कलम से

संस्कृति किसी भी राष्ट्र समाज या जाति की आत्मा होती है और यह सर्वविदित है कि संसार के इतिहास में भारतीय संस्कृति का वैशिष्ट्य सर्वाधिक है। भारतीय संस्कृति गुणग्राहक एवं समन्वयकारिणी रही है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में शिक्षा को पवित्रतम् माना गया है। भारत के ऋषि-मुनि से लेकर अनेक विभूतियों ने शिक्षा को ही मुक्ति, समृद्धि और प्रगति का साधन माना है। इन्हीं विभूतियों में स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज भी रहे हैं, जिनके आदर्शों को लेकर बाबू गौरीशंकर प्रसाद एवं पं. रामनारायण मिश्र ने दयानन्द महाविद्यालय की स्थापना की। उत्तरोत्तर यह महाविद्यालय अपने संस्थापकों एवं इनसे जुड़े अनेक महामानवों के आदर्शों को लेकर आगे बढ़ रहा है, जो मेरे लिए हर्ष का विषय है। उसी कड़ी में महाविद्यालय की पत्रिका 'प्रभा' का प्रकाशन भी है।

मुझे आशा है कि 'प्रभा' पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं में अच्छे संस्कार का सृजन होगा साथ ही साथ महाविद्यालय के यश में वृद्धि भी होगी। मैं इस पुनीत कार्य हेतु 'प्रभा' के सम्पादक एवं सम्पादन मण्डल के सहयोगियों को बहुत-बहुत शुभकामना एवं बधाई देता हूँ।

(अजीत कुमार सिंह)

प्रबन्धक

संरक्षक की कलम से.....

हम यह बात बहुत विश्वास के साथ कह सकते हैं कि समाज में ९० प्रतिशत से अधिक लोग जीवन में बहुत अभूतपूर्व करने के लिए नहीं बने हैं। जबकि हममें से लगभग सभी की एक छुपी हुई इच्छा हमेश कुछ न कुछ महान करने की होती है। परन्तु हमें यह समझना होगा कि समाज में पैदा हर व्यक्ति महान कार्य नहीं कर सकता अपितु हममें से हर कोई कुछ छोटी-छोटी चीजें ही सही बहुत महान ढंग से कर सकते हैं।

विश्व के इतिहास के पन्नों में नजर डालें तो बहुत थोड़े से लोगों ने विश्व में प्रभावशाली भूमिका निभाई, जबकि अधिकांश ने उन प्रभावशाली बनते इतिहास के पन्नों पर सिर्फ नजर भर दौड़ाई। हमारे विचार से इतिहास को विभिन्न तरीकों से नियोजित व परिभाषित किया जा सकता है। जैसे जिस संस्था में कार्य कर रहे हैं उसमें अपनी ऐतिहासिक भूमिका, अपने परिवार, शहर यहाँ तक जिस मुहल्ले या गाँव में रहते हैं, वहाँ भी एक सकरात्मक दृष्टिजनित भूमिका जो दूसरों या आने वाली पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा दे सके, तो इसमें जीवन में कुछ प्रभावशाली भूमिका निभा पाने की अभिलाषा पूरी हो सकती है। परन्तु किसी ऐतिहासिक भूमिका के लिए मन में सामाजिक करुणा, न्याय एवं सहानुभूति भरा संवेदनशील आत्म-मंथन पैदा करना होगा। इस तरह से हर कोई अपने प्रभाव और पसंद के क्षेत्र में अपनी ऐतिहासिक भूमिका अदा कर खुद की एक गौरवशाली कहानी लिख सकता है। जरूरत है इसके लिए अपनी सोच, पसन्द और प्राथमिकता को समाज, देश और काल के लिए अपने अन्दर एक लक्ष्य स्थापित कर समर्पित की होने की। हमें याद रखना होगा कि मन की इस दबी इच्छा के लिए कोई देवदूत स्वर्ग से नहीं आने वाला जो आपके कानों में सुर-सुराकर कह सके कि चलो कोई ऐतिहासिक कार्य करें। यह सब तो हमें खुद करना होगा। पूर्व में भी समाज में जितनी क्रांतिकारी चेष्टायें हुई उनके पीछे इसी तरह की मानवीय और समर्पित प्रेरणायें ही थी। गाँधी जी के साथी सभी अहिंसक नहीं थे, अपितु उन्होंने प्रेरक अहिंसक बनाये थे। अस्पृश्यता निवारण का आन्दोलन स्पृश्यों ने तमाम विपरीत परिस्थितियों में किया था। विधवा विवाह का आन्दोलन अनेक पुरुषों ने तमाम वितण्डावाद एवं पोंगाविचारों के विरोध के बीच शुरु किया। इसी तरह समाजवाद का आन्दोलन शुरु करने वाले स्वयं श्रमिक नहीं थे। इन सबकी भावनाओं के पीछे एक मूल प्रेरणा थी, वह है समाज के लिए करुणा, समर्पण एवं सहानुभूति। लौंग फेलो ने 'साम ऑफ लाइफ' में लिखा है कि ''संसार विशाल समर भूमि है, और जीवन एक छावनी है। इसमें भेड़, बकरी मत बनो, वीर पुरुष बनो। वीर पुरुष के लिये यह समर भूमि, बालवृत्ति वाले मनुष्यों के लिए क्रीड़ाभूमि और धार्मिक मनुष्यों के लिए यज्ञभूमि हो जाती है। इस तरह एक ने कहा सारा विश्व मेरे लिए समर भूमि है, दूसरे ने कहा ब्रजभूमि है और तीसरे ने कहा यज्ञभूमि। हमारी

अपनी जो मनोवृत्ति, भूमिका या आकांक्षा है उसी के अनुरुप हम अपना-अपना मैदान बना लेते हैं और इसी में अपने-अपने पसन्द की पृष्ठभूमि में हमें अपनी-अपनी ऐतिहासिक भूमिका के लक्ष्य को निर्धारित करना होगा।''

वैसे तो सामान्यतः मनुष्य केवल तीन भूमिका में दिखलाई देता है। वह है निर्माता, उपभोक्ता एवं केवल दर्शक। यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह अपने लिए कौन सी भूमिका का चयन करता है।

बहुत से लोगों का मानना है कि दुनिया में सबकुछ लक्ष्मी में ही निहित है। 'लक्ष्मी' शब्द जिसे आजकल 'पैसे' के प्रतीक के रूप में दर्शाया जाता है और समाज में बहुसंख्यक लोगों की भूमिका इसी के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। परन्तु एक और तरीका है सोचने व करने का, कि लक्ष्मी शान्ति और खुशी का प्रतीक है। लक्ष्मी के मूर्ति पर अगर ध्यान दें तो वह सोने की सिक्कों से सजी जरूर होती है लेकिन प्रसन्नता के प्रतीक स्वरूप उनके हाथों में जो कमल का फूल है या जिस कमल के फूल पर उनका आसन है, दोनों ही कीचड़ में पैदा होते हैं। कमल को पवित्रता और शान्ति का प्रतीक माना जाता है। इसके बिना शांति, वैभव और खुशी के कोई मायने नहीं स्थापित किया जा सकता है। पैसा किसी भी तरह से कमाने का अर्थ आपके पास लक्ष्मी है, यह कदापि नहीं हो सकता क्योंकि किसी भी तरह से पैसा कमाने पर आपके पास खुशी, चैन हो, यह आवश्यक नहीं। जबकि लक्ष्मी का अर्थ ही है 'पीस-प्रासपैरिटी और हैपीनेस' और यह उन्हीं के पास रहती है जिनके हृदय में पवित्रता, शांति, खुशी, करुणा और सहिष्णुता का स्थान हो।

'प्रभा' के इस अंक को मैं कर्मयोग के लिए समर्पित करना चाहूँगा। कर्म जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के द्वारा पूरे संसार में प्रतिपादित किया था और जिस पर चलकर बहुत से लोगों ने अपने-अपने समाज में विशिष्ठ स्थान बनाया। प्रश्न है कि आप अपने को निर्धारित कर्म के प्रति कितना समर्पित कर पाते हैं।

(डॉ. सत्यदेव सिंह)

प्राचार्य

सम्पादकीय

भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं प्रख्यात् दार्शनिक स्व. डॉ. राधाकृष्णनन ने कहा था- ''शिक्षा का प्रयोजन यह नहीं है कि हमें सामाजिक परिवेश के उपयुक्त बना दे, बल्कि यह है कि वह बुराइयों से लड़ने और एक पूर्वतर समाज के सृजन में हमारी सहायता करे।'' अर्थात् शिक्षा मानव की जागृति, आत्म प्रकाश, व्यक्तित्व विकास एवं परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने की एक विकसित तथा सकारात्मक विधि है। भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा के इसी पहलू पर जोर दिया गया है। लेकिन वर्तमान समय में स्वार्थ युक्त मनोवृत्ति, दिशाशून्य राजनीतिक, आर्थिक उदारवाद की आँधी एवं मीडिया तथा वैश्विक सूचनातंत्र के अनवरत बढ़ते प्रभाव से हम सबमें जो चारित्रिक एवं व्यवहारिक खुलापन आया है, जिसके परिणामस्वरूप जनसामान्य के नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन हुआ है, शिक्षकों की भूमिका और हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति के ढांचीय एवं प्रकार्यात्मक पहलू को एक कटघरे में खड़ा कर दिया है। आज हिंसा एवं अपराध अपने चरम स्थिति पर है। मानवीय मूल्यों में गिरावट लगातार जारी है। लेकिन शिक्षा रूपी अभिकरण से इन मूल्यों की पुर्नस्थापना कर समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है। इसके लिए शासन, संस्था, विद्यार्थी एवं शिक्षक को आगे आना होगा। विशेषकर शिक्षक का गुरुतर दायित्व है, क्योंकि 'अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में अपने ज्ञान की खाद देते हैं और अपने श्रम सीकर से सींचकर उन्हें महाप्राण शक्तियाँ बनाते हैं। - अरविन्द घोष

इस गुरुतर दायित्व में मुझे 'प्रभा' पत्रिका के माध्यम से एक छोटी सी भूमिका का निर्वाह करने का दायित्व सौंपा गया है, इसके लिए मैं महाविद्यालय के प्राचार्यजी का आभारी हूँ। मैं महाविद्यालय के समस्त सम्मानित अध्यापक/अध्यापिकाओं एवं छात्र/छात्राओं के प्रति भी आभारी हूँ, जो अल्प समय में ही अपने लेख, कविता, कहानी आदि प्रकाशन हेतु देकर मेरा सहयोग किया।

सम्पादन सहयोग हेतु डॉ. हबीबुल्लाह, डॉ. पूनम सिंह एवं श्री अभय लियोनार्ड एक्का के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन लोगों ने पत्रिका प्रकाशन में मेरा सहयोग किया। साथ ही उन सभी लोगों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिनका परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग मिला।

शुभकामनाओं सहित.....

(राकेश कुमार राम)

सम्पादक

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ और गाँधी जी

–डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र

कवीन्द्र रवीन्द्र और गाँधी जी दोनों ही भारतीय इतिहास की महानतम विभूतियाँ हैं। दोनों एक ही कालखंड की उपज हैं और दोनों का होना सारे संसार ने माना। दोनों ने संसार को यह बतलाया कि भौतिक दृष्टि से भले ही भारत पराधीन था किन्तु उस दशा में भी उसकी आत्मा स्वतंत्र थी। दोनों का कार्यक्षेत्र प्रत्यक्षत अलग था। गाँधी ने राजनीति का क्षेत्र चुना तो रवीन्द्र नाथ ने गीत और कविता का। इन दोनों क्षेत्रों में कोई सीधा सम्बन्ध नहीं दीखता तो भी दोनों एक दूसरे के सबसे निकट थे। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने दोनों का तुलनात्मक संदर्भ लेते हुए ठीक कहा है–

''सच पूछिये तो गाँदी वही पुरुष थे जिसकी प्रतीक्षा रवीन्द्र के गीतों और नाटकों में की जा रही थी और जिसके स्वागत में कवि ने पहले से ही अपनी कल्पना को मिट्टी पर बिछा रखा था और रवीन्द्र भारत की ठीक वही आत्मा थे जिसके उद्‌गारों को मूर्त रूप देने के लिए गाँधी का आविर्भाव हुआ था। सच पूछिये तो गाँधी और रवीन्द्र एक दूसरे के पूरक नहीं, बल्कि एक ही हीरे के दो पहलूओं के समान थे। जब गाँधी जी ने शरीर के अखाड़े में आत्मा का शस्त्र निकाला तब सारी दुनिया एक अनुपम चमत्कार से भर गई और स्वयं गुरुदेव ने भी अपने चिरपोषित आदर्श को अपनी ही जन्मभूमि में आकार ग्रहण करते देखकर लन्दन से लिखा कि ''हम तो गाँधी जी के इस लिए कृतज्ञ हैं कि वे भारतवर्ष को यह प्रमाणित करने का अवसर दे रहे हैं कि मानव आत्मा की दिव्यता में उसका अब भी अटूट विश्वास है।''

अनेक लेखकों ने गाँधी को राष्ट्रीयतावादी और रवीन्द्रनाथ को अन्तर्राष्ट्रीय या विश्वमानवतावादी कहते हुए दोनों में अन्तर देखने की कोशिश किया है किन्तु विश्व कवि का मानवतावाद भारतीय अध्यात्म और दर्शन की उसी पृष्ठभूमि पर आधारित है जिस पर गाँधी जी के सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त।

रवीन्द्र नाथ की कामना है–

''जहाँ मन निर्भय हो और सिर ऊँचा हो,
जहाँ ज्ञान स्वतंत्र है
जहाँ विश्व संकीर्ण घरेलू दीवारों से
विभिन्न टुकड़ों में न बँट गया हो
जहाँ शब्द सत्य की गहराई से प्रस्फुटित होते है
जहाँ श्रान्तिहीन प्रयास अपने बाहुओं को
पूर्वता की ओर बढ़ाते है
जहाँ तर्क की निर्मल धारा मृत आचरण की निर्जन
मरुभूमि की बुलका में
अपना पथ न भूल गई हो
जहाँ पर तुम्हारे द्वारा मन सतत विशाल होते हुए
विचार और कर्म की ओर ले जाया जाता है
उसी स्वतंत्रता के स्वर्ग में, हे पिता, मेरा देश जगे।''

गाँधी की स्वतंत्रता की कल्पना भी इससे भिन्न नहीं है। उन्होंने भी एक बार स्पष्ट कहा था कि अगर पेरिस और लंदन के भग्नावशेष पर भारत की आजादी मिली तो वह किस काम की होगी। भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत थे किन्तु लक्ष्य उनका यही था कि संसार साम्राज्यवाद से मुक्त हो। शोषण, अत्याचार और असमानता किसी रूप में कहीं भी हो, गाँधी उसके विरुद्ध थे। रवीन्द्रनाथ की उपर्युक्त काव्यपंक्तियों में जो कामना व्यक्त की गई है वही गाँधी जी की भी कामना है।

रवीन्द्र नाथ के विचारों को स्पष्ट करते हुए दिनकर जी का कथन उद्धरणीय है–

''रवीन्द्रनाथ में राष्ट्रीयता औरअन्तर्राष्ट्रीयता एकाकार दीखती है। अपनी मान्यता की राष्ट्रीयता की व्याख्या करते हुए उन्होंने 'रिलीजन ऑफ मैन' में कहा है कि भारतवर्ष को मैं कोई भौगोलिक खंड नहीं बल्कि एक भावना मानता हूँ। यह भावना आध्यात्मिक मनुष्य की सत्ता में विश्वास की भावना है। .... भारत सब कुछ खोकर भी आज तक उस भावना से लिपटा हुआ है, एक यही गौरव

उसके भविष्य की आशा के लिए काफी है। उन्होंने कहा है कि विदेशों में भी जब किसी मनुष्य में उन्हें भारतीयता का लक्षण मिलता था, तब वे उसे आत्मीय

* पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

जानकर उसका सत्कार करते थे। एक जाति के लोग दूसरी जाति से भिन्न हैं, इस चेतना से ही कवि घबरा जाते थे और भारतीय होने का अभिमान उन्हें इसलिये था कि वे मानते थे कि भारत की मूलात्मा इस भिन्नता के विरुद्ध है। उनका विश्वास था कि मनुष्य के अनन्त एवं निरवच्छिन्न व्यक्तित्व को पूजने वाली इस भावना की जिस दिन विजय होगी, उस दिन, असल में भारत विजयी होगा।''

(दिनकर, अर्द्धनारीश्वर, पृ. १५२)

'प्रवासी' शीर्षक एक कविता में उन्होंने बतलाया है कि उनका घर सभी जगहों में है। सभी देशों में उनका देश है जिसे पाने के लिए वे संघर्षरत हैं। उनके शब्द हैं–

सब ठाइ मोर घर आमि सेइ घर मरि खूँजिया,
देशे-देशे मोर देश आच्छे आमि सेई देश लेवो जूझिया।।

इस बड़े घर और बड़े देश की खोज का अर्थ यह नहीं है कि अपने देश और अपने घर से उनका अनुराग किसी माने में कम है। सच तो यह है कि सच्चे भारतीय होने के कारण ही वे संसार में अपना घर और देश देख पाते हैं। दिनकर जी के शब्दों में–'रवीन्द्र नाथ का भावपक्ष परम्परागत भारतीयता से पूर्ण था। उनके सामने वही दुनिया झिलमिला रही थी जो हमारे उपनिषदकालीन ऋषियों की दुनिया थी। उनके हृदय के मूलभाव भी वही थे जो हमारे देश के मध्यकालीन वैष्णव कवियों के रहे होंगे। किन्तु उनकी दृष्टि वही नहीं थी जो मध्यकालीन भारतीयों की थी। वे विज्ञान के जाग्रत युग के मनुष्य थे और अन्धविश्वास तथा निस्सार रुढ़ियों का उन पर कोई प्रभाव नहीं था।'

दूसरी तरफ गाँधी भी राष्ट्रपिता थे लेकिन वे महात्मा

थे। उनकी आत्मकथा सत्य के प्रयोगों की आत्मकथा थी। भौतिक शक्तियों के विरुद्ध जो कठिन संघर्ष वह कर रहे थे उसमें आत्मिक शक्ति का चरमोत्कर्ष दिखलाई पड़ता है। सत्य और अहिंसा के शस्त्रों के द्वारा ब्रिटिश साम्राज्यवाद का पराभव विश्व इतिहास की एक अद्‌भुत घटना थी जो विश्वकवि के सपनो को चरितार्थ करती थी।

दिनकर जी इसी दृष्ट से निष्कर्ष देते हैं–''गाँधी और रवीन्द्र नाथ- इन दो मूर्तियों के माध्यम से भारत ने पश्चिमी जगत को यह विश्वास दिलाया कि उसकी आत्मा मरी नहीं, बल्कि पूर्ण रूप से जीवित और चैतन्य है। अनादिकाल से भारत उच्च तथा सूक्ष्म मानवता का सबसे जाज्वल्यमान प्रतिनिधि रहा है, जिसकी अन्य देशों में सिर्फ कल्पना की जाती रही है। गाँधी के विषय में आइस्टाइन ने कहा था कि कई पीढ़ियों के बाद लोग जब गाँधी जी का चरित्र पढ़ेंगे तब उन्हें विश्वास ही नहीं होगा कि ऐसा कोई मनुष्य किसी समय सचमुच जिन्दा था। रवीन्द्र नाथ की कविताएँ जब किट्‌स के सामने पहले-पहल आई तब उसने अपने साहित्यिक मित्रों से चकित होकर कहा कि भारत में तो एक ऐसा कवि उत्पन्न हुआ है जो हम सबों से कहीं श्रेष्ठ और महान है। ... रवीन्द्र कविता में जो दिव्यता, कोमलता और सांस्कृतिक पवित्रता व्याप्त थी उससे चकित होकर कवि एजरा पाउंड ने बड़ी ही विनयशीलता के साथ कहा कि ''जब मैं टैगोर से विदा होता हूँ तब मुझे मन ही मन मान होने लगता है कि मैं उनकी तुलना में वह असभ्य मनुष्य हूँ जो अभी खाल ही पहने हुए है और जिसके हाथ में मात्र पत्थर की लाठी ही पड़ी हुई है।'' आयर्लैंड के मेधावी चिन्तक स्वर्गीय जार्ज रसेल ने लिखा है कि ''जिसने रवीन्द्र को नहीं देखा वह इस बात को समझ ही नहीं सकता कि पूर्वकालीन संसार में मनुष्यों की आत्मा पर कवि की आत्मा का वैसा अभेद्य साम्राज्य क्यों था। हमारे वर्तमान हौल युग में अगर कविता की मर्यादा को कोई कायम रखे हुए हैं तो वह रवीन्द्र नाथ हैं।'' .... स्पष्ट ही रवीन्द्रनाथ की इस प्रशस्तियों का कारण यह नहीं था कि वे योरोपवालों को अपना मालूम होते थे, बल्कि यह कि योरोपवाले उनकी रचना और व्यक्तित्व में उन चीजों की झलक पाते थे, जो उनके पास नहीं थी और जिनकी उन्हें सख्त तलाश थी।''

(दिनकर-अर्द्धनारीश्वर, पृ. १५६-५९)

प्राचीन विरासत और इतिहास

-- डॉ. हीरालाल पाण्डेय

भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के सम्मुख सर्वोत्तम सत्ता के प्रति समर्पण, आस्था और निष्ठा का प्रश्न विश्वास की कसौटी पर सत्-प्रतिशत अनुभूति का आधान नहीं बनता है, तो उसकी पृष्ठभूमि में तर्क का विकल्प उपस्थित होता है और तर्क प्रमाण की खोज करता है, जैसे सूर्य और चन्द्र व्योम के अन्तराल से सबको समान दिखते हैं और उनके प्रभाव को लगभग सभी गर्म और सर्द के रूप में अनुभव करते हैं, परन्तु गर्म या सर्द के अनुपात का मापन तो विज्ञान के उपकरण ही कर पाते हैं और मनुष्य तो पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति भी नहीं कर पाता है। ठीक यही स्थिति भारतीय संस्कृति के मूलाधार कहे जाने वाले साहित्यिक ग्रंथों में वर्णित सर्वात्मक सत्ता () की है। वह अपने प्रभाव की रहस्मय पत्तों की अन्तर्दशा में पुलकायमान होता है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं धर्म का सर्वप्रथम आधार माना जाने वाला ग्रंथ वेद है, जिसे सभी नित्य मानते हैं। वेद को सर्वसत्तात्मकता का स्वरूप भी मान लिया गया है, अर्थात् वह ईश्वर की तरह की नित्य और शाश्वत है, परन्तु अनादि एवं अनन्त सत्ता की तरह की वेद भी हो सकता है। यह प्रश्न ही समर्पण और आस्था का स्तम्भ है, जहाँ वेद, सर्वसत्तामक स्वरूप के प्रति ज्ञान का उद्भव करता है, वहीं स्वयं दिव्य संदेशों और मार्मिक चेतनाओं से अनुप्राणित दृष्टिगोचर होता है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति के संवाहक वेद स्थित प्रज्ञता के जनक है। भारत मुख्यतः आर्यों के देश है और वेद ही आर्य संस्कृति के उद्घोषक व पोषक हैं क्योंकि सनातन धर्मानुयायी वेदों के प्रमुख भाष्यकारों में सायण के भाष्य को श्रेष्ठ मानकर उसे ही आर्यजाति की संस्कृति, सभ्यता और आचार-विचार का अनुयायी मानते हैं। वस्तुतः वेद ही आर्यों के सामाजिक, आर्थिक, राज्य स्थापन, विजयें आदि के ऐतिहासिक उपादान है। उपर्युक्त उपादानों की निरन्तरता एक सतत् प्रक्रिया के रूप में उपस्थित होकर इतिहास का अभिज्ञानिक आधार निरूपित करती है। यही नहीं वेदों में भूगोल, खगोल, भृष्टि आदि का विवरण ऐतिहास काल निर्धारण का साध्य भी बनता है। एक प्रकार से हम यह कह सकते हैं कि वेद गाथा से युक्त एक अद्भुत या दिव्य ग्रंथ है जो कि प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्राचीनतम उद्गम स्थल है। वास्तव में वेद में समस्त मानव कल्याण के साथ-साथ सम्पूर्ण सृष्टि के सुख और प्रगति की भावना सन्निहित है। वास्तव में वेद के रूप में महर्षियों ने मानवता का संदेश दिया है जो कि उनकी वाणी से मुखरित हुआ है।

मानव जीवन के विभिन्न उपादानों का एकात्मक स्वरूप ही किसी एक देश या राष्ट्र की संकल्पना को साकार करता है और यहीं से राष्ट्रीय संस्कार का निरूपम प्रारम्भ होकर विभिन्न अवधारणाओं के परिवेश में प्रस्फुटित होकर निरंतर और स्थायित्व के लिए इतिहास बनता है। प्राचीन भारतीय संस्कृति के सूत्राधार वैदिक साहित्य उपर्युक्त ऐतिहासिक संरचना के स्तम्भ सदृश्य माने जा सकते हैं, क्योंकि ऋग्वेद से लेकर अथर्ववेद तक सभी में राष्ट्र के लिए आवश्यक तत्व जैसे राजनीतिक संगठन, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन तथा धर्म के लोक व परलोक विषयक अनेकानेक संदर्भ संस्कृति के ऐतिहासिक आयामों को अद्भुत आधार प्रदान करते हैं। उदाहरणार्थ ऋग्वेद में सभा में सभासद अश्व पर आरुढ़ हुआ वर्णित है।

अश्वीरथी सुरुप इद् गोमां इदिन्द्र ते सखा।
श्वात्रंभाजा वयसा सचते सदाचन्द्रो याति सभामुप॥

ऋग्वेद में एक अन्य स्थान पर सभा के अन्तर्गत मनोरंजनार्थ जुआँ खेलने का संदर्भ राजनीतिक संस्था सभा के औचित्य को दूसरी बार प्रतिपादित करता है।

यथा-

सभामेति कितवः पृच्छमानों जेष्यामीति तन्वा शुश्रुजानः।
आक्षासों अस्य वितिरंति कामं प्रतिदीन्वे दधत आ कृतानि।

ऋग्वेद के दूसरे मंत्र में शासन का सूत्राधार राजा समिति के विचारों और उसके अस्तित्व को स्वीकारता हुआ जनतांत्रित व्यवस्था के अनुपालक के रूप में प्रस्तुत है।

यथा-

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम
समानं मन्त्रमि मन्त्रये वंः समानेन वो हविषा जुडोमि॥
समानि व आकूतिः समाना हृदयानि व।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।

ऋग्वेद में समिति के कार्यों में राजनीतिक व्यवस्था के अतिरिक्त सामाजिक कार्यों के निर्वहन के उत्तरदायित्व का बोध कराया गया है।

यथा-

अभिभूरहमागमं विश्वकर्मेण धाम्ना।
आ वश्रितत्तमा वो व्रतमा वोहं समितिं ददे॥

ऋग्वेद के समान ही अथर्ववेद में भी राजनीतिक

* एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

संगठनात्मकता के रूप में सभा और समिति नाम की दो संस्थाओं का उल्लेख हुआ है यथा-

सभा च मा समितिश्चावता प्रजापते दुहितरौ संविदाने।

उत्तरवैदि काल में राज्य के राजनीतिक संगठन के आधार के रूप में ऐतरेय ब्राह्मण से ज्ञात होता है कि राज्य, साम्राज्य स्थापित थे, जिसका प्रधान राजा होता थ और ये राज्य स्थायित्व प्राप्त कर चुके थे। राजा के दैवत्य की बात तो ऋग्वेद में ही आ चुकी थी। राजा पुरु अपने को देवत्व की अवधारणा में स्थापित कर वरुण और इन्द्र की तुलना अपने से करते है, यथा-

अहं राजा वरुणो यह्यं तान्यसुर्याणि प्रथमा धारयंत।
क्रतुं सचन्ते वरुणस्य देवा राजामि कृष्टेरुपमस्य वव्रेः॥

उत्तर वैदिक काल में भी सभा और समिति की उपस्थिति का विवरण उपलब्ध होता है। सूत्रकाल में राजा पर धर्म के नियंत्रण की स्थिति प्रगट की गयी है। यहाँ सभा एवं समिति का उल्लेख नहीं मिलता। राजा कानून का निर्माता न होकर उसका पालक था।

महाकाव्य कालीन राजनीतिक संस्कृति में राजतन्त्रात्मक शासन और वह भी राजा को देवतुल्य स्थान प्राप्त था। शान्ति पर्व में यह स्पष्ट निर्देश है कि राजा को धर्मानुयायी होना चाहिए, जिससे वह प्रजा के हित में कार्य कर चुके। अत्याचारी और उत्पीड़क राजा की प्रजा द्वारा हत्या कर देने तक की राय दी गयी है। राजपुरोहित का विशेष महत्व प्रगट किया गया है। पुरोहित राजा के योग क्षेम के प्रति पूर्ण सचेत रहता था और यह उसका महानतम उत्तरदायित्व थी। जैसा कि राजा का राष्ट्र के कल्याण के प्रति उत्तरदायित्व बनता था। पुरोहित की नियुक्ति में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता था कि वह विद्वान, नीतिनिपुण तथा धर्मात्मा हो। वस्तुतः राजा के निर्णय के प्रमुख स्तम्भों में पुरोहित के अतिरिक्त मंत्री परिषद् की भूमिका महत्वपूर्ण थी।

महाकाव्य काल में गणतंत्र की उपस्थिति संघ की संगठनात्मक क्षमता की पोषक प्रवृत्ति का परिचायक है। महाभारत के शान्तिपर्व में प्रतिनिधियों की बहुलता राज्य की नैतिक गोपनीयता के भंग होने का कारण बतायी गयी है।

बौद्धकाल के पूर्व षोड्स महाजनपद नाम की राजनीतिक संस्था का अस्तित्व सर्वमान्य हो चुका था, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि शासकीय ज्ञान के तत्व लुप्त प्राय थे, क्योंकि कहीं राजतंत्र तो कहीं जनतंत्र तो कहीं दोनों की व्यवस्थाओं का न्यूनतम प्रयोग हो रहा था। बौद्धकाल में गणराज्यों का भी अस्तित्व ज्ञात है। गणराज्यों में व्यवस्थापिका सभा का महत्व अत्यधिक था। सदस्यों की एक निश्चित संख्या के अभाव में अधिवेशन को मान्यता नहीं मिल पाती थी। इस व्यवस्थापिका की मुख्य संस्था का नाम संघगार था औश्र यही राज्य की सबसे बड़ी संस्था की। नियुक्ति का अधिकार इसी संस्था को था। संस्था की एक सलाहकार परिषद् भी थी जिसे मंत्री परिषद् नाम दिया गया था।

बौद्धकालीन गणतंत्रों के अतिरिक्त राज्यतंत्रों का दृष्टिकोण सम्राज्यवादी था। विस्तारवादी नीति के कारण ही अक्रमकता का चुनाव गणतंत्रों उके अस्तित्व पर कुठारघात कर गया।

वैदिक साहित्य से लेकर बौद्ध युग का जो राजनीतिक स्वरूप उभकर सामने आया है, उसका आधार वैदिक मंत्र और कालों के निर्धारण कर तिथियाँ ऐतिहासिकता के निकट ही नहीं, आस्था के आधार और मान्यता के स्थायित्व के कारण ऐतिहासिक मानी जानी चाहिए। जिस राजनीतिक संरचना के आधार पर विश्व की आधुनिक शासकीय प्रणालियाँ कार्यरत और समयानुसार प्रबधन और समयानुसार प्रबन्धन और परिमार्जन की अपेक्षा रखती है, वह हमारे प्राचीन भारतीय शास्त्रों में वर्णित शासकीय आचार्यसंहिता की मुखापेक्षी है अर्थात अतीत के आइने में वर्तमान का प्रतिबिम्ब ठीक उसी तरह है जैसे इतिहास अपने को दोहराता है। कुछ पाश्चात्य इतिहासकार भारतीय संस्कृति के आधार ग्रंथों को लाक्षणिक मानकर उनकी ऐतिहासिकता को नकारते हैं जो उनकी दुर्भावना और भारतीय आस्थामूलक आचरण के प्रति अनभिज्ञता का होना है।

कुछ हद तक यह स्वीकार किया जा सकता है कि न्यूनतम या कुछ घटा-बढाकर अति रंजनात्मकता, लाक्षणिकता या अन्योक्ति का प्रभाव ग्रंथों में हो सकता है परन्तु इन्हें पूर्ण रूप से अनैतिहासिक मानना इतिहास की संरचनात्मक संस्कृति को कलंकित करना होगा।

भारत का वैदिक वाग्मय विश्व के प्राचीनतम सांस्कृतिक आचार विचारों का भण्डार है और इसमें संरक्षित धार्मिक चेतनामूलक आस्थाएँ एक अनुशासन व संस्कार की विधान है जो करोड़ों भारतीयों की सोच अनकर उन्हें जीवनपथ पर आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन का कार्य करा रही है।

विश्व का कोई भी विषय इतिहास की परिधी से बाहर नहीं हो सकता क्योंकि इतिहास एक ऐसी विधा है जो दृश्यमान वस्तु से लेकर जगत की सम्पूर्ण क्रियाओं का लेखा जोखा रखते हुए उसे चिरस्थायी बनाने का आधार प्रदान करती है। भारतीय सांस्कृतिक उपागम के लगभग अधिकांश साहित्य प्रकृति की सम्पूर्ण निधियों जैसे- जल, थल, आकाश, पाताल, चेतन, अचेतन, अनुवांशिक वर्णन में द्रष्टा ऋषियों के सृजनात्मक जीवन दर्शन की उद्घोषक ऋचायें मूल्यों के स्थापन को जो आधार प्रदान करती हैं, वहीं से इतिहास का निर्माण होता है।

Pottery Industry in Chunar : Glory of India

- Dr. Pradeep Kamal

Introduction :

Chunar is a small town of Mirzapur district of Uttar Pradesh. In spite of a small town, Chunar, has great influence in history. As per Puranas, Hindu Book of Preachings, the oldest name of Chunar was Charanadri as Lord Vishnu had taken his first step in the Vaman incarnation in the dynestry of Great king Bali in the Age of Satyug.

Chunar is famous for its historic fort and for the pottery industry. It is one of the major pottery centre in India and has a glorious history in this field. It is very well known for its decorative black pottery specially clay toys etc. Blue pottery and stone sculpture have also been the specialty of Chunar. Glazed pottery, with white, background and blue and green pattern was also development in this area. Now the work of plaster of Paris is very popular in Chunar. As a matter of fact, pottery work is in the culture of Chunar.

The Origin of Chunar pottery is not known. It is said that the pottery work to make utensil from clay was in existence, during Great Ashoka period. But it got recognition during Moghal Period. Local potters claim that it is hundreds of year old. Ceramic Expert Mr. Dobbs states, "The art of glazing were was introduced by one Bacha kahar who had learnt it at Bombay. It is probably that the same Bacha kahar is responsible for the feeble and debased European, ornamentation new charactering of this pottery.'

After some time Mr. Mohd. Sharif made some experiments prevailing on the development of new colours, glazes and bodies. He was very much encouraged by the district authorities and the Head of the Department of Ceramic Engineering of Banaras Hindu University and as a result he successfully introduced some other mixed ceramic colours cobalt blue, copper, cream and golden yellow.

Similarly, two other persons, named Badri and Narayan who had the privilege of displaying their art abroad, also started same work in this direction, since then glazed pottery craft of Chunar has taken new turn in design and quality. It should also be mentioned here that it is also said "In fact, glazed work was introduced in Chunar for the first time some 500 years ago by Baccha, Khatri by Caste."

With the change of time the demand for pottery was also changed and people were more interested in superior quality of pottery, "Necessity of white clay pottery was felt "Accordingly under the aegis of the Department of Industries, a tuition class was started at Chunar in 1948 for training the local potters in the manufacturing of white clay pottery."

*Associate Professor & Head, Department of Commerce, DAV PG College, Varanasi

In 1954 it was converted into Government pottery Development Centre to act as a common facility centre and also to impart training the local potters in the manufacturing of white clay pottery. Objective of the centre was to supply raw material, glaze, coal and make arrangement for firing of goods at its own kilm on subsidised rates. In 1959, the centre shifted to a new and more suitable site and was equipped with better machines and equipments.

Primarily the centre performed well, and Number of potters took the benefit of the services of this centre but since last several years the role of this centre has been negiligible.

Factor of Localization :

Today, it can be said that pottery industry has been localised at Chunar. The only factor influencing the localization of pottery industry in Chunar is availability of skilled as well as semi/unskilled labour. Otherwise raw material required for white clay pottery are bought from far off places in Bihar. W. Bengal, M.P. and Rajasthan, Coal from outside the state. Electric power is also not in a good condition.

Growth of pottery Industry in Chunar

Chunar is known for decorative red clay pottery. This pottery containing delicate design made with silver paint. It is said that in 1953 the ceramic work was started. As per the local potters it was in very glorious state up to 1974 but after that it was on diminishing pattern. It was famous for manufacturing ceramic flower pots, tea sets, pickle jars, many more article. After independence it had emerged a big centre to fulfill the demand for ceremic flower pots, tea sets, utensils and many other articles of daily use and the items becomes a necessary items of All India railway stall and trade fairs. In the eightees and early nintees the pottery Industry and the ceramic work in Chunar was at its peak. More than 200 families were engaged in the work having manufacturing unit but gradually due to various problems the industry faced the down fall and artisans preferred to convert their job from ceramic work to plaster of paris.

The main reason behind the change of occupation has been the increasing price of coal used as fuel for operating these units. As due to increase in the cost of production, the prices of product were also increased but the buyers were not ready to pay increased amount, hence the demand decreased in the pottery market and the artisans started facing hardship and problems in feeding their family. They started searching the another option. Most of the potters opted for manufacturing the articles of plaster of paris. Some artisan who could not leave the traditional work opted to shift to Khurja. Some preferred to sale the pottery products or Khurja made. A local artisan told that at present there is only one ceramic industry in Chunar.

Therefore, to get the old glorious position the pottery industry in Chunar needs much attention. For this purpose a high level committee should be formed under the

chairmanship of G.M. District Industry Center. In which pottery experts, renowned personalities of the District and potters representatives should be the members. To revive the old status of pottery industry in Chunar following suggestions may be given :

1. Government pottery Centre Chunar should start its function as it has been doing earlier.
2. Modern Machinary should be installed at Government pottery centre at Chunar.
3. There is need of motivation to potters to revive their old ceramic work and they should be given subsidy in capital.
4. Modern oil furnish/Diesel kiln should be installed at Govt. Pottery Centre for the use of potters at subsidized rate.
5. Raw material should be provided through Government pottery centre and later on a market should be developed to assure the availability of raw material in local market at fair price.
6. Permanent training centre should be estabished in Chunar.
7. Loan procedure should be simplified and all the formalities should be done at Govt. Pottery Centre/ District Industry Centre.
8. Trade centre/Import-Export centre should be established.
9. Advertisement and publicity of pottery product at National and International level, should be done.
10. Provision of financial assistance to participate in seminar/Exhibition at National/International level.
11. Provision of Technical services to potters by District Industry centre.
12. Subsidy should be provided to purchase new machines.
13. Refresher course should be introduced for old potters.
14. Coal/Gas/Diesel should be provided on subsidised rate.
15. Electricity/Water problem should be solved.
16. New Industrial Estate should be developed in Chunar.

If the above suggestion are accepted and Government pay proper attention towards pottery industry, No doubt it will again be glory & prestige of India.

---00----

टैगोर के अनमोल वचन

- विश्वास वह पक्षी है, जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है।
- मनुष्य का जीवन एक महानदी की भाँति है, जो अपने बहाव द्वारा नवीन दिशाओं में राह बना लेती है।
- प्रत्येक बालक यह संदेश लेकर आता है, कि ईश्वर अभी मनुष्यों से निराश नहीं हुआ है।

भारत-भूटान के मध्य आर्थिक सम्बन्ध

—डा. वी. के. एल. श्रीवास्तव

भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह १७ मई, २००८ को विश्व के सबसे नये लोकतांत्रिक देश भूटान की नवनिर्वाचित संसद को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि ''भारत एवं भूटान पुनत्सांगहू द्वितीय तथा मांग्देछू की दो विशाल जल विद्युत परियोजनाओं का संयुक्त रूप से निर्माण करेंगे। इसके अतिरिक्त चार अन्य परियोजनाओं का संयुक्त रूप से अध्ययन भी करेंगे। इन नयी परियोजनाओं से बनने वाली बिजली में दो पाँच हजार मेगावाट को भूटान सन् २०२० तक भारत को निर्यात करेगा। प्रधानमंत्री ने यहाँ १७ मई, २००८ को १०२० मेगावाट क्षमता के जल विद्युत स्टेशन का उद्घाटन किया तथा १०९५ मेगावाट क्षमता की पुनत्सांग्छू परियोजना की आधार शिला रखी। और कहा कि चरखा, कुरिछू एवं ताला परियोजनों से उत्पादित होने वाली बिजली से बिहार, पश्चिम बंगाल तथा दिल्ली के लोग लाभान्वित होंगे तथा भूटान की आय बढ़ेगी और इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। इस प्रकार प्रधानमंत्री के अनुसार हमारा द्विपक्षीय आर्थिक सम्बन्ध अगले पाँच वर्षों में बढ़कर १०० अरब रुपये तक पहुँच जायेगा।''

विद्युत परियोजनाओं को प्रारम्भ करने के अतिरिक्त डा. मनमोहन सिंह ने यह भी घोषणा किया कि भूटान से रेल सम्पर्क स्थापित करने के लिए भारत जल्द ही पटरियाँ बिछाने का कार्य शुरू कर देगा। इस प्रकार पश्चिम बंगाल के हाशिमारा से भूटान के फुत्सोलिंग तक रेलमार्ग का निर्माण किया जायेगा। इस रेल मार्ग को स्वर्ण जयन्ती रेल मार्ग का नाम दिया जायेगा। यह रेल मार्ग पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की भूटान यात्रा के ५० वर्ष पूरा होने के मौके पर बनाया जायेगा। भूटान एक ऐसा छोटा और पहाड़ीा देश है जहाँ अभी तक कोई रेलमार्ग नहीं है। परन्तु प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के प्रयास से भूटान में रेलमार्ग का शुभारम्भ निश्चित तौर पर हो जायेगा।

प्रधानमंत्री ने अपनी इस यात्रा के दौरान कुछ अन्य समझौते भी किये है जैसे नेहरु-वांग्चुक छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत भारत के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों में भूटानी विद्यर्थियों को प्रवेश लेने के लिए प्रोत्साहित किया जायेगा। इसके अतिरिक्त ग्लोबल वार्मिंग के खतरे से निबटने और हिमालय के ग्लेशियों को पिघलने से बचाने के लिए संयुक्त रूप से कार्य किया जायेगा। इस प्रकार भारत के प्रधानमंत्री ने भूटान की यात्रा करके तथा अनेक परियोजनाओं के सम्बन्ध में समझौता करके भूटान की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का प्रयास किया है।

भूटान पहाड़ों से घिरा हुआ एक अल्पविकसित देश है। यहाँ की जनसंख्या विशेष रूप से बौद्ध एवं हिन्दू है। इस देश में लम्बे समय से दो राजतंत्रीय प्रणाली कार्य कर रही थी परन्तु मार्च, २००८ में भूटान में निर्वाचित जनप्रतिनिधि देश की सत्ता को चला रहे है। चुने गये अधिकतर जनप्रतिनिधि युवा हैं। इन्हीं युवा सांसदों को भूटान की संसद में डा. मनमोहन सिंह ने सम्बोधित किया और कहा कि ''भारत को भूटान से कुछ सीखने की जरूरत है।''५ प्रधानमंत्री का आशय यह था कि जिस तरह से भूटान ने आर्थिक विकास के लिए अपने पर्यावरण और संस्कृति से समझौता नहीं किया, वह मॉडल भारत भी अपना सकता है। अर्थात भारत आर्थिक विकास की दौड़ में जिस प्रकार से पर्यावरण एवं अपनीा संस्कृति का क्षरण कर रहा है वह देश के लिए निश्चित रूप से घातक सिद्ध होगा। अत: पर्यावरण एवं संस्कृति को बचा कर ही देश के निवासियों के 'कुल राष्ट्रीय सुख' में वृद्धि की जा सकती है न कि 'कुल राष्ट्रीय उत्पाद' से।

भूटान की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि भूटान की अर्थव्यवस्था अत्यन्त तेजी के साथ विकास कर रही है। इसके निवासियों का जीवन स्तर इसके सीमावर्ती देशों कीअपेक्षा तीव्र गति से बढ़ रही है। इस

प्रकार दक्षिण एशिया के देशों में भूटान के निवासियों की आर्थिक स्थिति सबसे अच्छी है। यहाँ की अर्थव्यवस्था कृषि, वन, पर्यटन एवं विद्युत उत्पाद बिक्री पर आधारित है।

भूटान की अर्थव्यवस्था के महत्त्वपूर्ण पहलुओं को एक

* एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

झलक में निम्न विवरण के द्वारा देखा जा सकता है–

सन् २००५ में भूटान की जनसंख्या लगभग ७ लाख थी। जनसंख्या कम होने के कारण जनसंख्या का घनत्व भी कम था। सन् २००५ में भूटान में ४५ व्यक्ति प्रति किलोमीटर जनसंख्या का घनत्व था। भूटान एक अल्प विकसित देश है अत: यहाँ गरीबों की भी जनसंख्या कम नहीं है। सन् २००३ में भूटान में लगभग ३२ प्रतिशत जनसंख्या गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। अर्थात कुल जनसंख्या का लगभग २१,५०० व्यक्ति अपने जीवन की न्यूनतम आवश्यकता को भी पूरा नहीं कर पा रहे हैं।

भूटान में सर्वाधिक श्रमिकों की संख्या कार्य में लगी हुई है। सन् २००४ के आकड़े के अनुसार कार्य क्षेत्र में ८ प्रतिशत श्रमिक उद्योगों में ६ प्रतिशत एवं सेवाक्षेत्र में ३ प्रतिशत श्रमिक लगे हुए थे। इसका तात्पर्य यह है कि भूटान में सर्वाधिक जनसंख्या कृषि पर आधारित है। उद्योग-धन्धों का कम विकास होने के कारण इस क्षेत्र में केवल ६ प्रतिशत श्रमिक ही कार्य में लगे थे। सेवा क्षेत्र में श्रमिकों को रोजगार से यह ज्ञात होता है कि भूटान में सेवा क्षेत्र का विकास हो रहा है। सन् २००४ में २.५ प्रतिशत श्रमिक बेरोजगार थे।

विद्युत जो आधारभूत संरचना का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके विकास में भूटान को आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। सन् २००५ में भूटान में २ विलियन किलोवाट विद्युत का उत्पादन किया गया जिससे ३८० मिलियन किलोवाट विद्युत का उपभोग किया और १.५ विलियन किलोवाट विद्युत का निर्यात भी किया गया तथा २० मिलियन किलोवाट विद्युत का आयात भी किया गया। इस प्रकार भूटान के आय का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत विद्युत निर्यात है। डा. मनमोहन सिंह द्वारा भूटान में दो नई परियोजनाओं की आधारशिला रखने से भविष्य में भूटान

में विद्युत का उत्पादन बढ़ेगा जिससे उनके राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी और भूटान जो कभी-कभी विद्युत का आयात भी कर लेता है उससे उसे मुक्ति मिलेगी।

भूटान का विदेशी व्यापार भारत के साथ विशेष रूप से होता है सन् २००६ में भूटान ने भारत में ३५० विलियन डालर अर्थात लगभग ५४.५ प्रतिशत का निर्यात किया था। भूटान द्वारा भारत को निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं में विद्युत, सीमेन्ट, हस्तनिर्मित वस्तुएँ, फल, मूल्यवान पत्थर, मशाले, इलायची, खड़िया मिट्टी एवं ईमारती लकड़ी इत्यादि है। इसी प्रकार भूटान से विभिन्न वस्तुओं का आयात भी किया है। जैसे तेल एवं चिकनी वस्तुएँ (लुब्रिकेण्टस) अनाज, मशीने, गाड़ियाँ, चावल एवं कपड़े इत्यादि। भूटान का भारत से आयात व्यापार सन् २००६ से ३२० मिलयन डालर का था। इस प्रकार भूटान ने भारत से लगभग ७६ प्रतिशत का आयात व्यापार किया था।

किसी देश के राष्ट्रीय आय के द्वारा उस देश एवं उसके निवासियों की आर्थिक स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। सन् १९८० में भूटान की कुल घरेलू उत्पादन १३१ मिलियन डालर था जिसमें क्रमश: वृद्धि हुई और सन् २००५ में यह बढ़कर ८२८ मिलियन डालर हो गया।

इस प्रकार पिछले २५ वर्षों में कुल घरेलू उत्पाद में लगभग ८४ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भूटान के कुल घरेलू उत्पाद के आंकड़े अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के दिये गये है। कुल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के कारण सन् २००५ से ८.८ प्रतिशत के विकास दर प्राप्त किया गया था। तीव्रगति से वर्तमान कुल घरेलू उत्पाद के सन् २००८ में आय प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय १४०० डालर थी। इस प्रकार भूटान की अर्थव्यवस्था एक विकासशील और मजबूत अर्थव्यवस्था है।

भूटान जैसे देश में आर्थिक विकास की प्रक्रिया पहले से चल रही है अब विद्युत, रेल, शिक्षा जैसे समझौतो से भूटान की अर्थव्यवस्था निश्चित रूप से सुदृढ़ होगी। साथ ही भारत जो भूटान का एक प्रमुख व्यापारिक सहयोगी है उसे भी लाभ होगा। वर्तमान समय में भी भूटान से भारत विद्युत का आयात करता है और भविष्य में भूटान में विद्युत परियोजनाओं के प्रारम्भ हो जाने से भारत को और अधिक विद्युत भूटान से प्राप्त हो सकेगा और देश को विद्युत संकट से उबारने में मदद मिलेगा। इन बातों को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि प्रधानमंत्री जी ने भूटान के साथ व्यापारिक समझौते करके भावी लक्ष्य प्राप्त किया है।

Importance of Tourism in India

-Dr. A. K. Mishra

An Introduction :

The Indian slogan 'Athithi devo bhava' means that guests are like God. Indians have been highly hospitable and this trend is still present in modern India. A guest is respected . Integrated arrangments are made for a guest who come home for a holiday. The family plans betterl for the comfort stay of a guest. Going to a broader picture, the tourist visiting India find our country very tremendous and Majestic. They have a quest to watch the villagers walk on the rope, eat the butter with rotis and partake in the ritual dance after. sunset.

India Culture :

Foreigners really love India as it is a storehouse for art, culture, dance and drama. The rich and vibrant culture is present in clothing which attracts many1 shoppers. Responsible tourism is conducted by way of giving the tourism the right concept in tours. Their accommodation in government lodges and private hotels is always a luxury. The importance to tourism is essential as they carry the picture of our culture and hospitality. Our courteous attitude reflects our inner self.

Contribution to Economy :

On the economic view, foreign currency in India can be gathered via tourism. Several tourist spots do well all throughout the year and special seasons do exceptionally well as the foreign throng the place for sight seeing trips. A trip for any visitor has to be trouble free. With telecommunication network so strong it has become easy for a foreign visitor to have a pleasant stay. Taxi cabs, translation books and a educated guide make the trip interesting. The charming conditions in the areas are improving and the well maintained hotels and tourist sports are an all around attraction.

Steps ahead by Government :

The ministry of tourism is looking for new ways to encourage tourism in India. It is very much essential for a visitor to enjoy the stay and this is increased by facilities like road transport, guide and good hotels. Many hotels have multi cuisine and amenities to accommodate the choices for foreigners who generally kind the food very spicy. Tour operators are very systematic with their plans.

* Co-ordinator, Travel & Toursim Management, DAV PG College, Varanasi

स्वास्थ्य एवं चिकित्सा

-डॉ. पी. डी. सिंह

स्वास्थ्य एक सम्पूर्ण इकाई है। स्वास्थ्य एक समग्र अवधारणा है। निरोग, रोगरहित होना तथा उससे भी आगे शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक रूप से अपनी पूर्ण क्षमताओं को विकसित करना स्वास्थ्य को उपलब्ध करता है।

मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। संक्षेप में वह ईश्वर का प्रतिबिम्ब है और मानव रूपी सबसे जटिल मशीन में ईश्वर ने अपने अंश को प्रदान कर मानव को उन सभी सम्भावनाओं से भर दिया है जो उसमें स्वयं हैं। मानव शरीर अन्तमय, प्राणमय, मनोमय विज्ञान और आनन्दमय कोशों से निर्मित है। जिसमें हर कोशों की अपनी विशेषता और संरचना है। इन सभी कोशों की पूर्ण शुद्धि सम्पूर्ण स्वास्थ्य की उपलब्धि के लिए आवश्यक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक एवं सामाजिक रूप से स्वस्थ रहने को ही समग्र स्वास्थ के अन्तर्गत माना गया है। देखने में शारिरीक स्वास्थ्य सर्वोत्तम दृष्टिगोचर होता है। पर इसका मानसिक एवम् आध्यात्मिक पहलू इससे भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारतीय चेतना मनुष्य को स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण शरीर मानती है तथा यह शरीर पंचकोणों से निर्मित है। ऐसा हमारे ऋषियों ने उद्घोषित किया है। जैसे भाप से जल तथा जल से झील में परिवर्तित होता है पर तीनों- एक ही हैं या यों कहिए कि तीनों में उसका मान्यता है। वैसे ही ऋषि प्रत्येक वस्तु में तीनों रूपों में विद्यमान है तथा कभी नष्ट नहीं होता बस रूप परिवर्तक होता है। यह सत्य है कि हम सभी का एक उद्गम् एक स्रोत से है जिसे पर ब्रह्म या परमात्मा कहते हैं। स्वयं इस सत्य का प्रतिपादन भी होता है है कि वस्तुएँ जिस उद्गम से आती हैं, वही पुनः लौटकर जाती है तथा कभी नष्ट नहीं होती।

यदि हम अन्दर से प्रसन्न होते हैं तो इसकी चमक हमारे चेहरे पर आ जाती है। यदि हमारे कोश स्वस्थ्य है, यदि हमारा मानसिक एवं आध्यात्मिक शरीर (सूक्ष्म तथा कायिक) स्वस्थ्य हैं तो हम शारीरिक रूप से स्वतः स्वस्थ रहेंगे। अतः समग्र स्वास्थ्य के लिए हमें अपने शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना होगा। आगे के भाग दौड़ भरे समय में हमें रूककर सोचने की फुरसत नहीं है। लोग बसों तथा ट्रेनों के लिए कई घण्टे इन्तजार करते हैं, पर सड़क या चौराहे पर जाम की स्थिति में हमारा धैर्य लुप्त हो जाता है, हमारे लिए जल्दी से जल्दी लक्ष्य तक पहुँचने की इच्छा इतनी तीव्र होती है कि ट्रेफिक सम्बन्धी सभी नियम हमें दिखायी नहीं देते। ठीक यही मानसिकता हमें तथा कथित व्यस्त इंसान की है जो अपने स्वास्थ्य के लिए मात्र जिम, टॉनिक तथा राइड-डाइट को सब कुछ मान बैठे हैं। उन्हें रूककर सोचने की अच्छे और बुरे को अपने जरिये से देखने के लिए आत्ममंथन की आवश्यकता नहीं महसूस होती। और इसका परिणाम तनाव, चिंता, हताशा एवं असमय बाधिक जैसी परिणति के रूप में होता है। जिस व्यक्ति के पास समय रहते हुए कुछ करने का अवसर था वह निस्प्रयोज्य होकर रह जाता है। सिर्फ पछतावे के सिवाय ऐसे लोगों को कुछ हासिल नहीं होता।

शरीर के लिए जैसे व्यायाम एवं सुचारू आहार, विहार आवश्यक है वैसे ही मानसिक स्वास्थ के लिए स्वाध्याय एवं प्रातः एवं सायं आत्ममंथन तथा आध्यात्मिक स्वास्थ के लिए प्रार्थना एवं प्राणायाम। जैसे शरीर के विभिन्न स्थूल अंगों के लिए अलग-अलग है वैसे ही सूक्ष्म तथा कारण शरीर के लिए अलग-अलग व्यवस्थाएँ हैं। सभी मिलकर ही हमें बलिष्ठ मनस्वी तथा तेजोमय बनाते हैं और हम सम्पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाते हैं।

* हेल्थ सेन्टर, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

यह तो बात हुई स्वतः व्यक्ति की व्यक्ति से ही समाज बनता है। अतः इकाई रूप में किया हुआ यह कार्य जब पूरे समाज में होता है तो पूरा समाज स्वस्थ होता है। जब हम यह अनुभव करने लगते हैं कि हम एक ही पिता की संतान है तब हमें उनके हित में अपना हित नजर आने लगता है और प्रेम तथा साहचर्य की भावना पूरे जगत में फैल जाती है। जो आम लोगों के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

मूल अवधारणा को समझ लेने के पश्चात् हम चिकित्सा पर आते हैं। चिकित्सा का अभिप्राय है कि वह व्यक्ति तथा समाज के अन्दर की विषमता को ठीक करें तथा उसे स्वस्थ बनायें। चाहते या न चाहते हुए भी हम में से अधिकतर लोग अपनी तथा समाज की गड़बड़ियों के कारण अस्वस्थ हो जाते हैं। चिकित्सा में भी अपने अपने संभाग है तथा हर एक की अपनी खासियत है। चिकित्सा क्षेत्र आज इतने व्यापक रूप से अपने को उन्नत कर चुका है, कि उससे एक सुन्दर भविष्य की हमारी परिकल्पना सार्थक हो सकती है।

चिकित्सा से जुड़े हर क्षेत्र की अपनी विशेषताँ हैं। पर सबसे महत्वपूर्ण बात है कि कोई व्यक्ति अस्वस्थ न होने पाये तथा होने की दशा में वह हल्के-फुल्के प्रारंभिक उपचार से ही ठीक हो जाय। फिर भी यदि बिमारी अनियमित हो जाय तो दवा या आपरेशन के माध्यम से उसका उपचार आज के युग में संभव है।

चिकित्सा जगत से जुड़े व्यक्तियों का दायित्व है कि वह तात्कालिक एवं दीर्घ अवधि की स्वास्थ्य परियोजनाएँ विकसित करें। जिससे समाज का हर व्यक्ति अपना जुड़ाव महसूस करे। इससे स्वास्थ्य को सम्पूर्णता में लोगों के द्वारा समझा जा सकेगा और वह हमारी जन संस्कृति का अविभाज्य अंग बन जायेगा, और तभी समाज में सौहार्दयता, भाईचारा एवं सहिष्णुता जैसे गुण पैदा होंगे और स्वस्थ्य समाज की परिकल्पना मूर्त रूप ले सकेगी।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- बड़े-बड़े दिग्गज बह जायेंगे। छोटे-मोटे की बात ही क्या है। तुम लोग कमर कसकर कार्य में जुट जाओ, हुंकार मात्र से हम दुनिया को पलट देंगे। अभी तो केवल मात्र प्रारम्भ ही है। किसी के साथ विवाद न कर हिल-मिलकर अग्रसर हो - यह दुनिया भयानक है, किसी पर विश्वास नहीं है। डरने का कोई कारण नहीं है, माँ मेरे साथ हैं - इस बार ऐसे कार्य होंगे कि तुम चकित हो जाओगे। भय किस बात का? किसका भय? वज्र जैसा हृदय बनाकर कार्य में जुट जाओ।
- किसी बात से तुम उत्साहहीन न होओ, जब तक ईश्वर की कृपा हमारे ऊपर है, कौन इस पृथ्वी पर हमारी उपेक्षा कर सकता है? यदि तुम अपनी अन्तिम साँस भी ले रहे हो तो भी न डरना। सिंह की शूरता और पुष्प की कोमलता के साथ काम करते रहो।
- वीरता से आगे बढ़ो। एक दिन या एक साल में सिद्धि की आशा न रखो। उच्चतम आदर्श पर दृढ़ रहो। स्थिर रहो। स्वार्थपरता और ईर्ष्या से बचो। आज्ञा-पालन करो। सत्य, मनुष्य - जाति और अपने देश के पक्ष पर सदा के लिए अटल रहो, और तुम संसार को हिला दोगे। याद रखो - व्यक्ति और उसका जीवन ही शक्ति का स्रोत है, इसके सिवाय अन्य कुछ भी नहीं।
- शक्तिमान, उठो तथा सामर्थ्यशाली बनो। कर्म, निरन्तर कर्म, संघर्ष, निरन्तर संघर्ष।
- शत्रु को पराजित करने के लिए ढाल तथा तलवार की आवश्यकता होती है। इसलिए अंग्रेजी और संस्कृति का अध्ययन मन लगाकर करो।

ईश्वर जिस पर प्रसन्न होता है

-डॉ. प्रवेश भारद्वाज

ईश्वर की हमें आवश्यकता इसलिए है कि हम अपने में कमियाँ स्वीकार करते हैं। हमें कोई ऐसा साथी चाहिए जो हमसे प्रेम करें, हमें आश्रय दे और कभी हमसे बिछुड़े नहीं। ऐसा साथी ईश्वर ही हो सकता है। तात्पर्य है कि हमें प्रेम के लिए ईश्वर की आवश्यकता है परन्तु इस जरूरत की पूर्ति न स्वयं से हो सकती है, न इस संसार से। इसकी पूर्ति मात्र ईश्वर से ही हो सकती है।

ईश्वर या परमात्मा क्या हैं, इसको कोई नहीं जानता। वे सगुण-निर्गुण, साकार-निराकार सब कुछ होंगे। ईश्वर अनादि हैं, असीम-अनन्त है और सर्वज्ञ है। उनके विषय में जो कुछ कहा गया है, वह अपनी-अपनी समझ के अनुसार कहा गया है। अभी तक परमात्मा का जितना वर्णन हुआ है, वह सब मिलकर भी परमात्मा का पूर्ण वर्णन नहीं है। यदि पूरा वर्णन हो जाय तो असीम नहीं रहेंगे, सीमित हो जायेंगे। सभी ज्ञानी-विद्वान अपने-अपने मत के अनुसार परमात्मा का वर्णन करते हैं। विद्वान, महात्मा, कथावाचक एवं संत अपने-अपने तर्क-दर्शन के आधार पर ईश्वर की सत्ता प्रमाणित करते हैं परन्तु साधक वर्ग को केवल इतनी बात मान लेनी चाहिए कि परमात्मा हैं। वे कैसे हैं? किस स्वरूपवाले हैं? क्या करते हैं? आदि बातों और तर्कों पर साधक बुद्धि लगायेगा तो एक नयी आफत पैदा होगी। विवेक-विरोधी विश्वास का त्याग करें, भगवान् का विश्वास दृढ़ हो जायेगा। विश्वास, सम्बन्ध और कर्म-ये तीनों ही विवेक विरोधी नहीं होने चाहिए। संसार पर विश्वास करना विवेक विरोधी विश्वास है। संसार को अपना मानना विवेक-विरोधी सम्बन्ध है। शास्त्र निषिद्ध और सकाम भाव से कर्म करना विवेक विरोधी कर्म है। तो इन तीनों के त्याग से भगवान के होने का विश्वास हो जायेगा। हकीकत यह है कि भगवान से विश्वास ही माँगना चाहिए। विश्वास के अतिरिक्त कुछ भी माँगने की आवश्यकता नहीं है। विश्वास प्रेम का साधन और आधार दोनों है। भगवान् है और वही मेरे अपने हैं, इस विश्वास से प्रेम हो जाता है।

भगवान प्रारब्ध का भोग करवाते हैं। प्रारब्ध होता है तो भगवान रक्षा कर देते है और नहीं होता है तो रक्षा नहीं करते, क्योंकि प्रारब्ध भोग का विधान भगवान ही करते हैं। भगवान रक्षा करें या ना करें, दोनों में उनकी समान कृपा है। वस्तुतः भगवान् सब कुछ देते हैं, पर अपने को छिपाकर देते हैं। वे खुद देने वाले होकर भी अपने में देने वाले का बड़प्पन और लेने वाले में छोटापन नहीं आने देते हैं। ईश्वर जितना हम और आप समझते हैं, उससे भी अधिक दयालु हैं, इसीलिए वे जीवको तत्वज्ञान, मुक्ति देकर भी अपने को छिपाकर रखते हैं।

एक महत्वपूर्ण बात यह है कि भगवान् कण-कण में हैं और कण-कण भगवन् है। पहली बात भगवान् कण-कण में हैं, यह मान्यता है किन्तु दूसरी बात कि कण-कण भगवान् ही हैं, यह वास्तविकता है। **यह प्रश्न उठता है कि इस परमात्मा तथा देहात्मा में गौण कौन हैं।** जिसका देह के साथ सम्बन्ध है, उस अन्तर्यामी को 'अन्तरात्मा' कहते हैं। 'सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टों' (गीता, 15.15) अर्थात् यह मैं (ईश्वर) हूँ, जो सभी जीवों के हृदय में वास करता हूँ। आगे भी भगवान ने कहा, 'ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेर्जुन तिष्ठति' अर्थात् हे अर्जुन! ईश्वर सभी प्राणियों के हृदयदेश में विद्यमान रहता है। तो उस अन्तर्यामी को, जिसका देह के साथ सम्बन्ध है, अन्तरात्मा कहते हैं। परन्तु जिसका देह के साथ सम्बन्ध नहीं है, उसको परमात्मा कहते हैं।

कहते हैं कि जीव अनन्त है, फिर भी ऋषियों ने चौरासी लाख योनियों की गणना की है। यह ईश्वर का विधान नहीं अपितु लीला है। ईश्वर की लीला को हम समझ नहीं सकते, मान सकते हैं। अगर लीला हमारी समझ में आ जाय तो समझ बड़ी हो जायेगी और भगवान छोटे। जैसे लीला के मूल में परमात्मा है, वैसे 'मैं कुछ नहीं हूँ' के मूल में भी परमात्मा है। मेरा कुछ नहीं है, मुझे कुछ नहीं चाहिए और मुझे कुछ नहीं करना हैं। इन तीनों के मूल में परमात्मा ही है। अतः केवल भगवान् ही मेरे हैं, सिवाय भगवान के मेरा कोई नहीं है। कारण? अपनी वस्तु वह है, जो सदा साथ रहे, कभी बिछुड़े नहीं। जो वस्तु मिली है और बिछुड़ जाने वाली है, वह कभी अपनी तथा अपने लिए नहीं हो सकती है।

शरीर, वस्तु, योग्यता, सामर्थ्य और पद हमें मिले हैं तथा बिछुड़ने वाले हैं, इसलिए ये न तो अपने हैं और न अपने लिए हैं। चुँकि भगवान सदा साथ रहते हैं तथा कभी बिछुड़ते नहीं, इसलिए वे अपने भी हैं और अपने लिए भी हैं। ईश्वर द्वारा दत्त परिस्थिति, ईश्वर की इच्छा मानें। वह परिस्थिति यदि अपने कर्मों का फल है तो भी भगवान् की

* अध्यक्ष एवं एसो. प्रोफेसर, इतिहास विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

मरजी है। अगर संसार से मिली है तो भी भगवान की मरजी है। यदि भगवान् का विधान है तो भी भगवान की ही मरजी है।

मनुष्य देखने में कोई रूपवान, कोई कुरूप, कोई साधू, कोई असाधू दीख पड़ते हैं परन्तु उन सबके भीतर एक ही आत्मा देते हैं। हृदय स्थिर होने से ही ईश्वर का दर्शन होता है। हृदय रूपी सरोवर में जब तक कामना की लहर बढ़ती रहेगी, तब तक ईश्वर का दर्शन असम्भव है। लोहा जब एक बार पारस को छूकर सोना हो जाता है, तब चाहे उसे कूड़े में फेंक दें, वह जहाँ रहेगा, सोना ही रहेगा। इसी प्रकार जो ईश्वर को पा चुका है, वह बस्ती में रहे चाहे जंगल में, उसको फिर दाग नहीं लग सकता। अतएव इस संसार में ईश्वर ही केवल सत्य हैं और सभी असत्य हैं। ईश्वर जिस पर प्रसन्न होता है, उसे नदी-सी दानशीलता, सूर्य-सी उदारता और पृथ्वी-सी सहनशीलता प्रदान करता है। यदि हमारा हृदय स्वच्छ रहेगा तो उसमें गुणों का आगमन बड़ी आसानी से होगा।

हृदय की सरलता और निर्मलता ईश्वरीय ज्योति है, यह ज्योति ही ईश्वर प्राप्ति का मार्ग दिखलाती है। प्रभु से क्षमा की आशा इन साधनों की ओर खींचती है। प्रभु का भय पाप से निवृत्त करता है और प्रभु की महिमा का स्मरण ही इस सत्य मार्ग पर आगे बढ़ाता है। वस्तुतः भगवान् स्तुति नहीं, स्मरण चाहते हैं। उन्हें स्तुति और अभिमान से द्वेष है किन्तु दीनता से प्यार है। भगवान का नाम दीनबन्धु है, अभिमानी-बन्धु नहीं है।

दो कविताएँ

-डॉ. अरुण कुमार श्रीवास्तव

रिश्ता

रिश्ता,
कागज की नाव
बच्चों की :
तैरने के लिए
चाहिये
जिसे पानी।
कितना मुश्किल हो गया है
आजकल
पानी
और
पानीदार लोगों का मिलना

जिन्दगी

थोड़ी सी छत
और
उस पर ढेर सारा खुला आसमान
और
खूब-खूब सारी
तैरती चिड़िया
नीले आकाश में-
दाने की खोज में
या
यू हीं
आनन्द में मग्नविचरती
चिड़ा के साथ चिड़िया।
छत को
टिके रहने के लिए
थोड़ी सी जमीन।
जमीन
छत
और
खुला आसमान।
और थोड़े दाने
फिर कलरव-
बस और क्या?

* एसो. प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

आगम एवं पर्यावरण

– डॉ. मिश्री लाल

भारतीय जनधारा के प्रवाह को अविरल गति प्रदान करने में 'निगमागम' शास्त्र की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मुख्य रूप से भारतीय ज्ञान के दो मूल स्रोत है–''निगम और आगम।'' उपनिषद, पुराण, तंत्र, श्रीमद्भागवत, संत-साहित्य से लेकर रामचरित-मानस तक में निगम और आगम की मणियाँ पिरोयी हुई हैं।

आत्मा, मन और शरीर के संयोग से जीवित प्राणी बुद्धि से मुक्त हो, आत्मज्ञान और पराज्ञान प्राप्त करने की इच्छा कर कर्म में प्रवृत्त होता है। इस जीवन को सुव्यवस्थित रूप से बिताने के लिए व्यक्ति सम्पूर्ण जीवन और समाज धर्म के आधार में प्रवृत्त हो इस महत् प्रयोग के प्रयोगशाला के समान हो जाता है। उसी को बताने का ज्ञान –(१) सृष्टि-प्रलय, (२) देवार्चन, (३) साधन (४) पुरश्चरण (५) षट्कर्म (६) ध्यान, (७) योग, इन सात लक्षणों से युक्त विज्ञान-विशेष को ''आगम'' कहते हैं।

'आगम' शब्द 'आ' तथा 'गम' इन दो शब्दों का संयुक्त रूप है। गम का अर्थ है जाना तथा 'आ' उपसर्ग के चारों ओर से तथा सामीप्य आदि अनेक अर्थ हैं। वाचस्पति मिश्र ने योगभाष्य की तत्त्व वैशारदी व्याख्या में आगम शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की है–''आगच्छन्ति वुद्धिमारोहन्ति यस्मात् अभ्युदयनि: श्रेयसोपाया: स आगम:'' अर्थात् जिससे अभ्युदय (लौकिक कल्याण) तथा नि:श्रेयस (मोदन) के उपाय बुद्धि में आते हैं वह 'आगम' कहलाता है, अर्थात् अभ्युदय और नि:श्रेयस के उपायों का प्रतिपादक शास्त्र ही आगम है। आगम की यह व्युत्पत्ति का उसका 'निगम' से पार्थक्य दिखाने के लिए भी पर्याप्त है। इसी प्रकार आगम को व्याख्या 'सर्वतन्त्र सिद्धान्त पदार्थ लक्षण संग्रह' में भी की गयी है–

''आगतं शिववक्त्रेभ्यो गतं च गिरिजाश्रुतौ।
मतं च वासुदेवस्य तस्मादागममुच्यते।।

इससे स्पष्ट है कि जो परम्परा से आया है उसे आगम कहते हैं।

एक अन्य मतानुसार निश्चय से तत्त्व की ओर ले जाने वाला निगम और आप्तवचन से आविर्भूत अर्थ विशेष का संवेदन आगम है।

पिंगलामत में 'आङ्भावस्तु समन्ताच्चगम्यतेत्यागमो मत:' अर्थात् यह आगम इसलिए है कि आध्यात्मिक ज्ञान इससे प्रत्येक दिशा में जाता है। इसका आशय यह है कि वैदिक ग्रन्थों में निर्दिष्ट ज्ञान का क्रियात्मक रूप या चिन्तनात्मक आचार ही आगमों का मुख्य विषय है। आगम तन्त्र का पर्याय माना जाता है। 'तन्यते विस्तार्यते ज्ञानमनेन इति तन्त्रम्' अर्थात् वह शास्त्र जिसके द्वारा ज्ञान का विस्तार किया जाता है। 'कामिक अगाम' ग्रन्थ के अनुसार तन्त्र की निरुक्ति इस प्रकार है–

''तनोति विपुलानर्थान् , तन्त्रमन्त्र-समान्वितान।
त्राणं च कुरुते यस्मात्, तन्त्रामित्यभिधीयते।।''

इस प्रकार आगम शास्त्र क्रियात्मक रूप से विस्तार प्राप्त करके प्राणियों के कल्याण में संलग्न है।

साधन की दृष्टि से चतुर्युगों की अपनी-अपनी विशेषता है। सत्ययुग में श्रुति-वेद के द्वारा प्रतिपादित आचार की प्रधानता है, त्रेता में स्मृति की, द्वापर में पुराण की और कलियुग में आगम तथा तत्प्रतिपादित आचार की प्रधानता होती है। जैसा कि कुलार्णव तन्त्र में वर्णित है–

एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, डी.ए.वी.पी.जी., वाराणसी

''कृते श्रुत्युक्त आचार: त्रेतायां स्मृति-सम्भव:।

द्वापरे तु पुराणोक्त: कलावागमसम्भव:।।''

(अथर्ववेद - १२-१-१२)

मुख्य रूप से आगम के पाँच भेद निरुपित किये गये हैं– (१) शैवागम (२) शाक्तागम (३) वैष्णवागम (३) जैनागम (४) वौद्धागम।

इस प्रकार आगम शास्त्र उपासना की दृष्टि से उपासकों के रुचिवैचित्र्य के कारण दुर्गा, लक्ष्मी, कृष्ण, विष्णु, राम शिव, पशुपति, हिरण्यगर्भ, स्वयंभू, सूर्य, गणेश आदि नामों और उनके विभिन्न स्वरूपों और आराधना पद्धतियों का विवरण देते हुए मूल तत्त्व की ओर उपासक की दृष्टि आकृष्ट करता है। यह सारा प्रतिपादन की प्रक्रिया का भेद ही है।

मुख्य रूप से आगम शास्त्रों का उद्देश्य क्रियाशक्ति को उद्‌बुद्ध करके अनिष्ट निवारण द्वारा परमपद को जीव को प्राप्त करा देना ही है।

आगम शास्त्र एवं साहित्य में पर्यावरण का वास्तविक स्वरूप परिलक्षित होता है। पर्यावरण जीवन को स्थायित्व देने वाली प्रणाली है जिसमें जड़ और चेतन दोनों तरह के तत्त्व (जैसे हवा, पानी, मिट्‌टी, जीव समूह) मौजूद हैं। पौराणिक काल से ही हमारे देश के मनीषी शुद्ध पर्यावरण के लाभ तथा अशुद्ध पर्यावरण की हानियों से भली प्रकार अवगत थे। भारतीय धर्म ग्रन्थों में पर्यावरण के तत्त्वों को समुचित महत्त्व दिया गया है। सूर्य, वायु, जल, वनस्पति भूमि आदि तत्त्वों को देवतुल्य स्वीकार कर उनके महत्त्व को स्वीकार किया गया है। वेदों में सूर्य की आराधना में सूर्य को ''सूर्य देवो भव'' तथा ''सूर्य आत्मा जतस्थुश्च देवता'' तथा आत्मा के रूप में वर्णित किया गया है। वस्तुत: सूर्य सभी प्राणियों में जीवन का संचार करता है। इसी प्रकार वायु और जल को भी महत्व दिया गया है तथा धरती को माँ के रूप में कहा गया है–

''माता-भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या:।''

मत्स्य पुराण में वृक्ष को पुत्र से भी ऊँचा स्थान दिया गया है-

दशकूप समावापी, दश वापी समो ह्रद:।

दश-ह्रद-सम: पुत्रो, दश-पुत्र समो वृक्ष:।।

भारतीय आगम शास्त्र एवं साहित्य के अध्ययन से

उस काल के मनीषियों की पर्यावरण के प्रति सचेष्टता एवं समझ का ज्ञान होता है। प्राकृतिक तत्त्वों के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास पैदा करने के लिए उन्हें धार्मिक कर्मकाण्डों से जोड़ा गया। उस युग में तमाम देवी-देवताओं के साथ किसी न किसी पशु-पक्षी, फल-फूल, वृक्ष को जोड़ा गया, जिससे लोग अपने आराध्य देव के साथ उनसे जुड़े प्रकृति के इन तत्वों को भी श्रद्धा व विश्वास के साथ पूजे तथा हिंसक व्यवहार न करें। जैसे–

देवता	**पशु-पक्षी**	**फल/फूल/दल**
विष्णु	गरुड़	तुलसी/पीपल
शिव	बैल	बेलपत्र
गणेश	चूहा	जामुन
श्रीकृष्ण	गाय	कदम्ब
लक्ष्मी	उलूक	
सरस्वती	हंस	कमल
कालभैरव	कुत्ता	
दुर्गा	शेर	अड़हुल
सूर्य	अश्व	

जल का हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसीलिए पुराणागम ग्रन्थों में जलाशय, नदी, तालाब आदि के तट पर मल-मूत्र विसर्जन का निषेध किया गया है–

न क्षेत्रे न विले वापि न तीर्थे न चतुष्पथे।

नोद्यानेऽपां समीपे नोषरे नगराशये।।

(पद्‌मपुराण)

अर्थवेद वेद में कहा गया है कि–

ह्वा न आपस्तन्वे तरन्तु यो नः ते दुराप्रिये तं निदध्यः।

पवित्रेय पृथिवी एमोत मुनामि।।

(अथर्व वेद)

अग्निपुराण में उल्लिखित है कि जो व्यक्ति वापी, कूप एवं तालाब को दूषित करता है, उस दुरात्मा का कुल अकुशलता को प्राप्त करता है–

वापी कूपतडागानाम् छेदने रोधनं कृतम्।

कुलानाकुलतां यान्ति नराणां सदुरात्मनाम्।।

(अग्निपुराण)

पौराणिक मनीषियों की वायु को प्रदूषण रहित बनाने में वृक्षों के संरक्षण की प्रेरणा देने वाले कई प्रसंग पुराण साहित्य में देखने को मिलते हैं। जैसा कि यजुर्वेद में उल्लिखित है–

स्वधितै मे न हिंसी।। (यजुर्वेद)

अर्थात् वृक्ष को कुल्हाड़ी से मत काटो।

वाराह पुराण में उल्लिखित है कि भूदान और गोदान करने से मनुष्य को जो पुण्य प्राप्त होते हैं, वहीं पुण्य वृक्षारोपण से प्राप्त होते हैं–

भूमिदानेन ये लोका गोदानेन च कीर्तिताः।

ते लोकाः प्राप्यते मुक्तिः पादपानां पुरोहणे।।

(वाराह पुराण)

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय आगम शास्त्र एवं साहित्य में किस प्रकार जनमानस में एक वृक्ष को दस पुत्रों के समान बता कर लोगों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित किया तथा वृक्षों के संरक्षण एवं संवर्धन की शिक्षा दी। जल, सूर्य, अग्नि, गोब्रज, उद्यान व चौराहे पर मल-मूत्र विसर्जन को निषिद्ध घोषित किया, जिससे पृथिवी तथा वायुमण्डल प्रदूषण मुक्त रहे। पौराणिक साहित्य में वायु, जल, अग्नि, वृक्ष व पशु-पक्षियों की रक्षा करने के लाभ (पुण्य) तथा इनको प्रदूषित करने के लिए दण्ड स्वरूप पाप व नरक का भय दिखाकर जन सामान्य के चिन्तन एवं व्यवहार को इन प्राकृतिक तत्त्वों के अनुकूल बनाने के प्रयास किये गये।

इस प्रकार पर्यावरण संरक्षण भारतीय आगम शास्त्र एवं आरण्यक संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। भारतीय ऋषियों-मुनियों द्वारा प्राकृतिक शक्तियों को दैवीय मानने तथा उनको धार्मिक आस्था के साथ जोड़ने का मुख्य उद्देश्य था कि हम उनके प्रति अनुराग रखते हुए उनकी रक्षा करें। स्वच्छ हवा, शुद्ध जल, हरी-भरी धरती, प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द, संतुलित जीवन आदि का पर्यावरण संतुलन एवं सरक्षण से सीधा सम्बन्ध है और इन्हीं विषयों का वर्णन हमारे सम्पूर्ण आगम एवं निगम साहित्य में किया गया है।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- तीनों लोक तुम्हारे पैरों के नीचे हैं। जड़ की कोई शक्ति नहीं प्रबल शक्ति आत्मा की हैं। हे विद्वान! डरो मत; तुम्हारा नाश नहीं हैं, संसार-सागर से पार उतरने का उपाय हैं। जिस पथ के अवलम्बन से यती लोग संसार-सागर से पार उतरे हैं, वही श्रेष्ठ पक्ष मैं तुम्हें दिखाता हूँ।
- लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा, लक्ष्मी तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो, तुम्हारा देहान्त आज हो या एक युग में, तुम न्यायपथ से कभी भ्रष्ट न हो।

भारतीय राजनीति में जाति एवं अपराधीकरण

-डॉ. एस. बी. सिंह

वर्तमान भारतीय राजनीति में जाति एक कड़वी सच्चाई है। हाल के दिनों में उच्चतर न्यायपालिका ने दो ऐसे निर्णय सुनाए हैं, जिनसे राजनीतिक दलों की मनमानी पर रोक लगने की सम्भावना बढ़ी है। न्यायपालिका की यह सक्रियता राजनीतिक व्यवस्था के सुधार का संकेत तो है किन्तु इसके दुरुपयोग की भी एक बड़ी सम्भावना है। जो भी हो न्यायपालिका की सक्रियता के लिए केवल और केवल हमारे जनप्रतिनिधि जिम्मेवार हैं। छोटे-बड़े सभी दलों ने संवैधानिक मान्यताओं एवं मर्यादाओं का खुलेआम उल्लंघन किया है। सत्ता प्राप्ति के लिए सिद्धांतों की मर्यादा एवं साधनों की सुचिता की तिलांजलि देना नेतृत्व सफलता का आवश्यक गुण माना जाने लगा है।

भारतीय न्यायपालिका ने पहला निर्णय तो यह दिया कि राजनीति में अपराधीकरण स्वीकार नहीं है। इस निर्णय के अन्तर्गत किसी सांसद या विधायक को दो वर्ष या उससे अधिक की सजा मिलने पर उसकी सदस्यता तत्काल प्रभाव से निस्प्रभावी हो जायेगी। सर्वोच्च न्यायालय ने पटना उच्च न्यायालय के उस निर्णय को भी सही माना, जिसके अनुसार कानूनी हिरासत में आए अथवा जेल में बन्द लोग चुनाव लड़ने के लिए अर्ह नहीं होंगे। निश्चित रूप से ये फैसले दूरगामी परिणाम वाले सिद्ध होंगे।

यह निर्णय इसलिए भी सराहनीय है क्योंकि हमारे देश की राजनीति में बाहुबलियों की संख्या दिनो दिन बढ़ती जा रही है। साधारणतः ऐसे नेताओं के खिलाफ आम आदमी शिकायत से डरता है और यदि शिकायत हुई भी तो अदालतों में मामले लम्बा खींचने से डरते हैं। इस विलम्ब के दौरान अपराधी राजनेता चुनाव लड़ते एवं जीतते रहते हैं। सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय की राजनीतिक दलों पर प्रतिक्रिया अनुकूल नहीं लगती। उन्हें इससे प्रसन्नता तो बिल्कुल नहीं। भारतीय राजनीतिक दलों का यह रवैया निन्दनीय है।

भारतीय राजनीति में दूरगामी प्रभाव डालने वाला दूसरा निर्णय इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा सुनाया गया। इसके अन्तर्गत राजनीतिक दलों की जाति आधारित रैलियों पर रोक लगा दी गयी। न्यायालय का यह फैसला उत्तर प्रदेश के दो प्रमुख राजनीतिक दलों समाजवादी पार्टी एवं बहुजन समाज पार्टी के द्वारा जातीय रैलियों के आयोजन के खिलाफ दायर की गयी जनहित याचिका पर सुनाया गया है। यद्यपि अधिकांश दलों ने इस फैसले का स्वागत किया है, लेकिन कुछ राजनीतिक दलों की भाव भँगिमा यह बता रही है, उन्हें यह फैसला पसन्द नहीं आया है। उनका तर्क हैं कि भारतीय समाज में हर धर्म में जाति है। यह एक खुला सच है कि हर जाति में कुछ लोग अपने स्वार्थों के लिए जातीय अहंकार तथा दूसरी जातियों के प्रति तिरस्कार की न केवल भावना रखते हैं बल्कि जाति संगठन के माध्यम से उसे बढ़ावा भी देते हैं। वस्तुतः चुनावी राजनीति में जातिवाद सफलता का सर्वोच्च मंत्र रहा है। चुनावी जीत के लिए सभी राजनीतिक दल जातिवादी अंकगणित लगाते हैं। अतः भारतीय नागरिक के समक्ष जातिवाद एवं राष्ट्रीयता में से किसी एक के चयन की मजबूरी हैं, जहाँ राष्ट्रवाद पराजित होता है एवं जातिवाद जीतता है। ऐसा क्यों! इस पर एक अलग विमर्श की आवश्यकता है।

निष्कर्ष के तौर पर यहाँ इतना ही कहना उल्लेखनीय है कि जाति एवं सम्प्रदाय तथा राजनीति का अपराधीकरण देश के सभी हिस्सों में व्याप्त है। यदि भारतीय लोकतंत्र को आगे बढ़ाना है तो समाज में व्याप्त कुरीतियों जातीय पंथीय आधार पर गोलबन्दी की प्रक्रिया को रोकना होगा। ऐसा करना सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से स्वस्थकर नहीं माना जा सकता। सुप्रीम कोर्ट एवं इलाहाबाद हाईकोर्ट के निर्णय भारतीय राजनीतिक दलों को अपने तौर-तरीके ठीक करने का एक अवसर है। उन्हें इसका लाभ लेना चाहिए एवं लोकतंत्र की सुचिता की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

* एसो. प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

The Importance of Moral Education in India

-Dr. S. Gopal Jee

The development of morality is an important aspect of formation of good character. Today, there is deterioration of morality in society. The moral aspect has been neglected not only at the social level but at the national level also. In the educational programmes only mental development has been emphasised.

Aims of Moral Education :

In the modern age, the aim of education is all-round development of personality. In the present educational system, provision has been made for only intellectual education. For a successful life, such important human qualities as sympathy, co-operation, mercy, compassion, love, truth, sincerity, etc. have been ignored. The development of such human qualities along with intellectual development should be the aim of moral education.

Character Formation :

Character is very important in life. Nothing is lost when wealth is lost, something is lost when health is lost but everything is lost when character is lost. Thus character development is the important aspect of personality.

Character is related to morality. The definition of a man of character is very wide. A man of character feelings which are human and are directed towards the good and happiness of others. Such a personality can be developed by moral education.

For the formation of character of future citizens moral education should be given from their very childhood. The method of imparting moral education has to be different from that of intellectual education. It cannot be given only through lectures. Children by nature like to imitate.

So for moral education, it is necessary that the teachers are men of good character, in order that the students may imbibe their qualities.

Moral Education and Religions :

The idea of character formation is kept in the background of all religions. Religion is especially important in moral education from this point of view. All the religions teach the importance of adopting truth non-violence, compassion, pity and benevolence.

But to-day, religion has taken the form of groupism and communalism which is harmful for character development. In the present circumstances moral education can only be related to human religion.

So in the absence of suitable conditions, the teachers should adopt a religion which is based on the principles of humanity and this alone should be made the basis and medium of moral education.

Moral Education and Good Behaviour :

Good behaviour is a significant part and powerful medium of moral education. The

* Asstt. Professor, Department of Psychology, D.A.V. P.G. College, Varanasi

practical aspect of the teaching of good manners is very gradual. It begins with the first stage of the development of life. Being imitative by nature, children can learn good manners from their family.

The parents can make their children cultured by paying attention to their behaviours and by correcting them when required. Good manners may form a background of moral education and for this the teacher should be well-mannered in order that they may be ideals and worth-imitating for children.

Moral Education at the Various Levels of Education :

Attention is paid to the student's age intelligence, capacity and mental level while determining educational programmes. Similarly for moral education also, programmes should be designed to suit the students of different levels.

Primary Stage of Education :

At the primary stage, due attention should be paid to the interest of students. The educational programmes should be sufficiently interesting, poem, stories and songs, etc are able to hold the child's attention.

Considering the understanding level at the primary level, the curriculum should be brief and teaching methods should be easy. Education regarding obedience to parents, keeping of promise, love and sympathy amongst brothers may be given through questions from Mahabharat, Ramayan, the Holy Quran, The Bible and Guru Granth Sahib.

Moral education may easily be given by selecting stories from ancient Indian books like Vedas, Purans and Panchtantra, Shravan, Prahlad, Dhruv and Harish Chandra and Aesoph's Fables.

Secondary Stage of Education :

At the secondary stage, the mental level of students becomes quite nature that more concrete programmes formation may be started. In order to make the youth successful in future life, the programme at this stage should be of various kinds.

At the secondary stage students should be given opportunities of work for the welfare of man and society and efforts should be made to inculcate in them ethical virtues. For the formation of character, illustrations ad stories may be cited according to need. But care should be taken to safeguard the personal feelings of the students.

College and Higher Stage of Education :

At the college and higher stage, the students prepare themselves for future life. So at this stage, the programme of moral education should be wide. A man of character, rising above the considerations of nation, community, class, religion and group, full of human sentiments.

He considers the entire world as his home and others as members of his family. At this stage, the teacher occupies an important position for moral education and he may place the character of a really great man as a mirror from which the students may imbibe many good qualities.

Standing Out in an Interview

- Dr. Richa Rani Yadav

An interview is a conversation between two or more people (the interviewer and interviewee) where questions are asked by the interviewer to obtain information from the interviewee. Interviews can be divided into two rough types, interviews of assessment and interviews for information.

It is common that you all will nervous at the time of interview though you have probably spent a great deal of time preparing. However you should let your practice preparation become a disadvantage.

Once the interview begins, you must focus on interacting effectively with the interviewer, your conduct and responses should effortlessly convey to the interviewer the image you want to project.

It is important for you to know that the interviewer's decision whether or not you will be invited back for an additional interview which will probably be influenced by your attitude and personality as much as by your qualifications. So although preparation is important, your performance during an interview can make things even better. You should always maintain a smile during the time of interview.

Tips for a Job Interview :

❖ Be punctual. Arrive about 10-15 minutes earlier.

❖ Use a firm handshake with a secure, steady grip and then release.

❖ Dress accordingly but make sure your clothes don't steal the show. You need to convince the recruiter with your skills.

❖ Address the interviewer by name. Make sure you pronounce his/her name correctly.

❖ Keep your eye contact with the interviewer, but don't stare at him/her.

❖ Make sure you go to the washroom before the interview, not during the interview!

❖ Don't ask for refreshments. Make sure you had something to drink and eat before the interview begins.

❖ Show genuine interest in the company, the interviewer and the job.

❖ Be alert and interested all the time.

❖ Be confident.

❖ Do not make any negative comments about anything. Don't bad-mouth any former employer.

❖ Sit down once it is being offered to you.

❖ Put your briefcase or other interview paraphernalia on the floor and not on the desk.

❖ Take notes on a note pad and not on your laptop.

❖ Don't interrupt the interviewer.

❖ Make sure your cell phone is switched off.

❖ Be polite to everyone, also the receptionist.

❖ Pay attention to your body language. Stand and sit up straight, be moderate in using hand gestures.

❖ Don't lie because sooner or later you will be caught!

❖ Don't procrastinate in answering questions.

❖ Be enthusiastic but don't look desperate.

❖ Be prepared. Do your research regarding job, company and interviewer.

❖ Make sure you all well groomed.

❖ Don't smoke, chew gum, curse or eat garlic beforehand.

❖ Go to the interview alone let parents, children, spouses, friend's etc. wait outside the

* Assistant Professor, Department of Psychology, D.A.V.P.G.College,Varanasi

building if they accompany you.

❖ Avoid being touchy in an interview situation.

❖ Don't imitate your interviewer's dialect.

❖ Thank the interviewer for their time and ask what the next steps are, if they didn't already tell you.

❖ Send thank-you notes following the interview. Make yourself memorable.

Self-Assessment

To make it happen as expected in an interview each individual must make a sincere self assessment and find out one's areas of both strength and weakness. Knowledge of one's own deficiencies is useful in overcoming weakness and unconscious bad habits of posture or speech can be improved by effort. Shortcoming which cannot be overcome can be accepted and acknowledged so that they do not lead to depression and embarrassment when others notice them. Therefore, coming to terms with oneself and knowing how to deal with one's faults, and how to make best use of one's knowledge and skills, is another vital element in preparing for an interview. So following these practices will definitely eliminate the unnecessary nervousness and I sure you that you can move through your interview with ease and come off with flying colours.

सुभाषित वचनावली

-प्रस्तुति- डॉ. लल्लन प्रसाद जायसवाल

''जीवों के प्रति दया नहीं, सेवा की भावना रखो''

- रामकृष्ण परमहंस

'' एक सत्यवादी मनुष्य संसार भर के झूठ बोलने वालों से अच्छा है।'' **- जरथ्रुष्ट**

'' सज्जनों के प्रति हम अच्छा व्यवहार करें। दुर्जनों के प्रति भी हमें अच्छा व्यवहार करना चाहिए, जिससे वे सज्जन बन सकें।''

- लाओत्से

''सत्य कभी मनुष्य के स्वभाव से अलग नहीं होता। जो सत्य समझा जाता है, वह यदि मनुष्य से अलग हो जाय तो वह सत्य नहीं है।''

- कन्फ्यूशियस

''मृत्यु की अपेक्षा दुष्टता से बचना कठिन है, अतः मनुष्य को अपनी मृत्यु से अधिक दुष्टता से बचने का प्रयास करना चाहिए।'' **- सुकरात**

''जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करे, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।'' **- जीसस**

''जो अणुमात्र भी भलाई करता है वह उसका फल पाता है, और जो अणु के बराबर भी बुराई करता है, वह उसका फल पाता है।'' **- मुहम्मद साहब**

''दया रहित धर्म कौन है? सभी प्राणियों पर दया रहनी चाहिए। दया ही धर्म का मूल है।'' **- महात्मा बसवेश्वर**

''पहले रोटी बाद में धर्म।''

- स्वामी विवेकानन्द

मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।''

- महात्मा गाँधी

''सत्य को ग्रहण करने एवं असत्य को त्यागने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए।''

- दयानन्द सरस्वती

* एसो. प्रोफेसर एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

अर्न्तदृष्टि तथा बुद्धि

-डॉ. हरिश्चन्द्र यादव

बौद्धिक अवगति की अपनी उपयोगिता है, किन्तु ऐसा नहीं है कि इसमें भूल गलती के लिए स्थान न हो। इस पर संशय भी किया जा सकता है। इनके द्वारा रचित तार्किक युक्तियों को बाटा भी जा सकता है, नकारा भी जा सकता है एक ही स्थापना के पक्ष तथा विपक्ष दोनों में बुद्धि समान ढंग के तर्क प्रस्तुत कर सकती है, अत: बौद्धिक ढंगों में पूर्ण निश्चितता की बात नहीं की जा सकती।

किन्तु राधाकृष्णन का कहना है कि इन बातों का यह अर्थ नहीं कि अन्तर्दृष्टि तथा बुद्धि विपरीत कोटि के हैं। उनका कहना है कि दोनों में पारस्परिक सहयोग है। अन्तर्दृष्टि को कम से कम कुछ कार्यों के लिए तो बुद्धि का सहारा लेना ही पड़ता है। अपने अनुभूत सत्यों को व्यक्त करने के लिए, उन्हें दूसरों के लिए बोधगम्य बनाने के लिए तथा आवश्यकता प़ड़ने पर उसका प्रामाण्य प्रस्तुत करने के लिए तो अन्तर्दृष्टि बुद्धि पर झुकती ही है। अत: आवश्यकता होती है कि उन सत्यों को इस रूप में प्रस्तुत किया जाय जो अन्य के लिए भी सरल हो और यह कार्य तो बुद्धि ही कर सकती है।

इसके विपरीत बुद्धि तो एक रूप से अन्तर्दृष्टि की पूर्णमान्यता पर आधारित होती है। बौद्धिक वृत्ति एक प्रकार से अन्तर्दृष्टि के बिना अपना कार्य सम्पादित ही नहीं कर सकती। बौद्धिकता विश्लेषण की विधि है विश्लेषण के लिए यह अवबोध आवश्यक है कि जिसका विश्लेषण हो रहा है, वह अपने में एक सम्पूर्णता है– एक पूर्ण ईकाई है। यह समझ अन्तर्दृष्टि ही दे सकती है। यदि इन्द्रिय अनुभव तथा बौद्धिकता अवगति सत्ज्ञान के लिए यथेष्ट है, तो आवश्यकता है उस ज्ञान के लिए स्रोत के स्वरूप की समझ की जिसके द्वारा सत् ज्ञान सम्भव हो सके। ज्ञान के इस मार्ग को राधाकृष्णन् 'अन्तर्दृष्टि' कहते हैं।

इन्द्रिय अनुभव वस्तुओं के बाह्य लक्षणों को ही पकड़ पाते हैं–जबकि अन्तर्दृष्टि उनके साररूप को समझने का प्रयास करता है। राधाकृष्णन का कहना है कि अन्तर्दृष्टि की तो यह विशेषता है कि उसे प्रमाण या साक्ष्य की आवश्यकता भी नहीं है, वह अपना साक्ष्य अपने आप है। अन्तर्दृष्टि जहाँ 'जानने' तथा होने का अन्तर ही समाप्त हो जाता है, जहाँ ज्ञान, वस्तु को आत्मसात करना है, वहाँ प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं है। अन्तर्दृष्टि में कोई ज्ञान का माध्यम नहीं होता–यह साक्षात् ज्ञान है। यह साक्षातता एक ऐसा गुण है जिसके आधार पर कहा जाता है कि इन दोनों में पूर्णतया मौलिक भेद नहीं है। दोनों दृष्टि हैं, किन्तु अन्तर्दृष्टि उन क्षेत्रों में प्रवेश कर लेती है जहाँ इन्द्रियाँ नहीं पहुँच पाती।

अन्त: प्रज्ञा बौद्धिक ज्ञान का विरोधी नहीं है वह बौद्धिक ज्ञान से परे है, परन्तु विरुद्ध नहीं। वह बौद्धिक ज्ञान की अपूर्णता को पूर्णता में उसकी एकांगिकयिता को सर्वागीणता में उसके क्षोभ को शान्ति में उसके विवाद को संवाद में परिणत करती है। कला साहित्य और दर्शन में जो कुछ उत्कृष्ट रूप से व्यक्त हुआ है वह सब अन्त:प्रज्ञी का ही वरदान है।

सहायक प्रोफेसर एवं चीफ प्राक्टर, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

अल्लामा इकबाल की हुब्बुलवतनी (देश भक्ति)

-डा. हबीबुल्लाह

अल्लामा इकबाल उर्दू के पहले ऐसे मोफाक्किर और मोहिब्बे वतन शायर हैं जिन्होंने शायरी के दामन को मुख्तलिफ मौजूआत से भर दिया है। उनसे पहले किसी भी उर्दू शायर के यहाँ ख्यासत का वह फैलाव, मौजूआत का वह तनव्वो, वतनी जज़बात का वह शायराना इज़हार नहीं मिलता तो कलाम-ए-इकलाब का खास्सा है।

इकबाल की शायरी में हिन्दुस्तान की सोंधी मिट्टी की खुश्बू और यहाँ की तहज़ीब, कल्चर और मज़हबी रवादारी मिलती है। उन्होंने कुदरती मनाजिर के बयान में यहाँ के मौसम, पहाड़ों, सब्जाज़ारों, दरियाओं इत्यादि की जोर मंजर-काशी की है देखते ही बनती है। इसके अतिरिक्त अहम शख्सियत और दूसरे मौज़ूआत पर अच्छी शायरी के जो नमूने पेश किये हैं वह भी बेमिसाल है। ''बाँग-ए-दरा'' इकबाल का पहला काव्य संग्रह है। इस काव्य संग्रह पर जब नज़र डाली जाती है। तो यह बात खुलकर सामने आ जाती है। कि उन पर वतन से मोहब्बत का ज़ज्बा सर्वोपरि था। उन्होंने अपने वतन की खाक के, ज़र्रों को देवता कहा है। आप जानते हैं कि वह अपनी नज़्म 'नया शिवाला'' में ब्राह्मण को मोखातिब कर अपने जज़्ब-ए-वतन दोस्ती के बारे में फ़रमाते हैं-

पत्थर की मूरतों में समझा है तू खुदा है,
ख़ाके वतन का मुझको हर ज़र्रा देवता है।

इसीलिए अली सरदार जाफरी जैसे प्रगतिशील शायर ने कहा कि इकबाल के यहाँ हुब्बुल वतनी ईमान का दर्जा रखती है। मेरे ख्याल में हुब्बुल वतनी को साबित करने के लिए इससे अच्छा और कोई वाक्य नहीं हो सकता। उनकी 'बाँगे-ए-दरा'' में शमिल नज़्में हिमालय, सादा-ए-दर्द, तसवीर-ए-दर्द, आफताब, तरान-ए-हिन्दी और नया शिवाला उनकी वतन परसती तथा हिन्दुस्तान के एक-एक कण से उनकी मोहब्बत को जाहिर कर रही है। उन कविताओं में मंजर, कशी और फितरत निगारी के बहुत अच्छे नमूने मिलते हैं। तश्बीह व इस्तेआरह और अलामतों के सहारे उन्होंने उर्दू शायरी को लिबास-ए-हरीरी, शेरी पैकर तथा दिलआवेज़ ज़ेवर से सजा, बना और सँवार दिया। इक़बाल के कलाम के अध्ययन से पता चलता है कि वह उस विवाद से बहुत दुःखी थे जो हिन्दुओं और मुसलमानों में पैदा हो गया था। अतः उस दर्द का इज़हार सदा-ए-दर्द में किया है जिसकी नियत मिजाज में दो शेर पेश किये जा सकते हैं।

''जल रहा हूँ कल नहीं पड़ती किसी पहलू मुझे-
हाँ डुबो दे ऐ मोहीत-ए-आबे गंगा तू मुझे

सरज़मीं अपनी क़यामत की नेफाक़ अंगेज है-
वस्ल कैसा याँ तो एक क़ुर्ब फेराक़ अंगेज़ है।

इक़बाल ने जेयादह पर अपनी वतनी में जो जुबान इस्तेमाल की है वह भी महत्वपूर्ण है। वह चाहते हैं कि उनका पाठक तथा आम लोग भी उनकी ऐसी कविताओं में हिन्दी शब्दों का प्रयोग जान-बूझकर किया गया मालूम होता है जैसे-

शक्ति भी शान्ति भी भक्तों के गीत में है-
धरती के वासियों की मुक्ति प्रीत में है।
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना-
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा।

''बाँग-ए-दरा'' की पहली ही नज़्म 'हिमालय' है। हिमालय को मेरे ख्याल में इकबाल ने अपने वतन की सर बुलन्दी की अलामत के तौर पर पेश किया है। ये वतन परस्ती के ज़ज्बात से लबरेज है। जुबान फारसी आमेज जरूर है मगर मंजर काशी बला की है। उस नज़्म का एक शेर हिन्दू-मुस्लिम कल्चर को बगल गीर होते दिखा रहा है। जैसे-

ऐ हिमालय ऐ फसील-ए-किशवरे हिन्दोस्ताँ।
चूमता है तेरी पेशानी को झुल कर आसमाँ।।

यह कविता की लाइन कितनी बरजस्ता और कितनी खूबसूरत शायरी का नमूना है।

'तस्वीर-ए-दर्द' इकबाल की ऐसी नज़्म है जो 1905 से 1925 तक हिन्दुस्तान की तारीख की जीती जागती और चलती-फिरती तस्वीर पेश करती है। इस नज़्म में इकबाल ने हिन्दू-मुस्लिम दोस्ती की अहमियत बताते हुए मुहब्बत का फलसफा यूँ समझाने की कोशिश की है।

मुहब्बत के शरर से दिल सरा पा नूर होता होता है,
ज़रा से बीज से पैदा रेयाज़-ए-तूर होता है।।

''तस्वीर-ए-दर्द' में इकबाल वतन पर वर की शक्ल में कौम के सामने आते हैं और जो रंग हिमालय, नया शिवाला और तरान-ए-हिन्दी में पाया जाता है वही रंग पूरी सिद्धत के साथ इस

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, उर्दू विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

नज्म में नजर आता है। इकबाल ने दिल खोल कर वतन की भेदभाव नीति नौहा ख्वानी की है। तथा हिन्दू-मुस्लिम दोनों को साफ शब्दों में आगाह किया है कि आपस में मेल-जोल न रखा तो मिट जाओगे।

'तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानों में।

वतन का बुरा हाल उन्हें इस कदर प्रभावित करता है कि वह हर समय इसके भविष्य पर आँसू बहाते हैं। इस में कोई शक़ नहीं कि इस नज़्म में एक सच्चे वतन दोस्त की आत्मा विचलित नज़र आती है। **जैसे-**

रूलाता है तेरा नज़्ज़ारा ऐ हिन्दोस्ताँ मुझ को।
कि इबरत ख़ेज है तेरा फसाना, सब फसानों में।।

'तरान-ए-हिन्दी' इक़बाल ने 1904 में लिखी थी और 'जमाना' पत्रिका कानपुर में छपी थी। जिसकी पहली ही लाइन हमारे दिलों में वतन से मुहब्बत की चिंगारी को शोला बना देती है।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलिसताँ हमारा।।

यह नज़्म गाँधी जी के बहुत पसन्द थी और इसको बड़े ज़ौक़ व शौक से पढ़ते थे। आज भी हमारे कौमी प्रोगामों में इस नज़्म से जान पड़ जाती है और इसकी धुन में खो जाते हैं जब हम यह शेर पढ़ते हैं।

पर्वत वह सबसे ऊँचा हम साया आसमाँ का
वह सन्तरी हमारा, वह पासबाँ हमारा।

तो हमें सुरक्षा का एहसास होता है और ऐसा लगता है कि हमें कोई खतरा नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

हिन्दुस्तानी बच्चों का कौमी गीत इक़बाल की मशहूर नज़्म है जो हिन्दुस्तान की अहमियत और खसूसियत को पूरी दुनिया की कौमों के सामने पेश करती है। हिन्दुस्तान में भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग भिन्न-भिन्न देशों से आकर आबाद हुए। यहाँ की मिट्टी में रवादारी कूट-कूटकर भरी है। नज़्म का आगाज ही हिन्दुस्तान की तारीखी अहमियत और उसकी मज़हबी रवादारी की तरफ इशारे से होता है।

चिश्ती ने जिस जमीं में पैगाम-ए-हक़ सुनाया-
नानक ने जिस चमन में वदहत का गीत गाया,
तातारियों ने जिसको अपना वतन बनाया-
जिसने हिजाज़ियों से दश्त-ए-अरब छुड़ाया
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।

नज़्म 'नया शिवाला' हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए उर्दू या हिन्दुस्तान की किसी जुबान में अब तक नहीं लिखी गई। सियासी फायदे के तहत मुल्क को तोड़ने और इसकी सालमियत को नुकसान पहुँचाने की कोशिश की जा रही है। जरा सुनिये इकबाल का पैगाम।

आ गैरियत के पर्दे इक बार फिर उठा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें, नक्शे दुई मिटा दें,
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती
आ इक नया शिवाला इस देश में बना दें,
दुनिया के तीर्थों उँचा हो अपना तीरथ,
दामान-ए-आसमाँ से इसका कलश मिला दें
हर सुबह उठ के गायें मन्त्र वह मीठे-मीठे।
सारे पुजारियों मै प्रीत की पिला दें।

इकबाल ने राम, नानक, स्वामी राम तीरथ पर भी नज़्में कही हैं जिनसे उनकी मुहब्बत केशी का पता चलता है। उनको हर उस व्यक्ति से मुहब्बत थी जो इल्म-व-अमल में आदर्श इन्सान थे। उन्होंने हिन्दुस्तान की कदीम तारीख से अपनी शायरी के निगार खाने को खूब सजाया है। इसलिए उनकी हुब्बुल वतनी का रंग बहुत गहरा और नुमायाँ है।

इकबाल की देशभक्ति एक ऐसा मौजू है जिस पर पहले भी लिखा गया है और आइन्दा भी लिखा जाता रहेगा। मेरे ख्याल में यह टापिक आज का सबसे बड़ा टापिक है। इकबाल की देशभक्ति पर भिन्न भाषाओं में विशेष रूप से हिन्दी में लिखने की जरूरत है। इसलिए कि अधिक से अधिक लोग उनके उपदेश को समझ सकें। इकबाल जितने बड़े कवि थे उससे बढ़कर देश प्रेमी थे। वह एक ऐसे कवि एवं मुफक्किर हैं जिन्होंने हमें, अपने कलाम के उपदेश के माध्यम से मिलजुल कर रहने और अपना दुःख सुख बाँटने का दर्स दिया और यही इन्सानियत की मेराज है।

बकौल शायर-

''मेरा पैगामें मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे''।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- मैं चाहता हूँ कि मेरे सब बच्चे, मैं जितना उन्नत बन सकता था, उससे सौगुना उन्नत बनें। तुम लोगों में से प्रत्येक को महान शक्तिशाली बनाना होगा - मैं कहता हूँ , अवश्य बनना होगा। आज्ञा-पालन, ध्येय के प्रति अनुराग तथा ध्येय को कार्यरूप में परिणत करने के लिए सदा प्रस्तुत रहना। इन तीनों के रहने पर कोई भी तुम्हें अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकता।

अर्वाचीन संस्कृत कथाएँ : ऐतिहासिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में

- डॉ. पूनम सिंह

संस्कृत कथाओं के क्षेत्र में ऐतिहासिक कथाओं की एक लम्बी परम्परा रही है, जिसमें राजाओ, मन्त्रियों, विद्वानों, कवियों, घटनाओं, देशभक्तों, कर्तव्यपरायण नागरिकों, विविध आन्दोलनों, प्राकृतिक आपदाओं आदि से सम्बन्धित कथाऐं लिखी जाती रही हैं। भट्ट मथुरानाथ शास्त्री की कथाओं में ऐतिहासिक कथाओं की संख्या सर्वाधिक रही है। अलक्ष्येन्द्रश्च दस्युश्च, पृथ्वीराजपौरूषम्, अठलिमालः, आल्हा च ऊदलश्च, चन्द्रहास, कृत्रिमवेदी, बीरबालकः, धन्यो भारतीय वीरः, पुरूषपरीक्षा आदि कथाएं ऐसी ही हैं। ऐतिहासिक कथाओं का उद्देश्य अतीत की किसी गौरवशाली घटना पर भावपूर्ण प्रकाश डालना होता है। इनमें कुछ कथाएं शुद्ध ऐतिहासिक कथाएं होती हैं। उपरोक्त कथाएं इसी प्रकार की हैं। कुछ कथाओं का वातावरण पूर्णरूपेण इतिहास के अनुरूप रहता है। जबकि घटनायें और पात्र कल्पित रहते हैं। इनमें ऐतिहासिक वातावरण की प्रधानता होती है जैसे– पोतविहगौ और सिंहसारिः। कथा 'पोतविहगौ' में चालिस–पचास के दशक के परिवेश को साकार किया गया है। इसमें एक सैनिक के जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। जौनपुर जनपद के गोरापट्टी नामक ग्राम के निवासी चित्तू पाण्डेय का पुत्र निहाल पाण्डेय परिवार कि आर्थिक समस्याओं से पीड़ित है। अपनी बहन के ससुर शिवमूर्ति तिवारी के सहयोग से वह सेना में प्रवेश करता है। कथा में वर्णित द्वितीय विश्वयुद्ध का संक्षिप्त वर्णन और 1944–45 का राजनैतिक परिदृश्य मूल कथा का विशेष हितकारी नहीं है किन्तु कथा को सशक्त ऐतिहासिक परिपार्श्व प्रदान कर रहे हैं। निहाल रंगून में है जहाँ उसका परिचय महुली से होता है। दोनों में शनैः–शनैः विकसित होते प्रेम का वर्णन लेखक ने रूचिपूर्ण सौन्दर्य, आधायक प्रसंगो के माध्यम से किया है। स्वदेश वापस आते हुये निहाल के साथ महुली भी आ जाती है। यहाँ दोनों के सात्विक स्नेह को लेखक ने भावपूर्ण ढंग से रूपायित किया है। गाँव में निहाल की पत्नी–माँ–पिता–बहन और बच्चों के लिये महुली का आगमन असहनीय हो जाता है। निहाल के पिता महुली को घर के बाहर बनी कुटिया में संरक्षण प्रदान करते हैं। निहाल की पत्नी महुली के कारण उसका अत्यन्त तिरस्कार करती है। पाँच वर्षों बाद लौटा निहाल पत्नी के तिरस्कार, अविश्वास, संदेह तथा अपमान से आहत होकर महुली के प्रति पूर्ण समर्पित है। महुली का घर के अन्दर प्रवेश निषिद्ध है। वह सभी नियमों का प्रतिबद्धता से पालन करती है। उसके कारण निहाल के जीवन में आयी समस्याओं के प्रति वह अति संवेदनशील है। एक बार निहाल के कनिष्ठ पुत्र को संकट में देखकर उसकी प्राण–रक्षा में वह घर के अन्दर प्रवेश कर जाती है। यहाँ वह निहाल की माता और पत्नी के द्वारा अत्यन्त अपमानित होती है। अन्ततः वह उसे घर छोड़कर अन्यत्र चल देती है किन्तु निहाल उसे वापस लाने में सफल रहता है। कथा में तत्कालीन समाज के मूल्यों, मानकों, आदर्शों, परम्पराओं का प्रभावशाली अंकन है। महुली का मार्मिक चरित्र, उसकी वाक्पटुता, सहज समर्पणात्मकभाव, स्नेह आदि प्रभावित करते हैं। निहाल–महुली–प्रेमप्रसंग और निहाल व निहाल–पत्नी का विवाद–प्रसंग कथा में जीवन्त हो उठे हैं।

कथा रांगडा एक शुद्ध ऐतिहासिक कथा है। लेखक ने इसमें बालीद्वीप की यात्रा के अन्तर्गत वहाँ के ऐतिहासिक मन्दिर महिषासुरमर्दिनी का विवरण दिया है। यहाँ लेखक की यात्रा और ऐतिहासिक संदर्भों में दिया गया वर्णन दोनों अपने वातावरण व परिपार्श्व–चित्रण के साथ अत्यन्त प्रभावशाली और जीवन्त हो गये हैं। कथारम्भ में यात्रा, मार्ग तथा वहाँ के क्षेत्र आदि की जानकारी है। पहाड़ीपुर के महिषासुरमर्दिनी मन्दिर को देखकर मन में उपजी–विचार श्रृंखला को शब्द–रूप में साकार कर दिया गया है। यहाँ भारतीय संस्कृति में देव तथा देवालयों की सेवा आदि का महत्वपूर्ण स्थान वर्णित है। कुतरीग्राम में अधिष्ठित महिषासुर–मर्दिनी (राठडा) के इतिहास का विवरण देना ही कथा का आधार है। यहाँ मात्र ऐतिहासिक लेखा जोखा ही नहीं है अपितु तत्कालीन सामाजिक

* असिसटेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत, डीएवी पीजी कालेज, वाराणसी।

राजनीतिक सम–विषम स्थितियों के मध्य कथापात्रों के साहसिक संघर्ष की गाथा है। यहाँ पात्रों में अदम्य जिजीविषा और विषम परिस्थितियों से उपजे संघर्ष को दिखाया गया है। जीवन के अछे–बुरे समय को सधैर्य, साहसयुक्त होकर जीते पात्र मन को छू जाते हैं। कथा कालक्रमानुसार विविध खण्डों में विभक्त है। यहाँ 10 वीं–11 वीं सदी का समय पाठक के समक्ष प्रत्यक्ष होकर एक काल्पनिक संसार की रचना कर रहा है।

राम किशोर मिश्र की कथा 'खड्गेन तं हिनिष्यामि' में ओरक्षा–नरेश चम्पतराय और उनकी वीरांगना पत्नी की देशभक्ति वर्णित है।

प्राचीन संस्कृत–कथाओं को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अधिकाधिक ग्राह्य और उपयोगी बनाते हुये नवीन कलेवर में प्रस्तुत किया जा रहा है। पंचतन्त्र, द्वात्रिंशतपुत्तलिका, वेतालपञ्विंशतिः आदि कथाओं के नवीन रूप कथासाहित्य में नित्य ही सामनें आ रहे हैं।

अनेक ऐसी कथाओं की रचना हो रही है जहाँ प्राचीन साहित्य को वर्तमान संदर्भों के साथ अत्यन्त रोचक और ग्राह्य रूप दिया गया है। डा. राधावल्लभ त्रिपाठी ऐसे प्रयोगों में अप्रतिम है। दीर्घ कथाओं का संकलन उपाख्यान–मालिका संस्कृतसाहित्य को उनकी एक महत्त्वपूर्ण देन है। यहाँ ऐसी सभ्यता का समकालीन संदर्भ रचा गया है, जहाँ मिथक, इतिहास, पुराकथा और लोकजीवन एकाकार हो रहे हैं। लेखक पुराणों की पारम्परिक पदावलियों को आधुनिक भावबोध के साथ जोड़ने में सफल हैं। उन्होने पुराकथाओं को वर्तमान समय में देखने की नई शैली दी है। यहाँ उनका लोकसंवेदी हृदय उदारीकरण के इस परिवेश में समाज के जटिल और अनेक स्तरीय अभिप्रायों को अभिव्यक्त करता है। लेखक ने अपने राजनीतिक और सामाजिक आशयों को व्यापक परिवेश में अंकित किया है। यहाँ व्यक्ति के संघर्ष को सामूहिक संघर्ष में और साहित्य के स्वरों को सामाजिक स्वरों में परिवर्तित कर दिया है। राजनीतिक संदर्भ, सांस्कृतिक विचार, लोक की संवेदना, विश्वग्राम के संकट से उपजी समस्यायें, इतिहास–पुराण की मिथकीय समाज, रिश्तों की मार्मिक अनुगूँजे, जीवन के उद्धार के प्रयत्न आदि अनेक तत्वों से युक्त यह उपाख्यानमालिका संस्कृत–साहित्य को समृद्ध कर रही है।

लेखकों के समक्ष रचना के प्रायः दो मार्ग माने गये हैं। परम्परा–युक्त परम्परा और परम्परा–परिष्कृति परम्परा। इनमें से परम्परा–परिष्कृति के मार्ग में चलने वाले साहित्यकारों में प्रो. राधावल्लभ जी अग्रणी माने जाते हैं। आचार्य जी की अभिनवशुकसारिका गद्य–कथासंग्रह में परम्परा–परिष्कृति है। इसमें 'शुकसप्तति' की ऐसी प्रसिद्ध कथाओं की रोचक प्रस्तुती है जिनमें युगानुरूप नव्यता और अनुभूतियाँ समाहित हैं। वैश्वीकरण के दौर में, विश्वग्राम की कल्पना में सारे विश्व को भारतीयता के आलोक में देखने का सफल प्रयत्न है। प्रो. इन्द्रमौलि का पुत्र कथानायक शताब्द विदेश जाते समय नायिका शम्पा को चरित्र–शुद्धि का परीक्षक परफ्यूम देता है। वह उसे शशिधर नामक एक मेधाविनी सारिका और शीलभद्र नामक एक शुक देता है। इसके पाश्चात् शम्पा के प्रत्येक गलत कार्य के समय शीलभद्र एक कथा कहता है और अन्त में शुकसारिका अदृश्य हो जाती है। इस प्रकार इसमें वर्णित छः कथाओं का सम्बन्ध नायिका के वर्तमान परिवेश से जुड़ता हुआ आधुनिक भाव देता है। इन कथाओं में ग्रामीण–विकास, आतंकवाद, भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति, हिन्दू और मुस्लिम धर्म और अप्रवासी भारतीयों की समस्याओं का अंकन है। भारतीय रूढ़िवादिता जैसे लग्न–प्रथा और अनिष्ट कल्पना आदि पर व्यंग्यात्मक प्रहार किये गये हैं। अशिक्षित व्यक्ति की समस्याओं और प्रौढ़–शिक्षा–केन्द्रों की आवश्यकता पर बल दिया गया है। आधुनिक जीवन शैली से युक्त दाम्पत्य से उपजी परिस्थितियों का चित्रण है। इस क्षेत्र में यह संग्रह एक अनूठा प्रयोग है।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- जिस तरह हो, इसके लिए हमें चाहे जितना कष्ट उठाना पड़े- चाहे कितना ही त्याग करना पड़े यह भाव (भयानक ईर्ष्या) हमारे भीतर न घुसने पाये - हम दस ही क्यों न हों - दो क्यों न रहें - पहवाह नहीं परन्तु जितने हों सम्पूर्ण शुद्धचरित्र हों।

Mobility of Agriculture Labour and Status of Employment in India

- Dr. Anup Kr. Mishra

Introduction :

Labour is one of the primary factors of production. It is considered to be important not only because it is productive but also because it activates other factors and makes them useful for production purposes. The size of labour force in a country is determined by the number of people in the age group of 15-59 years as generally children below 15 years and old people above 59 years do not participate in production activity. India's labour force consists of 459.1 million workers (2004-05), growing at the rate of 2 per cent annually. Out of this 268.1 million workers are employed in agriculture as cultivators and labourers. Agricultural labourers, mostly landless constitute the poorest segment of the Indian agricultural population. They belong to the economically backward and oppressed section of the society. They mainly belong to the scheduled castes and other backward communities. They are basically unskilled and unorganized and work in farms of prosperous big farmers as casual workers on wages for a larger part of the year. One of the most disquieting features of the rural economy of India during the past several decades has been its constantly increasing trend in the number of landless labourers. Factors like rapid growth of population, law of inheritance, rise in cost of agricultural inputs and decline in small scale industries have been responsible for this increase. The phenomenon of under employment, under development and surplus population are simultaneously manifested in the daily lives and living of agricultural labourers.

Agricultural Labour

Unlike industrial labour, agricultural labour is difficult to define. The reason is that unless capitalism develops fully in agriculture, a separate class of workers depending wholly on wages does not come up. The First Agricultural Labour Enquiry Committee (ALEC) 1950-55 defined Agricultural Labour as "Those people who are engaged in raising crops on payment of wages" (based on occupation).That is if half or more of a household have wage employment in agriculture then those households can be termed as agricultural labour households. The Second ALEC 1956-57 enlarged the definition to include- "Those who are engaged in agriculture and other agricultural occupations like dairy farming, horticulture, raising of livestock, bee keeping, poultry etc."(based on income).According to this definition if 50 per cent or more of its income is derived as wages for work rendered in agriculture and allied activities, then it could be classed to agricultural labour household. According to National Commission on Labour "An Agricultural labourer is one who is basically unskilled and unorganised and has little for his livelihood, other than personal labour".

*Asstt. Professor, Department of Economics, DAV PG College, Varanasi

Classifications of Agricultural Labour

The agricultural labourers can be classified into mainly two categories. 1. Landless agricultural labourers - i) Permanent Labourers Attached to Cultivating Households, ii) Casual Labourers. 2. Very small cultivators whose main source of earnings due to their small and sub marginal holdings is wage employment. Permanent or attached labourers work on annual or seasonal basis and they work on some sort of contract. Their wages are determined by custom or tradition. Temporary or casual labourers are engaged only during peak period of work. They are paid at the market rate. Under the second group come small farmers who possess very little land and therefore, have to devote most of their time working on the lands of others as labourers.

Characteristics of Agricultural Labour

Agricultural labour in India is being widely scattered over 6.38 lakh villages ,of which half have population of less than 500 each. And therefore, any question of building an effective organization, like that of industrial workers, poses insurmountable difficulties. Agricultural labourers, especially in smaller villages away from towns and cities, are generally unskilled workers carrying on agricultural operation in the centuries old traditional wages. Most agricultural workers belong to the depressed classes, which have been neglected for ages. The low caste and depressed classes have been socially handicapped and they never had the courage to assert themselves. In some parts of India, the number of agricultural labourers being very large and skills they possess being meager, there is generally more than abundant supply of agricultural labourers in relation to demand for them. It is only during the sowing and harvesting seasons that there appears to be near full employment in the case of agricultural labourers. But, once the harvesting season is over, majority of agricultural workers will be jobless especially in areas, where there is single cropping pattern. Due to all the above mentioned factors, the bargaining power and position of agricultural labourers in India is very weak. In fact, quite a large number of them are in the grip of village money lenders, landlords and commission agents, often the same person functioning in all the three capacities .Rural labourers are migratory, moving in search of jobs at the time of harvesting.

Nature of Agricultural Labour Market

The agricultural labour market in India is highly segmented. The labour absorption and wage rate depends on: 1) adoption of new technology, 2) population and migration, 3) marketing & other institutional support like credit etc. 4) the terms of trade and the extent of the market, 5) the profitability. Demand - supply and the quality of life of the labour in the various markets also differ widely. The hilly region with shifting cultivation and forestry provide job opportunities to the agricultural labour at a lower level compared to the region which have adopted new agricultural strategies .These regions vary with regard to wage levels also. Also the inter-zonal movement of agricultural labour is rigid. The demand for agricultural labour and wage levels in Punjab, Haryana and other areas of green

revolution are higher than those in the remote areas of Orissa or Assam where no agrarian reform or agricultural strategy has been adopted. Some studies have reported the increasing casualisation of labour, increasing feminization of labour due to male migration, decline in the customary and dependency relationship, increasing integration of labour market due to increased mobility of labour because of development in the means of communication and road infrastructure.

Women Labour in Agriculture

When we talk about agricultural labour, woman labour has a special significance. Women are a vital agent in Indian economy, even as studies points towards 'statistical 'purdah' or 'economic invisibility' manifest in selective under- documentation of their endeavours, in a society with strong traits of patriarchal norms. In Indian population 48.27 per cent are women and the number is 495.7 million, 72.72 per cent of the women live in rural areas, 45.84 per cent of the female population is illiterate. In rural areas the corresponding figure is 53.3 per cent. The labour force participation rate of women is 31.56 per cent, less than half of the mens' rate of 68.44 per cent. A recent report by the government has revealed that women outnumber men as agricultural labourers. As per the 2001 census, there were 42.95 per cent women labourers as compared to 27.51 per cent men. In India the labour force is largely masculine, with only one out of every four workers being a female. Women today play a pivotal role in agriculture - as female agricultural labour, as farmers, co-farmers, female family labour and (with male out-migration, widowhood, etc.) as managers of farms and farm entrepreneurs. Three-fourths of women workers are in agriculture. Among rural woman workers, 87 per cent are employed in agriculture as labourers and cultivators. Woman is the moulder and builder of any nation's destiny. They are regarded as the backbone of the rural scene. Women workforce outside the four walls is larger in rural areas than in urban India. Women are responsible for 50 per cent of food production in the developing world. Most of the women perform various types of work for their livelihood and agriculture is considered as the biggest unorganised sector where large number of rural women takes part actively. While women have always played a key role in agricultural production, their importance both as workers and as managers of farms has been growing, as an increasing number of men move to non-farm jobs. Women constitute 40 per cent of the agricultural work force and this percentage is rising. An estimated 20 per cent of rural households are de facto female headed, due to widowhood, desertion, or male outmigration. According to the census reports, there is an increased participation of rural women in economic activities besides doing household duties, though participation of women in agriculture contribute a lot for the economic growth and progress of the country, their problems are shown least concern. Woman's role has biologically and socially combined to create four distinct functions that of mother, wife, homemaker and worker. The

role of worker is equally important as that of the other three roles. But her role as an active worker-producer is rarely acknowledged though it is significant for the family's survival. These unknown and unacknowledged beings are responsible to keep the economy at a steady pace and helped the nation to occupy a significant place in the world.

Womens' involvement varies widely among different regions, ecological sub zones, farming system, caste, class and stages in the family cycle. Generally, the poorer the family, the greater the involvement of women in agricultural activities. Women have extensive workloads with dual responsibility for many of the farm operations and household management (fetching water, cooking and taking care of children). Despite womens' significant and crucial role in agricultural development and allied fields, they have virtually no access to agricultural information, services or production assets and have very limited control over their earnings. Though Green Revolution technologies enhanced agricultural productivity, they also widened economic disparities and deepened gender discrimination in community life. The introduction of capital intensive technologies in the agricultural sector has had differential impact on men and women and women have been adversely affected due to lack of access to technology.

Labour Mobility in India

During the 64th round survey of NSSO (2007-08) only a negligible proportion (less than 1 per cent) among the usually (ps) working persons had changed work status while change of establishment among the usually (ps) employed was reported for 5 per cent for rural male, 6 per cent for rural female, 4 per cent for urban male and 5 per cent for urban female. The proportion of persons who changed their establishment is much less among those with education level higher secondary and above as compared to those with lower levels of education - be it in rural areas or in urban areas. During the 64th round of NSSO survey , about 1 per cent of rural males, urban males, urban females, and negligible proportion (0.3 per cent) of rural females who were workers in usual status (ps) reported change in their industry of work. During the two years preceding the date of survey, about 1 per cent of rural males, urban males, urban females, and negligible proportion (.3 per cent) of rural females who were workers in usual status (ps) reported change in their occupation.

Status of Employment in India

Table 1 presents the percentage distribution of workers over the two period NSSO rounds (61st and 66th) reports. The major findings are as follows:

1. At all India level, percentage of total (all) self employed workers as per their different status of employment are at predominance. It is 56.9 per cent in 2004-05 and 51.0 per cent in 2009-10. The proportion of self employed workers in rural sector (63.7 per cent) is higher than, that in urban sector (47.7 per cent). Here we also mark that the proportion of self employed female workers are not only higher in rural areas (63.7 per cent)

than in urban areas (47.7 per cent), but also self employed rural females (63.7 per cent) are higher than rural male (58.1 per cent).

This shows that, while there have significantly higher proportion in total (all) female workforce of self employed, this high proportion is more apparent in rural sector.

2. With regard to regular wage / salaried employees, it is dominantly more in urban areas (39.5 per cent and 41.4 per cent) but also here the males are marginally more than the females.

Most marking fact is, while are the 61st and 66th round data, while self employed workers decreased the percentage of regular wage / salaried employees increased.

3. Among the three major categories of worker's status (table 1), while the 'Self Employed Workers' rank the first, the 'Casual Workers' ranked the second, while 'Regular Wage / Salaried Employees' ranked third.

Table 1: Percentage of workers in different status in employment in India

Category of workers	Status in employment									
	Self-employed		Regular wage/salaried employees		Casual labours in public works		Casual labours in other type of works		Casual labours	
	2004-05	2009-10	2004-05	2009-10	2004-05	2009-10	2004-05	2009-10	2004-05	2009-10
Rural male	58.1	53.5	9.0	8.5	0.2	0.8	32.7	37.2	32.9	38.0
Rural female	63.7	55.7	3.7	4.4	0.2	2.4	32.4	37.5	32.6	39.9
Rural all	60.2	54.2	7.1	7.3	0.2	1.3	32.6	37.3	32.8	38.6
Urban male	44.8	41.1	40.6	41.9	0.1	0.4	14.5	16.6	14.6	17.0
Urban female	47.7	41.1	35.6	39.3	0.1	0.4	16.6	19.2	16.7	19.6
Urban all	45.4	41.1	39.5	41.4	0.1	0.4	15.0	17.1	15.1	17.5
All male	54.7	50.0	17.2	17.7	0.1	0.7	28.0	31.5	28.1	32.2
All female	61.4	53.3	8.3	10.1	0.2	2.1	30.2	34.5	30.4	36.6
All person	56.9	51.0	14.3	15.6	0.1	1.1	28.7	32.4	28.8	33.5

Source: Data computed from NSSO (61st, Chapter 3, pp-34 & 66th round, Chapter 3, pp-36), Informal Sector and Conditions of Employment in India.

Based on 'all', while on one hand both the 'regular wage / salaried employees' and 'casual labours' increased, on the other hand 'self employed' persons decreased.

Conclusion

To end with, we find that on one hand, with the neo liberal economic policies low or no investment in agriculture and rural

infrastructure leads to migration in search of employment and livelihood whereas on the other hand, there are less inter or intra sector mobility of labour in India and the expectation that growth would cause the movement of workers out of low productivity primary activities to formal employment in regular jobs has been completely missed in the past ten years. The availability of low-wage immobile labour may discourage economic development. As labour mobility improves, so do the lives of workers around the globe. As a general rule, workers are able to find better paying jobs and improve their living situations when less control is placed on where they can move and what occupations they can apply for. At the same time, businesses improve because workers receive better training and the right employee can be hired. Economies improve as productivity improves. If economic development has to take place in India, it requires much more mobility of labour, especially of agricultural labour.

References :

1. Agiomirgianakis, George M.. 1999. The Macroeconomics of Open Economies under Labour Mobility. Aldershot, UK; Brookfield, VT: Ashgate.

2. Broeck, Julien van den. 1996. The Economics of Labour Migration. Cheltenham, UK; Brookfield, VT: Edward Elgar.

3. Clemens, Michael A., and Lant Pritchett. 2008. "Income per Natural: Measuring Development for People Rather Than Places." Population and Development Review, 34(3): 395-434.

4. Data Book 2007. Indian Agricult-ural Statistics Research Institute, New Delhi.

5. Desai, Mihir A., Devesh Kapur, John McHale, and Keith Rogers. 2009. "The Fiscal Impact of High-Skilled Emigration: Flows of Indians to the U.S." Journal of Development Economics, 88(1) : 32-44.

6. Government of India's National Sample Survey Organisation (NSSO 61st Round, 2004-05)

7. Government of India's National Sample Survey Organisation (NSSO 64th Round, 2007-08)

8. Government of India's National Sample Survey Organisation (NSSO 66th Round, 2009-10)

9. Jalan, J., and R. Murgai (2009): .Intergenerational Mobility in Education in India,.Working papers, Indian Statistical Institute, Delhi.

10. Lee, C., and G. Solon (2009): .Trends in Intergenerational Income Mobility,. The Review of Economics and Statistics, 91(4), 766.772.

11. Srivastava, Ravi S, and S.K. Sasikumar, 2003, “An Overview of Migration in India, Its Impacts, and Key Issues,” paper presented at a Regional Conference on Migration, Development and Pro-Poor Policy Choices in Asia, Dhaka, Bangladesh, June 21–24.

12. Todaro, M.P., 1969, “A Model of Labor Migration and Urban Unemployment in Less-Developed Countries,” American Economic Review, Vol. 59, pp. 138–48.

W. Arthur Lewis, “Economic development with unlimited supplies of labour,” Manchester School 22 (May 1954):139–191.

दो रचनाएँ

–डॉ. कमालुद्दीन शेख

(1)

एक पत्र बापू के नाम

किरनें फिर घर वापस आयें इसीलिए इस शाम
एक पत्र लिख रहा हूँ बापू आज तुम्हारे नाम

चम्पा, बेला औ गुलाब के जख्मी हुए बदन
मौसम के बदले मिज़ाज से काँटे हुए मगन
नहीं है बुलबुल की क़िस्मत में फूलों की वो छाँव
नागफनी ने जमा लिये हैं फुलवारी में पाँव
इस युग में एक पंछी का जीना हुआ हराम

सुलग रहे हैं ख़्वाब सुनहरे है कैसा दस्तूर
जुर्म माँग में राजनीति की भरता है सिन्दूर
छल के आँगन में मज़हब के नाच रहे हैं मोर
डर है टूट न जाय प्यार की समरसता की डोर
सिसक उठे न मानवता मच जाये न कोहराम

धोखे में छलिया भौरों के आ जाते हैं फूल
छीन न ले क्यारी-क्यारी की शोभा इनकी भूल
तरस न जाये कहीं बहार की रुत को फिर गुलशन
पड़ न जाय यूँ कली-कली का मुश्किल में जीवन
भरम में रख रस ले- लेकर उड़ जाना इनका काम

प्यार से अपनी गोद में लेकर जिनका रूप निखारे
जिनकी ज़िद पे थाली में भी सूरज-चाँद उतारे
आज वही बच्चे माँ की ममता की कोख लजायें
भाषा जाति धर्म के चाकू रह रह कर चमकायें
प्यारी माँ का आँचल भी ये कर देंगे नीलाम।

(2)

संभल के आना आने वाले साल

राह कठिन है अँधियारे में संभल-संभल के चल
देख के तेरे हाथ में दीपक हवा हुई पागल

कहाँ गया वो नाच अनोखा कहाँ गया वो शोर
नहीं दिखायी देते हैं अब सावन में भी मोर
हर पंछी की प्यास बुझाना जिसका रहा स्वभाव
आज उसी बादल की छत से होता है पथराव
चुभता है आँखों में अपनी पलकों का काजल

किसी तरह का भेद नहीं है जहाँ न कोई अनबन
जिसके घर में रहने की है शर्त प्यार का बंधन
सदियों की पावन गाथा है जिसकी अमर कहानी
मछुआरे अब बाँट रहे हैं उसी नदी का पानी
सभी मछलियों पर छाये हैं संकट के बादल

क्यारी के पौधों का हमसे मत पूछो अब हाल
माली चुन-चुन काट रहा है फूलों वाली डाल
काँटे हैं आबाद नयी फिर चलें न कोई चाल
बीच हमारे संभल के आना आने वाले साल
हरा-भरा उपवन लगता है काँटों का जंगल

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- ज्ञान स्वयमेव वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका आविष्कार करता है।
- मानव - देह ही सर्वश्रेष्ठ देह है, एवं मनुष्य ही सर्वोच्च प्राणी है, क्योंकि इस मानव - देह तथा इस जन्म में ही हम इस सापेक्षिक जगत् से सम्पूर्णतया बाहर हो सकते हैं -निश्चय ही मुक्ति की अवस्था प्राप्त कर सकते है, और यह मुक्ति ही हमारा चरम लक्ष्य है।

* असिस्टेंट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

बुद्धि-विलासी दिल्ली-वासी

–डॉ. राकेश द्विवेदी

महगू के मन में उत्कंठा उठकर बोली,
जैसे ही तिरपट बाबा ने आँखें खोली।
दिल्ली से सप्ताह-पूर्व ही वे लौटे थे,
थके-थके-से धरती पर ही वे पौटे थे।
वाणी से वेबाक, पाक दिल के मानुष थे,
फक्कड़, कुछ जिद्दी अग्रज के वे सानुज थे।
एक आँख तिरछी, वाणी से कुछ हकलाते,
बस्तीभर में तिरपट बाबा वे कहलाते।

महगू बोला–''बाबा तुम इक बात बताओ!
उत्तर देकर मेरे मन की प्यास बुझाओ।
बड़ी लालसा थी कि मैं भी दिल्ली जाऊँ,
पढ़-लिख ऊँचा बनू और कुछ नाम कमाऊँ।
पर, इच्छा रह गई अधूरी मन की मन में,
धंधे में फँस गया, इधर मैं उदर-जतन में।
तुमने तो बरसो से डेरा वहीं जमाया,
लोगों को अपनी बुद्धि से खूब छकाया।''

बाबा को खुश देख, पिटारा दिल का खोला,
उत्कंठा ने वेग धरा फिर महगू बोला–
''बाबा ये दिल्ली वाले कैसे होते हैं?
कैसे खाते-पीते हैं, कैसे सोते हैं?
ये कैसे गाते हैं औ कैसे रोते हैं?
मग में लोगों के कैसे कंटक बोते हैं?
धन-वैभव औ बुद्धि में धनकी होते हैं,
क्या बाबा! दिल्ली वाले सनकी होते हैं?''

महगू ने जैसे ही यह इतिहास सुनाया,
बाबा ने नेत्रों का कुछ भूगोल बढ़ाया।
महगू की सुन बात ज्ञान-चक्षु तीसरे बोले,
तंद्रा में ऊँघते हुए फिर तिरपट बोले–
''हे भाई! अब क्या कहना दिल्लीवालों का,
व्यर्थ विवाद रहे कर तुम खिल्ली वालों का।
तनिक इल्म हासिल कर जो उस पर इतराते,
पूछो जो इक बात तो सौ-सौ बात बताते।''

जींस-बूट-पतलून पहनकर वे चलते हैं,
बात-बात में हँसी-मजाक सदा करते हैं।
किसी बात का टोन पकड़ वे जब लेते हैं,
भू-मण्डलीकरण उसका वे कर देते हैं।
सरल बात को कठिन बनाकर वे समझाते,
सभा-गोष्ठियों में औरों पर रौब जमाते।
तर्क-वितर्क, कुतर्क, वितंडा हर-हथकंडा,
यह सब है विजयी बनने का इनका फंडा।
तुम चाहे जो कहो, वे अपनी ही जोते हैं,
हे भाई! दिल्लीवाले ऐसे होते हैं।

शब्दों के भी नये-नये ये अर्थ बताते,
हर कीमत पर अपनी बातें सिद्ध कराते।
बड़े-बड़े विद्वानों का झट नाम गिनाते,
उनके दादा-पुरखों के ग्रन्थों में जाते।
माओ, मार्क्स, सार्त्र सबकी वे थीम बताते,
बातों को उलझा-उलझाकर खूब घूमाते।
सही राह चलने वालों को भी भटकाते,
बड़े-बड़े विद्वान् इसी में चक्कर खाते।
गदहों से थोड़ा कम या ज्यादा सोते हैं,
हे भाई! दिल्लीवाले ऐसे होते हैं।

दुनिया की फिलॉसफी को बकवास बताते,
खुद अपने ढंग से ये अपना गणित लगाते।
सिद्धान्तों के मैदां में जब ये आ जाते,

* असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

बात-बात में दुनिया भर की शैर कराते।
मानों जैसे लेलिन के ये खुद चेले हों,
बचपन उनके संग, जवानी में खेले हों।
समझो तुम! ये अंधों में कनवा राजा है,
मद्य-मांस की नयी संस्कृति के ख्वाज़ा हैं।
लोगों के दिल के विश्वास सदा खोते हैं,
हे भाई! दिल्ली वाले ऐसे होते हैं।

औरों को तो बस ये केवल मूर्ख समझते,
अपने जैसे ही उसको ये धूर्त समझते।
हर मुद्दे पर अपना ये भौकाल बनाते,
बिन पूछे ही अपनी ये औकात बताते।
राजनीति और धर्मनीति की बातें करते,
गाली देकर अपने घाव दिलों के भरते।
कहते फिर सीधे को उल्टा करना होगा,
आजादी का नया बिम्ब अब धरना होगा।
इनके वृहद् विचार बड़े ओछ होते हैं,
हे भाई! दिल्लीवाले ऐसे होते हैं।

सदा बुद्धि में जीते दूर हृदय से रहते,
महाबुद्धि का भार अकेले ही वे सहते।
पश्चिम की संस्कृति में ये सबको चलवाते,
भारत को तो पिछड़ेपन से ग्रसित बताते।
कई सभ्यताओं के रस से मंडित होते,
नये संस्कारों के खुद ये पंडित होते।
कस-सिगरेट, पान-गुटखा, तम्बाकू खाते,
करते मदिरापान मांस का भोग लगाते।
शिष्य भी इनके, इसी विरासत को ढोते हैं,
हे भाई! दिल्ली वाले ऐसे होते हैं।

हर मौसम, हर शोहरत को रंगीन बनाते,
अपनी ही बातों को ये फिर-फिर दुहराते।
छल-छदम्, ऐय्यारी, मिथ्या और मक्कारी,
इसकी ही इनके ऊदर पचती तरकारी।
ढोंग और कृत्रिमता के पुतले होते हैं,
कभी न पाकर ये अपना अवसर खोते हैं।
झाँसा देकर बड़ो-बड़ों को कहो मिलालें,
काम पड़े तो गर्दभ को भी बाप बना लें।
इनकी बातों में छिपे कई धोखे होते हैं,
हे भाई! दिल्ली वाले ऐसे होते हैं।

हर मत या सिद्धान्त वाद को खूब खँगालें,
कभी खाल से बाल, बाल से खाल निकालें।
पाप-गान से ही अक्सर ये मन बहलाते,
रहते निकट परन्तु दूर की कौड़ी लाते।
जीवन की गहराई में ये कम ही जाते,
पाँव ज़मी पर रहते कम, नभ में मँडराते।
कितना और बताऊँ, कोई पंथ नहीं है,
बड़ी-बड़ी बातें, जिनका कुछ अंत नहीं है।
अपने ज्ञान-गर्व में जो ऐंठे होते हैं,
हे भाई! दिल्ली वाले ऐसे होते हैं।

इनकी महिमा कम है, चाहे जितना कह लो,
चाहो अपना कुशल, कहें जो इनकी सुन लो।
जीवन को मस्ती से बस तुम जीते जाओ,
सूत्र यही इनका, इसको तुम भी अपनाओ।
सोचा महगू ने अपने मन को समझाया,
लुच्चों की चर्चा में अपना समय गँवाया।''
बाबा के विचार महगू के दिल में पैठे,
तिरपट बाबा कहते-कहते अब उठ बैठे।
''अपने सुर में अपनी राग स्वत: रोते हैं,
हे भाई! दिल्ली वाले ऐसे होते हैं।।''

शोषित समाज के प्रेरणास्रोत

- डॉ. राकेश कुमार राम

मानव के विकासवादी सभ्यता में यह हमेशा से होता आया है कि बलशाली व्यक्ति अपने से कमजोर दीन-हीन को रौंदते हुए अपनी सत्ता कायम की है। हारा हुआ व्यक्ति अपना सब कुछ गँवाने के बाद विजित व्यक्ति का गुलाम बन जाता है अथवा गुलाम बना लिया जाता है। फिर वही गुलामी कई सौ वर्षों तक उसको पीढ़ी-दर-पीढ़ी करनी पड़ती है। जिसमें उसको अपने इंसान होने का बोध ही नहीं रह पाता। नारकीय जीवन जीने की उसकी नियति बन जाती है। लेकिन समय एक जैसा नहीं रहता। कभी-कभी नियति के चक्र में अतिशय पिसते हुए वह दीन-हीन भी उठ खड़ा होता है और अपने दबे-कुचले समाज के लोगों के लिए लड़ते हुए अपना जीवन तक समाप्त कर देता है। भारतीय संदर्भ में कुछ ऐसे ही महापुरुष अवतरित हुए जो दलित, शोषित एवं पीड़ित मानव के लिए संघर्ष करते हुए प्रेरणा के स्रोत बने। यह अलग बात है कि ऐतिहासिक लीपापोती में विजित इतिहासकारों ने उनके अस्तित्व को स्वीकारा ही नहीं। लेकिन यह सब लोग जानते हैं कि सूरज की रोशनी को घोर से घनघोर काले बादल भी लम्बे समय तक ढके नहीं रह सकता। सूरज एक अन्तराल के बाद अपनी प्रखरता के साथ बादलों को चीरते हुए सबके सामने आता है। कुछ ऐसे ही सवर्ण मानसिकता रूपी काले बादल ने दलित प्रेरणास्रोत रूपी रोशनी को रोकने की कोशिश की, लेकिन उन्हें जितना रोकने की कोशिश की गयी, वे उतने ही प्रखरता के साथ सबके सामने आते गये। आज गुरु रविदास, कबीरदास, ज्योतिबाफुले, गाडगे बाबा, नारायण गुरु, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, स्वामी अछूतानन्द, सावित्री बाई फुले, रमाबाई एवं झलकारी बाई को कौन नहीं जानता।

काशी के मांडुरगाँव (अब मंडुआडीह) में जन्में रविदास की महिमा सब जानते हैं। वे पैतृक कार्य चमड़े के जूते जरूर बनाते थे, लेकिन उनकी संतता उच्चकोटि की थी। इसीलिए नागरमल, मीराबाई, सिकन्दर लोदी एवं चित्तौड़ की रानी झालीबाई भी उनकी शिष्या बनी। जब अछूतों पर पढ़ाई की पाबन्दी थी और दलित समाज को ज्ञान की सख्त जरूरत थी, लेकिन सवर्ण समाज हेतु प्रचलित शिक्षा की भाषा का प्रयोग नहीं कर सकने के कारण, जब वे लाचार थे तब संत रविदास ने 'गुरुमुखी लिपि' का निर्माण किया। जिसका विस्तार आगे चलकर सिख गुरुओं ने किया।

उन्होंनें खुद को 'खलास चमारा' घोषित किया और घृणा करने वालों को करारा जबाब दिया कि चाम से कौन अलग है-

'बता रे पंडित ज्ञानी, कौन चाम से न्यारा।
चाम का ब्रह्मा, चाम का विष्णु, चाम का सकल पसारा।।

बनारस में ही जन्में 'कबीर' की ख्याति आज पूरे विश्व में है। यह अलग बात है कि यहीं कबीरदास कभी रामानन्द के शिष्य बनना चाहते थे, परन्तु रामानन्द को यह स्वीकार नहीं था। कबीर की जाति यहाँ आड़े आ रही थी, जिसका आगे चलकर जोरदार खण्डन करते हुए उन्होंने कहा था-

माटी एक सकल संसारा, बहु विध मांडे घड़े कुम्हारा।
एक बंद एक मल मूतर, एक चाम एक गूदा।
एक जाते से सवै उत्पन्न कौन ब्राह्मण कौन सूदा।।

कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष करने वाले ज्योतिबाफूले का जन्म 11 अप्रैल 1827 को पूना शहर में हुआ था। वे जन्म से ही जातीय कुरीतियों में पिसते रहे। परिणामस्वरूप युवावस्था तक आते-आते ब्राह्मणशाही के खिलाफ आन्दोलन शुरु किया, जिसे 'सावजी-भट्टजी' विरोधी आन्दोलन भी कहा जाता है। इनके द्वारा रचित नाटक 'गुलामागेरी' आज के दलित विमर्श का मानक है।

* असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, डी. ए. वी. पी. जी. कालेज, वाराणसी

प्रथम लोकशिक्षक, सतत सेनानी, गाडगे बाबा का जन्म 23 जनवरी 1976 को अमरावती के शेणगांव में हुआ था। उन्होंने भी आजीवन जातीय व्यवस्था के खिलाफ आन्दोन किया। लोगों को बताया कि आंडबरों से दूर रहकर पूजा-पाठ से छुटकारा पाओ, देवी-देवताओं के चक्कर में मत पड़ो। इनसे कुछ मिलने वाला नहीं है। अगर कुछ प्राप्त होगा तो शिक्षा से प्राप्त होगा। शिक्षा ही वह कुंजी है जो गुलामी की जंजीरों में लगे तालों को खोल सकती है।

भारत में अनेकों दलित क्रांतिवीर पैदा हुए हैं, जिन्होंने अपने साहस एवं वीरता की छाप छोड़ी है। लेकिन मनुवादी, इतिहासकारों ने महत्व न देकर उन्हें छुपाने की कोशिश की। वीरांगना झलकारी बाई उन्हीं में से एक हैं, जो झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के प्रति सच्ची मित्रता, मातृभूमि की रक्षा और अंग्रेजों से उसकी स्वतंत्रता के लिए लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गयी। इतिहास में यदि इनका सही मूल्यांकन होता तो 'सुभद्राकुमारी चौहान' की प्रसिद्ध कविता 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' न होकर 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झलकारी बाई थी' होता।

पासी वंश भी इतिहास के पन्नों से गायब दिखायी देता है। यद्यपि कि इस वंश में 'सुहेलदेव' जैसे योग्य और बलशाली सम्राट थे। ये आधुनिक बहराईच जनपद (उत्तर प्रदेश) के राजा थे। यह अलग बात है कि आज कुछ दलित युवकों के प्रयास से उनकी बहादुरी की चर्चाएँ की जाती हैं।

भारत की प्रथम पौढ़ शिक्षित महिला के रूप में प्रतिष्ठित सावित्री बाई फुले को शायद ही कोई जानता हो। लेकिन सबसे पहले इन्होंने ही बालिका शिक्षा की आवाज बुलन्द की थी। सौभाग्य से इन्हें ज्योतिबाफुले जैसा पति भी प्राप्त था। इनके सहयोग से साबित्री बाई फुले ने दलित समाज की बालिकाओं को शिक्षा देकर दलित समाज के जीवन से अज्ञान और अविद्या का अंधकार दूर करने का प्रयास किया।

डॉ. अम्बेडकर के विषय में आज कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं है। इनका जीवन संघर्ष ही इनका दास्तान है। दुर्भाग्य से इन्हें आज भी नकारने की कोशिश की जाती है। कभी उनकी मूर्ति तोड़कर तो कभी मनुवादी समाज का हवाला देकर। आज बहुत से मनुवादी यह कहते पाये जाते हैं कि अम्बेडकर ने जो कार्य किये, जो संघर्ष किये, वे केवल दलितों के लिए किए। लेकिन सत्यता यह है कि उन्होंने किसानों, मजदूरों तथा खेतिहर मजदूरों के लिये भी कार्य किये थे।

दलित प्रेरणा के स्रोत ये, वे नाम हैं, जिन्हें चाहकर भी नहीं दबाया जा सका, लेकिन इन्हीं जैसे प्रेरणास्रोतों में गुरु घासी दास, गोपाल बुवा बलंगकर, सामाजिक क्रांतिकारी बिरसा मुंडा, कुमाउँ केसरी, खुशीराम, मानवतावादी नारायण गुरु जी, छत्रपति शाहू जी महाराज, आधुनिक युग के पैगम्बर पेरियार ई. वी. रामास्वामी, आत्माराम लक्ष्य, स्वामी अछूतानन्द, रमाबाई, शम्बर नरेश, वीरांगना ऊदा देवी, वीरांगना महावीरी देवी, अवंतीबाई लोधी, वीरांगना नागा रानी, अमर शहीद रामपति, शहीद उपइया, बॉके, बीरा तथा गंगाबख्श आदि नाम भी है। जिनका इतिहास में कहीं नाम नहीं है। आज आवश्यकता है इन दलित महापुरुषों, संतों, वीरांगनाओं के साथ न्याय करने की, जिसे दलित लेखक अथवा चिंतक कर रहा है, वहीं कर भी सकता है क्योंकि ब्रह्मा के मुख से पैदा जन आज भी अपने थुलैपन से मुक्त नहीं हो पायें हैं।

सुभाषित वचनावली

'' जो भाषा कठोर हो, दूसरों को दुःखकर हो, भले ही वह सत्य क्यों न हो, नहीं बोलना चाहिए, क्योंकि उससे पाप होता है।

- महावीर

'' मन को जीतने के लिए नैतिक जीवन और सदाचार अत्यन्त आवश्यक हैं। अनैतिक जीवन से मन कभी शान्त नहीं हो सकता।

- गौतम बुद्ध

Social Media : A New Paradigm of Communication

- Dr. Sangeeta Jain

The pace of changes transforming global society is unprecedentedly rapid in the era of Information Communication Technology. People of the whole world can connect with one another just at the click of the mouse or by touching keypad. This click-of-mouse and just-touch-key-pad world of communication has created a new concept of media i.e.'Social Media'. This high-speed innovative social media has really vivified the oft-quoted phrase 'keep in touch' as everyone is within the connectivity circuit created by new 'social media'.

Defining Social media one can say that it is the ground-breaking combination of society and media by using mobile and www technologies for social interaction, for dissemination of ideas, for brand marketing, for political pamphleteering giving equal opportunities of interaction to user and creator/presenter both. It is different from traditional print and electronic media with a lean faded voice of the readers or audience and almost pro-governing-authority-sided views and communication. This ubiquitous form of social media is so popular that from 'gud moning sir' sms to smart classes of university and school teaching, from Facebook to Orkut and Twitter, from Youtube to Wikipedia there are thousands of blogs and sites for networkers to see a novel face of Global communication.Wikipedia- the most popular information providing site defines Social media as “the use of web-based and mobile technologies to turn communication into interactive dialogue.” Andreas Kaplan and Michael Haenlein also define social media as "a group of Internet-based applications that build on the ideological and technological foundations of Web 2.0, which allows the creation and exchange of “user-generated-content”. People of the world are coming closer to share opinions, genuine information, putting forth consumer and user generated content across the world and mobilizing people's force to represent their choices creating social, political and economic transformations.

Thus the invention of social media has proved to be the biggest move since the Industrial Revolution. Statistics show that Twitter has almost 18 million new users every day, and Facebook actually gets more traffic than Google does in a day. This represents a whole new world and new opportunities for people and businesses. We can actually think of it as a revolution in itself creating many more macro and micro revolutions.

A New Paradigm

Social media has radically changed the concept of communication. Just few years

*Assistant Professor & Head Department of English, DAV PG College, Varanasi

back , communication took place through mail, on a land-line telephone, and in person. Of late it is through text messages; voice messages; instant messenger; emails; talk through headphones, cell phones, and online video phones; and, of course, interact through the Internet where the excess of social media tools has relabeled communication. This redesigned communication model has an enormous effect on society. Communication has changed from apparent monologue to real multilateral dialogue, discourse and discussion from personal to political topics. The ubiquitous one way communication method - teacher to student, leader to follower, business-to-customer and business-to-business—have been reconstituted by a more vigorous multidimensional communication model. That model is collectively called social media giving birth to Revolution 2.0.

Some Facts about Impact

Some of the enlightening facts about the reach of social networking sites and media tools, in developing relationships, spreading education, taking off business, generating and facilitating employment, floating advertisement, creating and enhancing credibility can be construed from the data mentioned below :

Reach :

1. Social Media has surpassed porn as the #1 activity on the Web

2. Years to Reach 50 millions Users: Radio (38 Years), TV (13 Years), Internet (4 Years), iPod (3 Years)…Facebook added 100 million users in less than 9 months…iPhone applications hit 1 billion in 9 months.

3. The #2 largest search engine in the world is YouTube

4. Wikipedia has over 13 million articles…some studies show it's more accurate than Encyclopedia Britannica…78% of these articles are non-English

5. There are over 200,000,000 Blogs

6. 54% = Number of bloggers who post content or tweet daily

7. Because of the speed in which social media enables communication, word of mouth now becomes world of mouth

8. Facebook USERS translated the site from English to Spanish via a Wiki in less than 4 weeks and cost Facebook $0

Relatioship

9. 1 out of 8 couples married in the U.S. last year met via social media

10. If Facebook were a country it would be the world's 4th largest between the United States and Indonesia (note that Facebook is now creeping up – recently announced 300 million users)

11. The fastest growing segment on Facebook is 55-65 year-old females

12. Ashton Kutcher and Ellen Degeneres (combined) have more Twitter followers than the population of Ireland,

Norway, or Panama. Note I have adjusted the language here after someone pointed out the way it is phrased in the video was difficult to determine if it was combined.

13. 80% of Twitter usage is outside of Twitter…people update anywhere, anytime…imagine what that means for bad customer experiences

14. What happens in Vegas stays on YouTube, Flickr, Twitter, Facebook

15. 25% of Americans in the past month said they watched a short video…on their phone

Education

16. 1 in 6 higher education students are enrolled in online curriculum

17. Generation Y and Z consider e-mail passé…In 2009 Boston College stopped distributing e-mail addresses to incoming freshmen

18. According to Jeff Bezos 35% of book sales on Amazon are for the Kindle when available

19. 24 of the 25 largest newspapers are experiencing record declines in circulation because we no longer search for the news, the news finds us.

Employment

20. % of companies using LinkedIn as a primary tool to find employees….80%

21. Successful companies in social media act more like party planners, aggregators, and content providers than traditional.

22. Successful companies in social media act more like Dale Carnegie and less like David Ogilvy Listening first, selling second

23. 25% of search results for the World's Top 20 largest brands are links to user-generated content

24. 80% of companies use social media for recruitment

Business

25. 34% of bloggers post opinions about products & brands

26. People care more about how their social graph ranks products and services than how Google ranks them

27. 78% of consumers trust peer recommendations

28. Only 14% trust advertisements

29. Only 18% of traditional TV campaigns generate a positive ROI

Future

30. In the near future we will no longer search for products and services they will find us via social media advertiser

31. More than 1.5 million pieces of content (web links, news stories, blog posts, notes, photos, etc.) are shared on Facebook…daily.

So imagining the grip of social media in future is not difficult to presume.

Social Media Sites

There are thousands of social networking sites according to their purpose and function, ranging from matrimonial sites to travel sites to healthcare sites. Below is the list mentioning only exemplary few of them :

Name	Description/Focus	Date launched	Registered users	Registration	Global Alexa[1] Page ranking
Academia.edu	Social networking site for academics/researchers	September 2008	211,000	Open	9,294
Advogato	Free and open source software developers	1999	13,575	Open	139,873[
aNobii	Books	2006		Open	11,992
aSmallWorld	European jet set and social elite world-wide	March 2004	550,000	Invite-only	5,978
AsianAvenue	A social network for the Asian American community	1997		Open	
Athlinks	Running, Swimming	2001	139,458	Open	75,362
Audimated.com	Independent music	2010		Open	486,598
Avatars United	Online games	March 2008		Open	9,641,523
Badoo	General, Meet new people, Popular in Europe and Latin America	2006	86,000,000	Open to people 18 and older	128
Bebo	General	July 2005	117,000,000	Open to people 13 and older	2,148
BIGADDA	Indian Social Networking Site	August 2007	3,000,000	Open to people 16 and older	11,684
Biip.no	Norwegian community	June 1, 2005	430,000	Requires Norwegian phone number	65,176
BlackPlanet	African-Americans	September 1, 1999	20,000,000	Open	2,350
Blauk	Anyone who wants to tell something about a stranger or acquaintance.	2010		Open to people 13 and older.	937,454
Blogster	Blogging community	November 24, 2005	85,579	Open	23,485
Bolt.com	General	1996		Open	111,069
Buzznet	Music and pop-culture	2005	10,000,000	Open	1,132
CafeMom	Mothers	December 2006	1,250,000	Open to moms and moms-to-be	4,333
Cake Financial	Investing	17 September 2007		Open	481,922

Care2	Green living and social activism	1998	9,961,947	Open	2,594
CaringBridge	Not for profit providing free websites that connect family and friends during a serious health event, care and recovery.		9,500,000	Open to people 18 and older	4,198

The list continues for more than 15 pages……. (Source: Wikipedia)

The presence of more than thousands of social media sites and their concerned subjects reveal that they have encyclopedic range touching and dealing with maximum possible subjects thereby bringing drastic big and small changes in human life.

Major Social Media Tools

There are a wide range of social media tools which netizens can use to be more interactive — to communicate and exchange information. Businesses are increasingly using these tools because they offer more cost-effective ways to achieve their goals.

Few of them are :

Blogs - A blog is a website where entries or posts are listed in chronological order. Blogs commonly allow for readers to provide comments which are posted along with the original entry.e.g. Blogger.com WordPress.com, Typepad.com

Microblogging – This is a form of blogging where users provide brief period updates (often on a frequent basis throughout the day) and publish them on microblogging platforms. You've probably heard of Twitter, which is a Microblogging tool. Microbloggers can submit their updates via the web itself or via text messages, instant message, or even email. Twitter, Tumblr,Jaiku ,Pownce

RSS – It is a syndication format that allows websites and blogs to distribute their updated, dynamic content as feeds to users. Instead of having to visit the website, users can sign up for the feed provided by the website or blog and using an RSS reader or aggregator (like Google Reader explained below), access the feed. Users can sign up for as many feeds from different websites as desired and then access and manage those feeds all at once using their RSS reader. Bloglines (web-based)Google Reader (web-based)Newsgator (Outlook-based) Live Bookmarks (for Firefox Browser users).

Photo Sharing - Photo sharing tools allow users to upload and post their photographs online to share them with other users. Flickr, Shutterfly ,Google's Picasa

Podcasts - A Podcast is a digital audio that is distributed via the Internet for playback on a user's computer or portable media device – a mp3 player such as an iPod.Podcast Alley,DigitalPodcast, Allpodcasts.com

Social News and Bookmarking - Social bookmarking allows web users to save, organize and share their bookmarks of web pages on the Internet (vs. their own computers). Social news sites allow users to submit web pages and articles and have other users vote on them with the # of votes

determining which articles are presented on the social news site. Delicious.com, Digg.com , Stumbleupon.com, Reddit

Social Networking Social networking services – Facebook and MySpace being the most well-known- are websites that allow online users to connect and share information with other online users.

Video Sharing – It allows users to upload and share videos to video sharing website such as Youtube. Other users can watch the videos, comment on them, share them with other users and even embed them on their own websites and blogs. Youtube, ViddlerBlip.TV

Wikis - A wiki is a collaborative website that allows users to contribute to and edit the content on the website. Wikipedia is a well-known wiki. Wikifarms host multiple wikis and provide tools for users to create their own wikis. Wikipedia.org (the best known wiki) Wetpaint (Wikifarm), Wikia (Wikifarm)

Popular Examples

One of the most successful Matrimonial services is Shaadi.com, which has been world-renowned since 1996 and has over 20 million members.

shaadi.com®
World's Largest Matrimonial Service

bharat matrimony

Bharat Matrimony is another highly successful portal that functions in the same way.

Facebook and Twitter

Many of these websites have integrated their own Facebook and Twitter links, allowing members of the matrimonial sites to easily 'like', and 'follow' updates. These close links with other Social networks allow for potential relationships to be connected further, whether its Facebook chat, messaging, befriending and following etc. They all help to bring people together and in this case may develop into a potential marriage proposal.

Television Advertisement for one of the Social Media - Networking portals :
BharatMatrimony Ad – Guy Meets Girl

This list of social media tools and sites could probably run on for paragraphs, and today's technology changes so rapidly that there is no field left untouched by the intervention of these tools radicalizing the age-old system be it family web, industries, corporations and news media and other man made socio-economic and socio-political structures. A communication revolution has revolutionized the structure and system of human institutions. In the last few years, social media has stimulated millions over politics, produce as many industries as it has smashed, and offer an abundance of visual and audio entertainment.

शंकराचार्य एक अद्भुत व्यक्तित्व

–डॉ. सरिता रानी

शंकराचार्य भारतीय दर्शन के वह प्रखर भाष्कर हैं, जिन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा एवं निरन्तर गम्भीर चिन्तन द्वारा दार्शनिक विचारधारा को समृद्ध कर उसे एक गति प्रदान की। उनकी विलक्षण आलोचनात्मक तथा सृजनात्मक प्रतिभा चिन्तन के इतिहास में अपना शाश्वत मूल्य रखती है। उन्होंने अपने अद्वैतवादी चिन्तन के द्वारा भारतीय दर्शन को समृद्धि के उच्च शिखर पर पहुँचा दिया।

शंकराचार्य का जन्म नम्बूदरी ब्राह्मण कुल में ७८८ ई. में हैं। इनका जन्म स्थान केरल प्रान्त के कालड़ी नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता श्री शिवगुरु वेदज्ञ ब्राह्मण थे। शंकर के पिता का देहान्त उनके शैशवकाल में ही हो गया था। उनकी माता ने उनका पालन पोषण किया। पाँच वर्ष की अवस्था में ही उनका उपनयन संस्कार कर दिया गया। शंकर जन्म से ही प्रतिभाशाली थे। इन्होंने सात वर्ष की आयु में ही वेदों का अध्ययन किया तथा आठ वर्ष की आयु में वे सन्यासी हो गये। बाद में वे गौड़पाद के शिष्य श्री गोविन्दपाद के शिष्य बने। सोलह वर्ष की अवस्था में उन्होंने ब्रह्मसूत्र, उपनिषद, गीता पर भाष्य लिखा और ३२ वर्ष की अल्पायु में उनका निर्वाण हो गया। इनके सम्बन्ध में प्रसिद्ध लोकोक्ति है–

अष्टवर्षे चतुर्वेदी द्वादशे सर्वशास्त्रवित्।
षोडशे कृतवान भाष्यं डात्रिशेमुनिरम्यगात्।।

३२ वर्ष की अल्पायु में ही इन्होंने समग्र औपनिषदिक विचारधारा को ही सूत्रबद्ध एवं व्यवस्थित नहीं किया बल्कि दार्शनिकों के लिये दिशा-निर्देशन का भी कार्य किया। वेदान्त दर्शन पर उनका अत्यधिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। वेदान्त को शंकर दर्शन का पर्यायवाची माना जाता है। उनके विचारों में चिन्तन की जो प्रौढ़ता व गम्भीरता है वह आज भी दार्शनिकों का पथ प्रदर्शन कर रही है। शंकर ने अपने ग्रन्थों में स्वयं को गोविन्द के शिष्य के रूप में प्रस्तुत किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वेदान्त के गूढ़ सिद्धान्तों की शिक्षा उन्हें गोविन्दपाद से ही मिली। वे प्रज्ञावान तथा असामान्य प्रतिभा के तेजस्वी व्यक्ति थे। जीवन के आरम्भ में ही उन्होंने अपने नीर-क्षीर विवेक का दृष्टान्त प्रस्तुत किया।

शंकराचार्य ने वर्णाश्रम धर्म के संरक्षण के लिये चार मठ स्थापित किये थे - बदरिकाश्रम, पुरी, द्वारिका और शृंगेरी। बदरिकाश्रम में त्रोटक को, पुरी में पद्मपाद, शृंगेरी में सुरेश्वर को और द्वारिका में हस्तमालक को उन्होंने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। तभी से इन मठों के अध्यक्षों को भी जगत् गुरु शंकराचार्य कहा जाने लगा। शंकराचार्य को उनसे भिन्न करने के लिये आद्य शंकराचार्य कहा जाता है।

शंकराचार्य का जीवन निरन्तर चलने वाली सत्यानुसंधान की तीर्थयात्रा थी। उन्होंने अपने तप एवं चिन्तन द्वारा जिस परमसत्य का ज्ञान प्राप्त किया उस सत्य का उन्होंने अद्भुत साहस व क्रियाशीलता के साथ प्रचार किया। शंकराचार्य के समय दक्षिण भारत में बौद्ध धर्म पतन्नोन्मुख था तथा वैदिक धर्म अपने वाह्य आडम्बर तथा विविध क्रियाकलापों के कारण अपना मूल स्वरूप खोता जा रहा था। शैव मतावलम्बी भक्त अटियार तथा वैष्णव मतावलम्बी भक्त आलवार ईस्वर भक्ति का प्रचार कर रहे थे। कुमारिल भट्ट तथा मण्डन मिश्र ने कर्मकाण्ड के अन्दर ही मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। दक्षिण भारत में पल्लव साम्राज्य धार्मिक जागृति को बढ़ावा दे रहा था। प्रारम्भिक पल्लववंशी बौद्ध मतावलम्बी थे किन्तु उनके पीछे आने वाले वैष्णव मतावलम्बी थे और सबसे अर्वाचीन शैव मत को मानने वाले थे। बौद्ध धर्म की त्यागपरक प्रवृत्ति के

* असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शन विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

प्रतिक्रिया स्वरूप ईश्वरवाद की भक्ति परक प्रवृत्ति का उदय हुआ। ऐसे में शंकराचार्य ने सनातन धर्म के सुधार व परिष्कार के लिए आगे आये। वैदिक सत्य के गहन चिन्तन द्वारा वे उसे सार्वभौम तत्व के रूप में प्रस्तुत कर अद्वैतवाद की स्थापना की। उन्होंने ब्रह्मजीव के एकत्व के प्रतिपादन को ही मोक्ष का स्वरूप बताया। वे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के मालिक थे। वे दार्शनिक भी थे, कवि भी, ज्ञानी भी, संत वैरागी तथा सुधारक भी। एक उच्च कोटि के विचारक के रूप में उन्होंने दर्शन की नयी व्याख्या की। वैदिक दर्शन की मौलिकता को बनाये रखते हुये उसकी नवीन व्याख्या शंकराचार्य की महत्वपूर्ण देन कही जा सकती है। वैसे शंकराचार्य के नाम से अनेक ग्रन्थ प्रचलित है, किन्तु उनमें से केवल तेरह ग्रन्थ ही उनके द्वारा रचित है। उनमें से शारीरक भाष्य, गीता भाष्य, उपदेश साहसी

तथा दस उपनिषदों पर भाष्य ही उनकी मूल कृति मानी जाती है। शंकराचार्य के ग्रन्थों को तीन प्रस्थानों में विभक्त किया जाता है, श्रुति प्रस्थान, स्मृति प्रस्थान और न्याय प्रस्थान। उपनिषदों पर लिखे गये उनके भाष्य श्रुति प्रस्थान, गीता भाष्य स्मृति प्रस्थान व शारीरक भाष्य न्याय प्रस्थान कहलाता है। शंकराचार्य ने जिस अद्वैतवाद की स्थापना की उसके तीन श्रोत है उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र व भगवद्गीता। इन तीनों प्रस्थानों की एकवाक्यता अद्वैतवाद है। यहीं शंकराचार्य का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है। अद्वैतवाद की स्थापना कर शंकराचार्य ने भारतीय धर्म एवं दर्शन को एक नई दृष्टि प्रदान की।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- बच्चों, धर्म का रहस्य आचरण से जाना जा सकता है, व्यर्थ के मतवादों से नहीं। सच्चा बनना तथा सच्चा बर्ताव करना, इसमें ही समग्र धर्म निहित है। जो केवल प्रभु - प्रभु की रट लगाता है, वह नहीं, किन्तु जो उस परम पिता के इच्छानुसार कार्य करता है वही धार्मिक है। यदि कभी-कभी तुमको संसार का थोड़ा बहुत धक्का भी खाना पड़े, तो उससे विचलित न होना, मुहूर्त भर में वह दूर हो जायगा तथा सारी स्थिति पुन: ठीक हो जायगी।
- साहसी होकर काम करो। धीरता और स्थिरता से काम करना - यही एक मार्ग है। आगे बढ़ो और याद रखो धीरज, साहस, पवित्रता और अनवरत कर्म। जब तक तुम पवित्र होकर अपने उद्देश्य पर डटे रहोगे, तब तक तुम कभी निष्फल नहीं होओगे - माँ तुम्हें कभी न छोड़ेगी और पूर्ण आशीर्वाद के तुम पात्र हो जाओगे।
- बच्चों, जब तक तुम लोगों को भगवान तथा गुरु में, भक्ति तथा सत्य में विश्वास रहेगा, तब तक कोई भी तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकता। किन्तु इनमें से एक के भी नष्ट हो जाने पर परिणाम विपत्तिजनक है।
- महाशक्ति का तुममें संचार होगा - कदापि भयभीत मत होना। पवित्र होओ, विश्वासी होओ, और आज्ञापालक होओ।
- बिना पाखण्डी और कायर बने सबको प्रसन्न रखो. पवित्रता और शक्ति के साथ अपने आदर्श पर दृढ़ रहो और फिर तुम्हारे सामने कैसी भी बाधाएँ क्यों न हो, कुछ समय बाद संसार तुमको मानेगा ही।
- ईर्ष्या तथा अहंकार को दूर कर दो - संगठित होकर दूसरों के लिए कार्य करना सीखो।

भारतीय नारी उत्थान के अग्रदूत ज्योतिराव फुले

-डा. विनोद कुमार चौधरी

भारतीय नारी के समस्त अधिकार छीन लेने से उसकी जो दयनीय स्थिति हो गई थी, उससे उन्हें उबरने एवं समानता दिलाने के प्रयासों की कड़ी में अत्यंत महत्त्वपूर्ण नाम सामाजिक क्रांति के प्रणेता महामना ज्योतिराव फुले का आता है। उनका जीवन एक कर्मशील और कर्मवीर क्रांतिकारी का जीवन था भारत की नारियों को सम्माजनक स्थिति दिलाने के लिए उन्होंने वास्तव में ही ऐतिहासिक कार्य किया।

महाराष्ट्र में अधिकांश सामाजिक समस्याएँ स्त्रियों से सम्बन्धित थी। उच्च कुलीन ब्राह्मणों में विधवा विवाह निश्चित नहीं थे। बाल विवाह, वि ाम विवाह, जरठ बाला विवाह की प्रथाएँ आम थी। विधवाओं का केशवपन किया जाता था। उन्हें किसी भी शुभकार्य में उपस्थित रहने की मनाही थी। श्री बालशास्त्री जांभेकर, श्री गोविंद विट्टल कुंटे ने विधवा विवाह के पक्ष में प्रथमतः आवाज उठाई। श्री जांभेकर जी को महाराष्ट्र के समाज सुधारकों का कुल पुरुष कहना चाहिए। 1856 में विधवा विवाह का कानून बना। लेकिन विधवाओं से विवाह करने की हिम्मत इने–गिने लोगों ने ही दिखाई।

ज्योतिबा फुले ने विधवा विवाह की समस्या को उठाया और विधवा विवाह को प्रोत्साहन देने में लग गए। विधवा विवाह की समस्या मात्र ब्राह्मणों एवं कतिपय उच्च जातियों तक ही सीमित थी। इन विधवाओं की दुर्दशा और इनसे जन्मे अवैध बच्चों को देखकर वे काफी दुखी होते थे। विधवाओं द्वारा भ्रूण हत्या पर तो वे काफी परेशान हो जाते थे। अतः उन्होंने विधवा विवाह कराने प्रारंभ कर दिए। 8 मार्च 1860 को पूना के गोखले बाग में एक शैनवी ब्राह्मण युवती का उसी की जाति के एक विधुर के साथ विवाह करवा दिया गया।

यही नहीं इन विधवाओं से जो अवैध सन्तानें उत्पन्न होती थी, उनके लिए भी ज्योतिबा ने एक ऐसा अनाथालय बनवाया, जहां विधवाएं चुपचाप आकर प्रसव कर सकती थीं और अपने नवजात शिशु को वहां पालन–पो ाण के लिए छोड़ जाती थीं। इस संबंध में ज्योतिबा ने पर्चो भी छपवाए थे। पर्चों पर लिखा था–'' हे तरुण विधवाओं ! यहां आओ और पूर्ण सुरक्षा एवं गुप्तता के साथ अपने बच्चों को जन्म दो।''अनाथालय उनकी देखभाल करेगा।

बाल विवाह बन्द हो इसीलिए बैराम जी मलवारी, न्या रानाडे, श्री माधव राव कुंटे, श्री गोपाल गणेश आगरकर ने कोशिश की। वे चाहते थे कि कानून से विधवा विवाह बन्द किये जाएँ। जनमत विधवा विवाह के पक्ष में भी नहीं थी और बाल–विवाह न करने के पक्ष में भी नहीं। इन सभी सुधारकों का घोर विरोध हुआ। कुछ वर्गों में पर्दा प्रथा का चलन था। महाराष्ट्र के गोवा तथा आस–पास के बुराइयों से सभी को मुक्त करने की दृष्टि से उसे शिक्षा देना समाज सुधारकों को अत्यावश्यक लगा। श्री ज्योतिबा फूले से महर्षि कव तक कई कार्यकर्ताओं ने इस दिशा में उल्लेखनीय काम किया।

अपने 40 वर्ष से कुछ अधिक लम्बे जीवन में जोतिबा ने ऐसे अनेक काम किए जिन्हें पहले किसी भारतीय ने नहीं किया था। वे प्रथम भारतीय थे जिन्होंने सन् 1848 में अनुसूचित जातियों के बालक–बालिकाओं के लिए दो पाठशालाएं खोलीं। वहां बच्चे–बच्चियों की पढ़ाई तो मुफ्त होती ही थी उन्हें पोशाक और पाठ्य सामग्रियां भी और मुफ्त दी जाती थीं इन पाठशालाओं के सफल संचालन पर जोतिबा ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। उनकी पत्नी सावित्रीबाई, जो भारतीय नारियों में प्रथम सामाजिक कार्यकर्ती थी, उन स्कूलों में अवैतनिक पढ़ाती थी। अछूतों के लिए प्रथम पुस्तकालय खोलने का श्रेय भी उन्हीं को है।

दलित जातियों की स्थिति सुधारने के लिए जोतिबा ने कई अन्य कार्य किए। उनकी समस्याओं की ओर सरकार और जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए उन्होंने सन् 1885 में कैफियत शीर्षक से एक पुस्तक लिखी। उन्हीं में से अनेक कर्मठ कार्यकर्ता भी तैयार किए। जोतिबा के सहयोगियों के नेतृत्व में बम्बई और अलीबाग नगर पालिकाओं के महार और भंगी समाज के मजदूरों ने जून, जुलाई, और अक्टुबर, सन् 1889 में हड़ताल की और सेवामुक्त हड़ताली नेता की पुनः बहाली की वे अपनी मांग मनवाने में सफल हुए।

इसी दौरान ज्योतिराव की उनके मित्र सदाशिव बल्लान गोवंडे से भेंट हुई, जो अहमदनगर में न्यायाधीश

*असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,डी.ए.वी.पी.जी.कॉलेज, वाराणसी

कार्यालय में नौकरी कर रहे थे। उन्होंने उन्हें अहमदनगर बुलाया। ज्योतिराव ने वहॉ अमरीकन मिशन द्वारा संचालित कन्या ाला को देखा। यह स्कूल कुमारी फरार नाम की एक मिशनरी महिला चलाती थी। ज्योतिराव इससे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने देखा कि विदेशी लोग हमारे देश के लोगों के उत्थान के लिए कितना काम कर रहे हैं। उन्होंने पूना लौटकर लड़कियों के लिए ऐसी ही पाठशाला खोलने का निर्णय लिया जिसके परिणाम स्वरूप 15 मई 1848 को कन्या पाठशाला की स्थापना की गई। ज्योतिराव फुले की प्रथम पाठशाला की स्थापना बुधराव पेठ के एक मकान में 1 जनवरी 1848 को हुई थी।

उनके द्वारा कन्याओं के लिए पाठशाला चलाना भला सनातनियों को कैसे सुहाता ? उनके अनुसार यह हिन्दू धर्म पर सीधा–सीधा आक्रमण था। उन्होंने इन पाठशालाओं को बन्द कराने के लिए ज्योतिबा के पिताजी पर दबाव डाला। पहले उन्हें बहकाने का प्रयास किया। फिर उन्हें धमकियां भी दी गई। इन धमकियों से ज्योतिबा डरे नहीं, किंतु उनके पिताजी ने समाज से विद्रोह करना उचित नहीं समझा और उन्हें घर से निकाल दिया।

अपनी कन्या पाठशालाओं में पढ़ाने के लिए उन्हें शिक्षक की आवश्यकता महसूस हुई। कोई तैयार नहीं हुआ, तो उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई को घर में पढ़ाना प्रारंभ किया और कन्याओं को पढ़ाने के लिए तैयार कर लिया। सावित्रीबाई जिस रास्ते से होकर गुजरती थी, लोग उन पर कचरा, कीचड़, कंकड़, पत्थर, गोबर आदि फेंकते थे। उनके चरित्र पर लांछन लगाते थे, किंतु इससे सावित्रीबाई बिलकुल नहीं घबराईं। वे थोड़ा रुक कर स्वयं को साफ करके कहतीं–''मैं अपना कर्त्तव्य कर रही हूं। तुम अपना कर्त्तव्य करों।''भारत में स्त्री शिक्षा हेतु कार्य करने वाली यह पहली नारी थीं। इससे पूर्व कोई स्त्री सार्वजनिक कार्यों में भाग नहीं लेती थी। इसीलिए उन्हें नारी शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाली प्रथम नारी होने का गौरव प्राप्त हैं। नारी शिक्षा का मार्ग सावित्रीबाई ने ही प्रशस्त किया था। इस प्रकार वे भारत की प्रथम अध्यापिका बनीं।

पिता द्वारा घर से निकाले जाने के बाद ज्योतिराव फुले को कुछ समय के लिए स्कूल बंद करने पड़े और अपनी आजीविका चलाने हेतु व्यवसाय में लगना पड़ा। कुछ समय बाद उनकी स्थिति सुधरी और उन्होंने अपनी पाठशालाओं को पुनः प्रारंभ करने की सोची। मजबूरी अवश्य थी, किन्तु वे अपना लक्ष्य भूले नहीं थे। इसी दौरान उन्होंने काफी स्त्रियों को शिक्षित करके अध्यापिका बनने लायक बना दिया था, ताकि उन्हें शिक्षिकाओं की कमी नहीं आए।

पाठशालाओं का पुनः खुलना एक महान उपलब्धि थी। पिछले ढाई हजार वर्षों में भारत के इतिहास में यह पहला अवसर था, जब समाज के सबसे निचले स्तर की कन्याओं के लिए शिक्षा के द्वार खोले गए थे। यह अभूतपूर्व परिवर्तन लाने का अदम्य साहस ज्योतिबा फुले ने कर दिखाया था। भारत के इतिहास में आधुनिक भारत की सामाजिक क्रांति के प्रणेता के रूप में उनका नाम सदा ही अमर रहेगा।

कन्या पाठशालाओं का प्रारंभ केवल आठ छात्राओं से हुआ था, किन्तु शीघ्र ही यह संख्या बढ़कर 48 तक पहुंच गई। 3 जुलाई सन् 1851 को एक और बालिका विद्यालय की स्थापना की गई। अब तक उन्होंने एक पाठशाला प्रबंधन समिति भी बना ली थी। इस प्रबंध समिति ने 7 सितंबर 1851 में एक और बालिका विद्यालय की स्थापना की। तत्पश्चात् 15 मार्च 1852 में एक और बालिका विद्यालय की स्थापना बेताल पेठ में की। अब तक सावित्रीबाई एक विद्यालय में प्रधानाध्यापिका बन चुकी थीं। वैसे इन सब गतिविधियों के आधार स्तंभ ज्योतिराव फुले ही थे। वे भारत में स्त्री शिक्षा आंदोलन के सूत्रधार बन चुके थे।

ज्योतिबा फुले द्वारा किए जा रहे स्त्री शिक्षा के इन उल्लेखनीय कार्यों के लिए ब्रिटिश सरकार ने जून 1852 में उन्हें सम्मानित करने का निर्णय लिया। उस समय ज्योतिबा फुले मात्र 25 वर्ष के थे। इस अल्पायु में ही वे 'स्त्री शिक्षा के सच्चे हिमायती' के रूप में पहचाने जाने लगे थे। उनके सम्मान स्वरूप सरकार की ओर से 200 रुपये, दो शॉल एवं पुष्पमाला अर्पण कर, उन्हें सम्मानित किया गया था। उस समय के वातावरण में यह एक महान उपलब्धी थी। अपने भाषण में उन्होंने स्त्री शिक्षा का महत्व समझाया था। उन्हें 'भारतीय नारी के मुक्तिदाता के रूप में जगह–जगह सम्मानित किया जा रहा था।

इस प्रकार हम देखते है कि ज्योतिबा फुले ने सन् 1848 और 1852 के बीच 18 कन्या पाठशालाएं खोलीं, इनमें 6 पूना नगर के भिन्न–भिन्न भागों में, 6 पूना जिले के भिन्न–भिन्न स्थानों पर, 3 सातारा जिले में और 3 अन्य स्थानों पर। इस तरह उन्होंने कन्या पाठशाला खोलने का एक आन्दोलन चलाया था।

भारत में खेलों का ऐतिहासिक विकास

-डा. प्रशान्त कश्यप

मानव जीवन में जन्म से ही भारीरिक गतिविधियाँ प्रारंभ हो जाती है। वह जैसे–जैसे बढ़ता है भारीरिक क्रियायें भी स्वाभाविक रुप से सीखता जाता है जैसे– दौड़ना, उछलना, कूदना आदि। इसके अतिरिक्त कुछ मानवीय विकास जैसे– व्यवसाय करना इत्यादि के माध्यम से भी वह अपनी भारीरिक क्रियायें पूरी करता है। ये भारीरिक क्रियायें खेल प्रद ान के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। भारत में खेलों की परंपरा बहुत प्राचीन है। प्राचीन भारत में हमें अनेक प्रकार के खेलों के बारे में जानकारी मिलती है। संभवतः इन्ही खेलों के माध्यम से लोग अपना मनोरंजन भी किया करते थे। सिन्धु सभ्यता के विभिन्न नगरों की खुदाई के दौरान हमें छः फलक (शट्भज–अक्ष) वाले पाँसे प्राप्त हुए जो 'धूत–क्रीड़ा' की तरफ संकेत करते है।[1] इसकी पुष्टि ऋगवेद से भी होती है। जिसमें एक जुआरी को विलाप करते हुए उल्लिखित किया गया है। यह वर्णन धूत–क्रीड़ा की लोकप्रियता को भी प्रमाणित करता है। पाँसा फेकते समय भारतीय भी एक विशेष भाषा का प्रयोग करते थे– कृत (चार), त्रेता (तीन), द्वापर (दो), कलि (एक)।[2] कालांतर में यही चारो भाब्द चार युगों के लिए प्रयोग किया गया। पाँसा (अक्ष) फेकने वाले को 'अक्षप' कहा जाता था।[3] यह प्रत्यक्ष रुप से धूत–क्रीड़ा टोलियों का नेतृत्व करता था। महाभारत का कथानक भी एक धूत–क्रीड़ा प्रतियोगिता समारोह से संबंधित है। जिसमें युधिश्ठिर अपने चचेरे भाई दुर्योधन से खेलते हुए अपना समस्त राज्य हार गये। अर्थ ाास्त्र धूत – क्रीड़ा पर कठोर नियंत्रण का समर्थन करता है। इसमें उल्लिखित है कि धूत–क्रीड़ा पूर्णतः राजकीय प्रबन्ध द्वारा संचालित धूत ग्रहों तक ही सीमित होनी चाहिए।[4] इन धूत ग्रहों में खिलाड़ियों को अपना पाँसा लाने का निशेध था। कपट (छल) के लिए कठोर दण्ड का भी प्रावधान था। पाँसे के साथ एक अन्य फलक खेल भी प्राचीन भारतवासी खेला करते थे जो कि वर्तमान 'लूडो' के समान होता था।[5] जिसमें संयोग एवं सूझ–बूझ की आव यकता होती थी। ई॰सन् की प्रारंभिक भाताब्दी तक इन्ही खेलों में से एक 'चतुरंग' कुछ जटिलता का खेल बन गया था।[6] यह 64 वर्गो के फलक पर खेला जाता था। इसमें कुल पांच गोट होते थे– एक राजा, एक हाथी, एक घोड़ा, एक रथ और पैदल।[7] इसको खेलने के लिए चार खिलाड़ियों की आव यकता होती थी। इनकी चालें पाँसा फेककर नियंत्रित की जाती थी। कालांतर में फारस (ईरान) के निवासियों ने यह खेल सीख लिया और जब फारस को अरबों ने जीता तो यह खेल भाीघ्र ही ' ातरंज' (जो कि चतुरंग का फारसी अपभ्रं ा है) के नाम से प्रसिद्ध हो गया।[8] अब यह चार की जगह दो व्यक्तियों के खेल के रुप में विकसित हुआ। अब इसको खेलने का तरीका भी बदल गया। प्रत्येक व्यक्ति दो सेनायें रखता था– एक का नेतृत्व राजा करता था, दूसरे का मंत्री। चालों को नियंत्रित करने के लिए अब पाँसे का उपयोग बन्द हो गया।

इस खेलों के अतिरिक्त प्राचीन भारत में कुछ अन्य खेल भी लोकप्रिय थे, जैसे– रथों की दौड़, बैलों की दौड़, कु ती, खड्ग युद्ध, प ाुओं का द्वन्द्व युद्ध, धनुर्विद्या प्रतियोगिता आदि।[9] इसमें से दो खेल–खड्ग युद्ध, प ाुओं का द्वन्द्वयुद्ध बहुत लोकप्रिय थे। चन्द्रगुप्त मौर्य की राज्य सभा में खड्ग युद्ध का वर्णन प्राप्त होता है। जबकि 'वृशभ युद्ध' दक्षिण भारत तक ही सीमित था।[10] प्राचीन दक्षिण भारत का यह एक प्रमुख खेल था। इसका उल्लेख हमें प्राचीन तमिल कविता में मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह खेल स्पेन के वृषभ युद्ध से मिलता जुलता था।[11] इसमें वृषभ से युद्ध करने वाला व्यक्ति बिना किसी भास्त्र के अखाड़े में प्रवे ा करता था। वह व्यक्ति वृषभ को मारने का प्रयत्न नही करता था, और न ही वृषभ को पहले से उत्तेजित किया जाता था। परन्तु इतना स्पष्ट है कि यह भयानक खेल था। इसे तमिल कविता में एक ऐसे विजयी वृषभ युद्ध नवयुवक के पौरुष और साहस की परीक्षा के रुप में देखा जाता था क्योंकि उस तमिल कविता में यह कहा गया है कि जो कन्यायें यह युद्ध देखती थी, वे विजेता प्रतिस्पर्द्धी युवकों में से ही अपने पति का वरण करती थी। यह एक प्रकार का तमिल स्वयंवर होता था।

मुगलकाल में हमारे दे ावासी खेलकूद के बहुता भौकीन थे। भातरंज, चौपड़, ता ा, गुट्टीमार आदि

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, ए.आई.एच.सी. विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

खेल[13] उच्च तथा मध्य श्रेणी के स्त्री–पुरुश साधारणतया खेला करते थे। मैदान में खेले जाने वाले खेल जैसे– ि ाकार, प J, युद्ध, चौगान (पोलो), प्रायः धनाढ्य लोग ही खेला करते थे।[14] इस काल में कु ती के खेल भी प्रायः सर्वत्र खेले जाते थे। उच्च एवं मध्यश्रेणी के लोगों को पतंगबाजी का भी भाौक था।[15]

खेल के क्षेत्र में आधुनिक काल में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ। खेल इस काल में भाारीरिक ि ाक्षा का एक आव यक अंग बन गया। अंग्रेजों का खेल से अत्यधिक लगाव था। इन्होंने क्रिकेट, जिम्नास्टिक, नामक कुछ नये खेलों का प्रचलन किया।[16] जबकि इसके साथ–साथ खो–खो, कबड्डी, मल्लयुद्ध जैसे कुछ परंपरागत खेल भी प्रचलित रहे।[17] भारत के लोगों को विभिन्न प्रकार की भाारीरिक ि ाक्षा के प्रति भी था। अंग्रेजों द्वारा ि ाक्षा की ऐसी व्यवस्था की गयी कि भारतीयों के मन से राष्ट्रीय भावना को निकालकर उन्हे भाारीरिक रुप से बलिष्ट बनने के लिए अपने ि ाक्षा प्रणाली में भाारीरिक ि ाक्षा नामक विषय की व्यवस्था की। साथ ही साथ इस काल में अखाड़ो एवं व्यायाम ाालाओं का भी बहुत बड़ी संख्या में निर्माण किया गया, जिसमें लोग नियमित रुप में अभ्यास करते थे।

संदर्भ :–

1. अद्भुत भारत, ए॰एल॰ बा ाम, ि ावलाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा, पृ॰ 149–150
2. वही,
3. वही,
4. वही,
5. प्रतियोगिता दर्पण, खेलकूद, हिन्दी मासिक, अतिरिक्तांक, 2006, पृ॰ 98
6. प्रतियोगिता दर्पण, खेलकूद, हिन्दी मासिक, अतिरिक्तांक, 2009, पृ॰ 72
7. प्रतियोगिता दर्पण, खेलकूद, हिन्दी मासिक, अतिरिक्तांक, 2010, पृ॰ 78
8. अद्भुत भारत, पूर्वाक्त
9. वही
10 वही
11. वही
12. वही
13. मुगलकालीन भारत, आ ार्वादीलाल श्रीवास्तव, ि ावलाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा, पृ॰ 534–35
14. ट्रैवेल्स इन द मुगल इम्पायर : वर्नियर, (1656–58), स्मिथ, पृ॰ 202–03
15. वही
16. प्रतियोगिता दर्पण, खेलखूद, हिन्दी मासिक,

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- जो मनुष्य इसी जन्म में मुक्ति प्राप्त करना चाहता है, उसे एक ही जन्म में हजारों वर्ष का काम करना पड़ेगा। वह जिस, युग में जन्मा है, उससे उसे बहुत आगे जाना पड़ेगा, किन्तु साधारण लोग किसी तरह रेंगते-रेंगते ही आगे बढ़ सकते हैं।
- जो महापुरुष प्रचार - कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं, वे उन महापुरुषों की तुलना में अपेक्षाकृत अपूर्ण हैं, जो मौन रहकर पवित्र जीवनयापन करते हैं और श्रेष्ठ विचारों का चिन्तन करते हुए जगत की सहायता करते हैं। इन सभी महापुरुषों में एक के बाद दूसरे का आविर्भाव होता है - अंत में उनकी शक्ति का चरण फलस्वरूप ऐसा कोई शक्ति सम्पन्न पुरुष आविर्भूत होता है, जो जगत को शिक्षा प्रदान करता है।
- जब तक जीना, तब तक सीखना - अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।
- जिस प्रकार स्वर्ग में, उसी प्रकार इस नश्वर जगत में भी तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो, क्योंकि अनन्त काल के लिए जगत में तुम्हारी ही महिमा घोषित हो रही है एवं सब कुछ तुम्हारा ही राज्य है।

आत्म विश्वास - सफलता का मूलमंत्र

- सीमा

''इन्सान अक्सर वही बनता है, जो वह अपने विषय में सोचता है। यदि मैं यह सोचने लगूँ कि मैं कुछ नहीं कर सकता तो मैं वाकई कुछ भी करने में असमर्थ रहूँगा, लेकिन जब मुझे यह विश्वास होगा कि मैं कर सकता हूँ तो मुझमें वह करने की योग्यता भी आ जायेगी, जो शुरु में मेरे पास नहीं थीं।''

- महात्मा गाँधी

गाँधी जी ने जिस विचार, विश्वास या शक्ति का उल्लेख किया है, वह आत्मविश्वास ही है। यदि महान सफलता प्राप्त करने वाले महान व्यक्तियों के जीवन का अध्ययन किया जाये तो हमें ज्ञात होता है कि उनकी महान सफलताओं और उनके महान व्यक्तित्व बनने का एकमात्र कारण उनका आत्मविश्वास था। जिस व्यक्ति को अपनी योग्यता पर विश्वास हो जाता है,उसे सफलता अवश्य प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्ति अपने धुन के इतने पक्के होते हैं कि अपने अदम्य आत्मविश्वास के बल पर सफलता के शिखर पर पहुँच ही जाते हैं। आत्मविश्वास से दृढ़ निश्चय उत्पन्न होता है। जिस व्यक्ति के मन में हमेशा दुविधा बनी रहती है कि वह अमुक कार्य को करे या न करे तो वह जीवन भर दुविधा में ही उलझा रहता है। उसे न तो अपनी योग्यता पर विश्वास होता है न अपनी शक्ति पर सामर्थ्य पर। व्यक्ति के मन में जब तक यह दृढ़ विश्वास पैदा न हों कि वह जिस लक्ष्य को पाना चाहता है, उसे पा लेगा, तब तक मन में वह अटूट निष्ठा उत्पन्न नहीं हो सकती, जो उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक होती है। लेकिन यदि एक बार मन में दृढ़ विश्वास जागृह हो जाय कि वह अमुक लक्ष्य या वस्तु को प्राप्त करना चाहते हैं उसे बड़ी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं तो हमारे अन्दर इतनी शक्ति और सामर्थ्य पैदा हो जायेगी कि हम उसे प्राप्त कर ही लेंगे।

आत्मविश्वासी व्यक्ति अपने रास्ते के अवरोधों को अपने बल पर स्वयं हटाता है, समस्यों के सफल पत्थरों को लेकर मारता है, विकट परिस्थितियों के झंझावातों को सहन करता है और सफल व्यक्तियों की श्रेणी में परिगणित हो सफलता के उच्चतम शिखर को प्राप्त करता है। जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास रूपी शक्ति जितनी अधिक मात्रा में होती है, वह अपने जीवन में उतनी ही सफलताएँ प्राप्त करता चला जाता है। परन्तु जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास की कमी होती है, वह किसी भी कार्य के सम्बन्ध में कोई ठोस निर्णय नहीं ले पता। उसे यहीं विश्वास नहीं होता कि जिस कार्य को करेगा उसमें उसे सफलता प्राप्त होगी और इन्ही विचारों के संघर्ष में उलझ कर वह कोई भी कार्य आरम्भ नहीं कर पाता। परिणामतः वह जहाँ का तहाँ खड़ा रह जाता है। उसके विकास व प्रगति को मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं। वह न तो स्वयं कुछ कर पाता है, न ही समाज को कुछ दे पाता है। अतः आत्मविश्वास एक ऐसी अजेय शक्ति है जो सफलता की राह में आने वाले प्रत्येक व्यावधान को चुटकियों में धूल की तरह उड़ा देती है। उदाहरण के लिए यदि हम किसी युद्ध की बात करें तो युद्ध में लड़ने वाले सैनिकों की हार-जीत उसके आत्मविश्वास पर ही निर्भर करती है, क्योंकि युद्ध में बन्दूक नहीं, बल्कि उसको पकड़ने वाला सिपाही लड़ता है। यदि जीवन में कुछ करने का दृढ़ निश्चय करके पूरी शक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु लगा दी जाय तो सफलता अधिक समय तक दूर नहीं रह सकती।

प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर ऐसी शक्तियाँ छिपी रहती है, जिन्हें न तो कोई देख सकता है और न ही उसकी कल्पना कर सकता है। यदि किसी यन्त्र द्वारा व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों का पता लगाया जा सके तो मनुष्य अपनी ही शक्तियों को देखकर घोर आश्चर्य में पड़ जायेगा। हम सभी के अन्दर निहीत शक्तियाँ तब तक सोई रहती है जब तक कि उन्हें जगाया न जाए। इस सुप्त शक्तियों के जागृत होते ही व्यक्ति में आत्मविश्वास भी जाग उठता हैं और वह किसी भी कार्य को बड़ी आसानी से अंजाम तक पहुँचाने में सफल हो जाता है। आज हम जो कुछ भी कर रहे हैं, उससे लाख गुना शक्ति हमारे भीतर छिपी पड़ी है। हम सभी के अन्दर अनन्त शक्तियों का अथाह सागर लहरा रहा है। आवश्यकता है उस शक्ति को पहचानकर वर्तमान कार्य से जोड़ देने की।

जीवन में विपरीत परिस्थिति का सामना प्रत्येक व्यक्ति को करना पड़ता है। इसलिए प्रतिकूल समय में भी साहस नहीं खोना चाहिए, बल्कि यह समझना चाहिए कि यह वही समय है, जब हमें आत्मविश्वास की सबसे अधिक आवश्यकता है। अतः व्यक्ति यदि

* असिसटेन्ट प्रोफेसर, प्रा. भा. इति. सं. एवं पुरा. डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

अपने अन्दर आत्मविश्वास का विकास कर ले तो आने वाले कल में उसका नाम सफल व्यक्तियों की श्रेणी में अवश्य होगा। आत्मविश्वास ही है। अतः जीवन के महान उद्देश्यों में सफलता का मूलमंत्र आत्मविश्वास ही है। बिना आत्मविश्वास के एक कदम चलना भी कठिन है और यदि आत्मविश्वास रूपी अदम्य शक्ति हमारे साथ है तो जीवन के तमाम उबड़-खाबड़ रास्तों की यात्रा भी सरलता से पूरी की जाती है। क्योंकि आत्मविश्वास ऐसा साथी है, जिससे अच्छा कोई दूसरा मार्गदर्शक नहीं हो सकता। इसी आत्मविश्वास रूपी अदम्य शक्ति के बल पर असंभव को भी संभव किया जा सकता है, जिसे मशहूर कवि एवं शायर दुष्यंत जी ने इस प्रकार व्यक्त किया है -

''ये जो शहतीर है पलकों पे उठा लो यारों,
अब कोई ऐसा तरीका भी निकालो यारों।
कैसे आकाश में सुराख नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों॥''

कुछ प्रश्न अपने आप से!

–डॉ. सतीश कुमार सिंह

सभी नौजवान सपने बुनते हैं। सब ख्वाबों की एक खास दुनिया में कुछ पल के लिए चले जाते हैं। क्लास में बैठे-बैठे, लेक्चर सुनते हुए किसी दूसरी दुनियाँ में दूर चले जाना, सबके विद्यार्थी जीवन में होता है। ये क्लास में बिताए गए लम्हें जिन्दगी में सबको याद रहते हैं। समस्या तब होती है जब सपनों और हकीकत में दूरी बढ़ने लगती है। सपनों तक पहुँचने के लिए वास्तविक जीवन में सपनों से प्यार होता है तो उसकी लाइफ भी वैसा ही बन जाती है। कहा भी जाता है, जैसा आप सोचते हो, वैसी ही आप बन जाते हो। आप की पहचान आपके चेहरे से न होकर आपके सोचने और उस पर किए गए प्रयोगों से होने लगती है। जैसे-जैसे वह सोच उस दिशा में वास्तविकता का रूप लेने लगती है, वैसे-वैसे ही नए 'व्यक्तित्व' का निर्माण होने लगता है।

व्यक्तित्व बदलने के लिए कपड़ों के बदलने की जरूरत नहीं पड़ती है। जोशीला व्यक्तित्व या सफल लोगों का व्यक्तित्व एक खास तत्व अपने अन्दर समेटे रहता है। डर को उसे अपने जीवन से निकाल देना पड़ता है। अपने अन्दर के विकल्पों और प्रश्नों से उसे जूझना पड़ता है। आलोचना-प्रत्यालोचना का दौर अपने अन्दर ही अन्दर चलता रहता है। तब जाकर एक निष्कर्ष की प्राप्ति होती है। यही निष्कर्ष आपकी राह का मार्गदर्शक होता है। यहीं वह जगह होती है जहाँ से कमांड मिलता है कि 'यह मत करो' या 'यह करो'। 'विश्लेषण' या 'समालोचना' के स्तर तक पहुँचने के लिए जरूरी है कि आप अपने से बात करने की प्रक्रिया की शुरुआत करें। दर्शनशास्त्र भी तो यही कहता है। वहाँ पर तो व्यक्तित्व के पूरे रूपान्तरण की प्रक्रिया को समझाया गया है। जब आप समझ लेते हैं कि 'आपको क्या करना है' तब आप उसको करने के लिए प्रवृत्त हो जाते हैं।

यह प्रवृत्ति कितनी प्रबल है, इसी के उपर निर्भर करता है कि आप अपने काम को कहाँ तक अंजाम देने में सफल होते हैं।

इसलिए यह सबके लिए सहज स्थिति है कि अपने आप से प्रश्न करना शुरू करें। रोज अपने से ढेरों सवाल पूछे। अपने आप से यह पूछें कि क्या मैं अपने प्रश्नों के साथ न्याय कर पा रहा हूँ या नहीं। इस स्थिति में किसी दूसरे को अपने विचार-प्रक्रिया में न आने दें। जब इन प्रश्नों का उत्तर स्वयं आप देने की स्थिति में हो जाते हैं तब आपको कोई विचलित नहीं कर सकता, आप उस स्थिति में पलायन नहीं कर सकते हैं। अपने प्रश्नों से ईमानदारी से दो-चार होने का मतलब है कि आप ने अपने को तार-तार कर दिया है। निर्मलता की आबो-हवा में आप सांस लेने लगते हैं। दर्शनशास्त्र की किताबें आपको प्रश्न करना सिखाती हैं। जब प्रश्न करना सींख जाएगे तो उत्तर भी मिलने लगेगा। बुद्ध को भी इसी तरह से उत्तर मिला था। हम सबको भी इसी तरह से अपने आप से वार्तालाप, संवाद करने की जरूरत है। इसीलिए यह जरूरी है कि कुछ समय हमें सिर्फ और सिर्फ अपने लिए देना चाहिए। यही तो दर्शन का भी मूल है और जिन्दगी का भी। जिन्दगी को शिद्दत से जीने के लिए हमें संवाद की प्रक्रिया को तेज करने की जरूरत है।

* असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शन विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

Women Subjugation as a Curse of History: Shashi Despande's Hear Me, Sanjay

- Dr. Indrajeet Mishra

The glorious history of India is dotted with multiple stigmas like female exploitation, male chauvinism, untouchability, sati pratha and so on and so forth. A cursory glance over the history of India gives us the impression that it has been full of contradictions related to the prominent aspects of life. The past of India has been unjust to women. This class has been neglected its rights and exploited emotionally as well as physically in the male dominated cruel social set up. The patriarchal belief has made them to accept their status of the other but in recent times it has been realized that women are equally capable as men so their talent must be recognized and they should be given their dues, Adrienne Rich observes :

> *A radical critique of literature, feminist in its impulse would take the work first of all as a clue to how we live, how we have been living, how we have been led to imagine ourselves, how our language has trapped as well as liberated us, how the very act of naming has been till now a male prerogative and how we can begin to see and name- and therefore, live- afresh. (Quoted in Showalter.1979:35)*

The subjugation of women appears to be the perennial theme when we review the history. Indian society is regarded to be ancient having a history of more than five thousand years in which the treatment given to women has always been full of contradictions. On the one hand they had been deified as goddess and said to be worth worshiping for instance, 'yatra nari pujyate ramante tatra devta', on the other they are subjected to all sorts of victimization and exploitation. The ambivalent position of women makes every sensitive person ponder over the age-old dichotomy pervading in our social structure. If we closely analyze the history of any particular period, we are filled with a sense of disgust over the hypocrisy of our male hegemony. For present paper I have deliberately chosen the period of Mahabharat in which it is said that women were having considerably better treatment. Despande's short story Hear Me, Sanjay unfolds a world which tells a very pathetic tale of women. In the male dominated world women are marginalized so much so that they are regarded as an object, a property of their male counterpart, an important precursor in feminist criticism was Virginia Woolf, who, in addition to her fiction, wrote A Room of One's Own (1929) and numerous other essays on women authors and on the cultural, economic, and educational disabilities within what she called a "patriarchal" society, dominated by men, that have hindered or prevented women from realizing their productive and creative possibilities. (Abrams,200-9,100-101).

Draupadi is lost by her husband in the Dyutkrida, following which the way she is insulted by Duryodhan and his men, is a stigma to any culture that boasts of its greatness on the name of such people as Bhisma, Arjuna, Yudhisthir, Bhima or for that matter Krishna. The treatment given to Panchali questions the greatness associated with these people. I still have doubts that such an insult to a woman can be seen only in the savage society. I agree that even in our own time the condition of women is far from being better but at the same time I can allege that at least in our time such great

* Asst. Prof., English, D.A.V. P.G. College.

figures like Bhisma, Arjun are hardly present. The public humiliation of Draupadi is enough to exemplify the status of women in Mahabharata Yuga. However, there are many other instances that are equally infamous like Gandhari's covering of her eyes Despande.

expresses : Have you not seen how different he seems ever since she has uncovered her eyes? He seems at peace with himself, as if an ancient wrong has been righted. She should have done it long back. What use was it blinding herself? Oh these futile vows! (1993:133)

The protagonist in the story recollects the treatment given to Ambe, Amba, Ambalika who were forcibly abducted by Bhishma. The speaker expresses her qualms regarding the victimization of these women in the hand of Bhisma. Nevertheless, she feels that if Bhisma had broken his promise of Akhand Brahamacharya perhaps the present situation would not have arisen. The protagonist, Kunti again recalls those days when Madri came to her home. She tells the story of our glorious tradition in which the king is liable to marry as many women as he wishes least caring the wound that he makes to the queen. She remembers those days with a very serious, injured tone :

Do you know how unfair life is to a woman who does not have beauty, Sanjya? The day they brought Madri home I knew I was not beautiful… And I was angry. She is escaping I thought, she is taking away all the glory, leaving the struggle, the drudgery for me. But she was right to go. He needed her more, even in that other world he would have pined for her… he had so many pet names for her, so many endearments. For me there was only one name. (1993:135)

Kunti expresses her emotional suppression in a vivid manner, in fact, her grief is representative in nature. What she felt after the arrival of Madri in the life of her husband is of universal nature. Since, it has been common practice in those days the same feeling would have been in millions of women who have been emotionally oppressed in the similar situation. This gesture refers to the cruelty and insensitivity of the male chauvinism. But she was silent and she accepted whatever was going on without showing any resentment outwardly but inside her heart she was pained to the maximum but who cares? Here, it seems pertinent to quote Simone de Beauvoir, "One is not born, but rather becomes, a woman." They are made to understand by every authority that they are the other. In any case they have to serve their husband. They have no objection, they have no desire either, they have nothing to disagree, they have nothing to complain. Here, it is worthwhile to refer Gayatri Chakravarti Spivak, "Can subaltern speak?" They have no voice. They are subject fit to feel not to react.

Kunti refers to the incident in which Arjun having won Draupadi came to her and she ordered to divide her among five brothers. She feels she has wronged her. How futile and hallow was the tradition at that time that a woman was supposed to be an object or property that could be divided among five people.

Nobody objected this not even the proud, impetuous Draupadi, who is regarded as the most vibrant and vocal among those women. When we analyze why Draupadi accepted this the only answer comes to our mind and that is "she was a woman, a woman who has no questions".

Kunti tells very frankly that Draupadi belonged only to Arjuna but for the sake of her

sons she wronged Draupadi. After the order was given by Kunti the sparkling face of Draupadi was dimmed. She realizes how hard this decision was, she regrets on account of Draupadi. Here we come across one woman wronged by another due to patriarchal notion. The decision of Kunti was the result of patriarchal thought that a woman is an object and she could be divided equally among five brothers.

These are some historical blemishes that can never be forgotten. Kunti further reveals her marginalization and seems contented the way she was brought up :

> *"I think it was good I was brought the way I was-I was never pampered and indulged. But who would have pampered me any way? my father gave me away- how easily he gave me away. As if I was a bit of property ... and I can't even remember if it made me angry. But I remember I was frightened. I thought my father gave me away to his friend because he was displeased with me and I thought – what if I displease this man too? Will he give me away to someone else? And so I did everything I could to please him, I tried so hard never to displease him. (1993:137)*

The quoted lines bear testimony to the marginalized status of women and how a woman accepts her role as a subjugated person throughout her life. The case of Kunti is really awe-inspiring and makes every thinking individual undergo a very deep sympathy with females. As everyone of us is woman born, woman nourished we should think seriously to safeguard our women and let them enjoy the rights they deserve. At leaststs in the 21dues.

The next instance of women's marginalization referred to by Despande is the statement of Kunti in which she states that Pandu suffered severely on account of not having son. It was Kunti and Madri who fulfilled this desire of Pandu :

> *Yes we gave him sons. Madri and I, five splendid sons. The sons of Pandu they are called. And I could never claim my own sons. It makes me want to laugh sometimes. I never laughed much when I was young. (1993:138).*

Century we should forbid all the prejudices and give them their duess. These gestures are again worth pondering over. As a matter of fact, sons belong to mother as well as father but why it is so that the mother is not able to claim her sons whereas father takes complete hold over his sons. Somewhere this mentality is cultural construct of patriarchy that should be modified. It is wrong that women are not given credit for something that is basic to their womanliness. It makes us think that why patriarchy has so many contradictions? How these age old concepts would be corrected? And who would correct it? I think this is high time when we should come together to end all these contradictions and emancipate our women from all sorts of humiliation and subjugation.

Works cited

1. Abrams ,M.H. A Handbook of Literary Terms,USA, Cengage. 2009.
2. Despande Shashi, The Intrision and Other Stories. London: Penguine Books. 1993.
3. Showalter, Allen."Feminist Criticism in Wilderness", Modern Criticism and Theory ed. David Lodge & Nigel Wood. Delhi: Pearson Education. 1998. p.327

भारतीय संस्कृति के मूल तत्व

— डा. मुकेश कुमार सिंह

'संस्कृति' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की 'कृ' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय और 'सम्' उपसर्ग जोड़ने पर बनता है। 'कृति' का अर्थ है, मनुष्य का किया काम व्यवहार या आचार। क्रमिक विकास और परिस्कार के परिप्रेक्ष्य में मानव के क्रिया-कलापों का आकलन संस्कृति के अध्ययन का विषय है। भारत में संस्कृति शब्द का प्राचीनतम उल्लेख यजुर्वेद में मिलता है। वहाँ उस तत्कालीन युग से पूर्व की सांस्कृतिक परम्परा के लिए निम्न कथन है–सा संस्कृति: प्रथमा विश्वारा। वह प्रथम संस्कृति विश्ववारा अर्थात् विश्व का उन्नयन करने वाली थी। भारतीय संस्कृति का विकास एक लम्बी परम्परा का परिणाम है। इसके कारण इसमें अनेक तत्वों का समावेश है। भारतीय संस्कृति में विशिष्ट जीवन मूल्यों को विश्व गौरव दिया गया है।

भारतीय संस्कृति का प्रथम विशिष्ट तत्व उसकी भौगोलिक एकरूपता है। एक ओर उत्तर में हिमालय द्वारा उसकी सीमा बनती है जो इसे शेष एशिया से पृथक करती है। समुद्र भारत के उस स्वरूप का निर्धारण करता है जो भारत भूखण्ड के अलग अस्तित्व के साथ उसे सांस्कृतिक प्रसार को सम्भव बनाता है। भूमिगत एकता अत्यन्त महत्वपूर्ण विशेषता है जिसने अनेक परस्पर विरोधी और बेमेल तत्वों तथा शक्तियों का सहयोग और समन्वय सम्भव बनाया है। इस दृष्टि से भारत एक ऐसा विशिष्ट देश है जिसमें बाह्य जातियों और उनका प्रभाव एक बार आने के बाद वही मिल-जुल कर रहेगा। भारतीय संस्कृति के आंतरिक विविधता के सूत्रीकरण और सम्मिश्रण में इस तथ्य का प्रमुख योगदान है।

भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण तथ्य उसकी प्राकृतिक समृद्धि है जिसने भारतीयता के क्रमिक विकास को आदिकाल से ही अवसर प्रदान किया है। वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक सभी जगह इस तथ्य का उल्लेख है कि भारत में प्राकृतिक समृद्धि रही है। नदियों का उपजाऊपन प्रदेश संस्कृति के विकास का प्रमुख कारण रहा है। उत्तर में पंजाब के पाँच नदियों का प्रदेश, गंगा-यमुना का मध्यवर्ती दोआब, पूर्व में ब्रह्मपुत्र की घाटी, दक्षिण में कृष्णा-गोदावरी-तुंगभद्रा के प्रदेश भारतीय संस्कृति के उद्भव स्थल है। इन विशाल नदियों और उनके सहायक नदियों के क्षेत्र में ही भारत की कृषि एवं वन-सम्पदा विकसित हुई। अन्य भौतिक भण्डारों की दृष्टि से भी भारत भूमि पशु-पक्षी, धातु, खनिज-सम्पदा, रत्न आदि से भरी हुई है। उनके आधार पर अनेक कलाओं एवं उद्योग - धन्धों के विकास और उसके अनुरूप सांस्कृतिक उपलब्धियों का स्वत: अवसर यहाँ के निवासियों को मिला है। प्राकृतिक सौन्दर्य एवं मौसम सम्बन्धी विशिष्टताओं ने भारत के निवासियों के सुरूचि के निर्माण और रचनात्मक प्रोत्साहन में भरपूर सहयोग का कार्य किया है।

भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह सम्पूर्ण जीवन एवं सम्पूर्ण सृष्टि का संकलित विचार करती है। उसका दृष्टिकोण एकात्मवादी है। हम यह तो स्वीकार करते है कि जीवन में अनेकता अथवा विविधता है, किन्तु उसके मूल में निहित एकता की खोज निकालने का हम सदैव प्रयत्न करते है। पश्चिम के विचारकों ने योग्यतम की उत्तर जीविता के आधार पर मत्स्य न्याय या जीवन को संघर्षमय माना है। किन्तु सृष्टि में जैसे संघर्ष दिखता है वैसे ही सहयोग भी नजर आता है। संसार में एकता का दर्शन, उसके विविध रूपों के बीच परस्पर पूरकता को पहचानकर उनमें परस्परानुकूलता का विकास तथा उसका संस्कार करना ही संस्कृति है। खुली दृष्टि और ग्रहणशीलता भारतीय संस्कृति के विशिष्ट पक्ष है। बाह्य संस्कृतियों और जातियों से आदान-प्रदान, प्रभावों को आत्मसात करना, नए लक्ष्यों की प्राप्ति, आदि उसी विचारधारा के अंग है। सामाजिक व्यवस्था की उदारता और ग्रहणशीलता उसके लक्षण है।

किसी भी संस्कृति का मूल तत्व उसकी आध्यात्मिक शक्ति होती है। वैदिक काल से भारतीय संस्कृति में उच्च कोटि की आध्यात्मिक दृष्टि मिलती है। वैदिक ऋषियों ने

* असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रा.भा.इ.सं. एवं पुरातत्व विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

जीवन में उच्त नैतिक आदर्श से ऊपर उठकर मन की शक्ति और आत्मा के महत्व की स्थापना की। मोक्ष साधना और वैचारिक सहिष्णुता, भारतीय संस्कृति की विशिष्ट धाराएँ है। उपनिषद और धर्मसूत्रों में आत्मिक ज्ञान और जीवन के क्रमिक विकास का प्रतिपादन परवर्ती भारतीय संस्कृति की मुख्य देन है। महावीर और बुद्ध के वैराग्यवादी आंदोलन और आत्मिक उत्कर्ष-साधना के आन्दोलन के परिणामस्वरूप भारत में आध्यात्मिक विकास की नई धाराओं का जन्म हुआ। अशोक और हर्ष जैसे शासकों ने धार्मिक सहिष्णुता का प्रचार करना ही अपना प्रधान कर्त्तव्य समझा। कालान्तर में शंकराचार्य ने आध्यात्मपरक दार्शनिक पक्ष की पुन: स्थापना का महान कार्य किया। रामानन्द, कबीर, तुलसी, शंकरदेव आदि संतों ने आगे चलकर इसको जन-जन के लिए सुलभ किया। रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, अरविन्द, रमण ऋषि आदि इसी परम्परा की अगली कड़ी हैं।

धार्मिक सहिष्णुता भी संस्कृति का मूल अभिलक्षण है। राम, कृष्ण, शिव, बुद्ध, महावीर आदि के अतिरिक्त देवी-देवताओं की संख्या अनगिनत है। फिर भी उनमें अलग-अलग विश्वास आपसी भेद का कारण न होकर एकता का मूल है क्योंकि विभिन्न रूप स्वीकार करने के बावजूद एक-ईश्वर में भारतीयों का अटूट विश्वास है। सभी धर्मों की एकता का सिद्धान्त भारतीय दृष्टिकोण की ही देन है। समस्त विश्व में एक ही आत्मा का प्रतिबिम्ब स्वीकार करना भारतीय दर्शन का मूलमंत्र है।

भारतीय संस्कृति की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता जीवन में धर्म एवं नैतिकता की प्रधानता रहा है। बृहदारण्यक उपनिषद में संयम, दया और दान को धर्म कहा है। इस उपनिषद में सत्यपालन को भी धर्म कहा गया है और प्रार्थना की गई है कि ईश्वर असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने में मदद करें। भारतीय संस्कृति में स्थान-स्थान पर यह मिलता है कि हम इंद्रियों को नियंत्रित रखे, दूसरों के प्रति दया भाव रखे और अपने धन का कुछ भाग दान में दे तो हम अपनी आध्यात्मिक उन्नति करेंगे और समाज का कल्याण करेंगे।

सत्य की महिमा महाभात में विशेष रूप से उद्घोषित की गई है। महाभारत के सबसे अधिक धर्मपरायण पात्र युधिष्ठिर मुख्यत: अपनी सत्यवादिता के लिए प्रसिद्ध थे। महाभारत में धर्म को प्रजाहित का ही स्थान माना गया है। धारण करने के कारण धर्म नाम है, धर्म प्रजाओं को धारण करता है, जिससे लोक का धारण हो, लोक की स्थिति हो, वही निश्चय रूप में धर्म है। महाभारत के कर्ण पर्व में एक स्थान पर कहा गया है कि जो अहिंसा से सहचरित है वही निश्चय रूप में धर्म है। प्राणियों के प्रति अहिंसा के लिए ही धर्म का व्याख्यान किया जाता है।

भारतीय संस्कृति के कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण तत्व है–कर्त्तव्य भावना पर अत्यधिक बल देना। अधिकार की तुलना में भारतीय संस्कृति नैतिक कर्त्तव्य पर बल देती है। यह माना जाता है कि अपने अधिकार मांगने की तुलना में अपना कर्त्तव्य निभाना ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह अपने कर्त्तव्य और दूसरों के अधिकार की पूरकता पर बल देती है। इस प्रकार; सामुदायिक या पारिवारिक कर्त्तव्य पर बल देकर भारतीय संस्कृति व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता की जगह परस्पर निर्भरता को प्रोत्साहित करती है। इसके साथ ही भारतीय संस्कृति आत्मोत्सर्ग एवं बलिदान को महत्त्वपूर्ण मानती है। भारतीय संस्कृति उन लोगों का सम्मान करती है जो दूसरों के सुख के लिए व्यक्तिगत हितों का बलिदान करते हैं। महर्षियों, संतों तथा सन्यासियों को राजाओं एवं व्यापारियों से हमेशा ऊँचा माना जाता है। संस्कृति नायक के रूप में शहीदों को हमेशा ही राजाओं एवं व्यापारियों से अधिक महत्व दिया जाता है। व्यक्ति को अपने कर्म का परिणाम अवश्य प्राप्त होता है। अच्छे कर्म का अच्छा परिणाम तथा बुरे कर्म का बुरा परिणाम प्राप्त होता है। इस दिशा में भारतीयों की महत्त्वपूर्ण खोज निष्काम कर्म की अवधारणा है। इसके अनुसार व्यक्ति को कामना रहित होकर, कर्त्तव्य भावना से प्रेरित होकर कर्म करना चाहिए। इससे मनुष्य कर्म के परिणामों से नहीं बंधता तथा मोक्ष को प्राप्त होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति अपने आप में एक विशिष्ट महत्त्व रखती है। इसी कारण विश्व के अन्य संस्कृतियों को मानने वाले आज भारतीय संस्कृति में विशेष रुचि रखते है। वस्तुत: भारतीय संस्कृति जीवन को संपूर्ण तरीके से जीने की एक कला है।

Nobel Prize in Economics

- Dr. Alok Kumar Pandey

Alfred Nobel (1833-1896) was born in Stockholm, Sweden, on October 21, 1833. The will of Alfred Nobel established the prizes in 1895. In 1901 the Nobel Prize was awarded first time in the fields of Physics, Chemistry, Physiology or Medicine, Literature and Peace. In 1968, the Sveriges Riksbank Prize in Economic started in memory of Alfred Nobel. From 1901 to 2012 total 555 Nobel prizes in entire field including economics were awarded to 863 people and organizations. Some organazaiations and individuals received more than once thus this makes a total 835 individuals and 21 organizations. Here we are giving information regarding Nobel Prize in the field of economics from the period 1969 to 1984 only, the reaming will be appeared in the next Prabha issue(http://www.nobelprize.org).

Name	Affiliation at the time of the award	Prize motivation for the	Field and Year	Contribution
Ragnar Frisch, **Born:** 3 March 1895, Oslo, Norway **Died:** 31 January 1973, Oslo, Norway	University of Oslo, Oslo, Norway	Developed and applied dynamic models for the analysis of economic processes	Econometrics 1969	Pioneering work on econometric model building. Constructed theories for stabilization policy and long-term economic planning.
Jan Tinbergen **Born:** 12 April 1903, the Hague, the Netherlands **Died:** 9 June 1994, the Hague, the Netherlands	The Netherlands School of Economics, Rotterdam, the Netherlands			
Paul A. Samuelson **Born:** 15 May 1915, Gary, IN, USA **Died:** 13 December 2009, Belmont, MA, USA	Massachusetts Institute of Technology (MIT), Cambridge, MA, USA	Scientific work through which he has developed static and dynamic economic theory and actively contributed to raising the level of analysis in economic science	Partial and general equilibrium theory 1970	Contributed to raising the general analytical and methodological level in economic science.
Simon Kuznets Born: 30 April 1901, Pinsk, Russian Empire (now Belarus) Died: 8 July 1985, Cambridge, MA, USA	Harvard University, Cambridge, MA, USA	His empirically founded interpretation of economic growth which has led to new and deepened insight into the economic and social structure and process of development	Economic growth and economic history 1971	Extensive research on the economic growth of nations, developed methods for calculating the size of, and changes in, national income.
John R. Hicks, **Born:** 8 April 1904, Warwick, United Kingdom **Died:** 20 May 1989, Blockley, United Kingdom	All Souls College, Oxford, United Kingdom	Their pioneering contributions to general economic equilibrium theory and welfare theory	General equilibrium theory, welfare theory 1972	Made fundamental contributions to the renewal of the general equilibrium theory. Work with welfare theory. Introduced new welfare concepts in microeconomics.
Kenneth J. Arrow **Born:** 23 August 1921, New York, NY, USA	Harvard University, Cambridge, MA, USA			
Wassily Leontief **Born:** 5 August 1906, St. Petersburg, Russia	Harvard University, Cambridge, MA,	Development of the input-output method and for its application to important	Input-output analysis	Creator of the input-output technique, a method that provides

*Asstt. Professor, Department of Economics, DAV PG College, Varanasi

Died: 5 February 1999, New York, NY, USA	USA	economic problems	1973	tools for a systematic analysis of the complicated inter-industry transactions in an economy.
Gunnar Myrdal, **Born:** 6 December 1898, Skattungbyn, Sweden **Died:** 17 May 1987, Stockholm, Sweden		Their pioneering work in the theory of money and economic fluctuations and for their penetrating analysis of the interdependence of economic, social and institutional phenomena	Macroeconomics and institutional economics 1974	Research on the interrelations between economic, social and political processes.
Friedrich August von Hayek **Born:** 8 May 1899, Vienna, Austria **Died:** 23 March 1992, Freiburg, Germany				
Leonid Vitaliyevich Kantorovich, **Born:** 19 January 1912, St. Petersburg, Russian Empire**Died:** 7 April 1986, Moscow, USSR (now Russia)	Academy of Sciences, Moscow, USSR	Contributions to the theory of optimum allocation of resources	Theory of optimal allocation of resources 1975	Contributions to consumption analysis and to monetary history and theory, including observations of the complexity of stabilization policy.
Tjalling C. Koopmans **Born:** 28 August 1910, 's Graveland, the Netherlands **Died:** 26 February 1985, New Haven, CT, USA	Yale University, New Haven, CT, USA			Renewed, generalized, and developed methods for analysis of the classical problem of economics as regards the optimum allocation of scarce resources
Milton Friedman **Born:** 31 July 1912, Brooklyn, NY, USA **Died:** 16 November 2006, San Francisco, CA, USA	University of Chicago, Chicago, IL, USA	Achievements in the fields of consumption analysis, monetary history and theory and for his demonstration of the complexity of stabilization policy	Macroeconomics 1976	Contributions to consumption analysis and to monetary history and theory, including observations of the complexity of stabilization policy.
Bertil Ohlin, **Born:** 23 April 1899, Klippan, Sweden **Died:** 3 August 1979, Vdalen, Sweden	Stockholm School of Economics, Stockholm, Sweden	Pathbreaking contribution to the theory of international trade and international capital movements	International economics 1977	Founder of the modern theory of international trade.
James E. Meade **Born:** 23 June 1907, Swanage, United Kingdom **Died:** 22 December 1995, Cambridge, United Kingdom	University of Cambridge, Cambridge, United Kingdom			Demonstrated the effects of economic policy on foreign trade theory.
Herbert A. Simon **Born:** 15 June 1916, Milwaukee, WI, USA **Died:** 9 February 2001, Pittsburgh, PA, USA	Carnegie Mellon University, Pittsburgh, PA, USA	Pioneering research into the decision-making process within economic organizations	Management science 1978	Work in a number of fields, including the methodology of science, applied mathematical statistics, operations analysis, economics, and business administration
Theodore W. Schultz, **Born:** 30 April 1902,	University of Chicago, Chicago,	Pioneering research into economic development	Development economics	Analysis of the role of investment in human

Arlington, SD, USA **Died:** 26 February 1998, Evanston, IL, USA	IL, USA	research with particular consideration of the problems of developing countries	1979	capital for economic development, particularly in agriculture.
Sir Arthur Lewis **Born:** 23 January 1915, Castries, British West Indies (now Saint Lucia) **Died:** 15 June 1991, Bridgetown, Barbados	Princeton University, Princeton, NJ, USA			Developed two economic models which mark out the causes of poverty among the population of the developing countries, as well as the factors determining the unsatisfactory pace of development.
Lawrence R. Klein **Born:** 14 September 1920, Omaha, NE, USA	University of Pennsylvania, Philadelphia, PA, USA	Creation of econometric models and the application to the analysis of economic fluctuations and economic policies	Macroeconometrics 1980	Analysis of the effects of macroeconomic policy by econometric model building. He also made important contributions in developing fore-casting techniques.
James Tobin **Born:** 5 March 1918, Champaign, IL, USA **Died:** 11 March 2002, New Haven, CT, USA	Yale University, New Haven, CT, USA	Analysis of financial markets and their relations to expenditure decisions, employment, production and prices	Macroeconomics 1981	The theory of financial markets and their relation to consumption and investment decisions, production, employment and prices
George J. Stigler **Born:** 17 January 1911, Renton, WA, USA **Died:** 1 December 1991, Chicago, IL, USA	University of Chicago, Chicago, IL, USA	Seminal studies of industrial structures, functioning of markets and causes and effects of public regulation	Industrial organization 1982	Fundamental contributions to the study of market processes and the analysis of the structure of industries.
Gerard Debreu **Born:** 4 July 1921, Calais, France **Died:** 31 December 2004, Paris, France	University of California, Berkeley, CA, USA	Incorporated new analytical methods into economic theory and for his rigorous reformulation of the theory of general equilibrium	General equilibrium theory 1983	Basic research work in the theory of general equilibrium.
Richard Stone **Born:** 30 August 1913, London, United Kingdom **Died:** 6 December 1991, Cambridge, United Kingdom	University of Cambridge, Cambridge, United Kingdom	Made fundamental contributions to the development of systems of national accounts and hence greatly improved the basis for empirical economic analysis	National income accounting 1984	Pioneering research around national accounting systems.

References

1. http://www.nobelprize.org
2. http://en.wikipedia.org/wiki/Nobel_Prize

उत्तर आधुनिकतावाद : एक बौद्धिक तर्क

–डॉ. स्वाति सुचरिता नन्दा

उत्तर आधुनिकतावाद एक ऐसा बौद्धिक आन्दोलन है जिसका प्रारम्भ २०वीं शताब्दी के मध्य भाग में हुआ। इसको अलग-अलग तरह से देखा जा सकता है। कुछ लोग इसे एक क्षण, मुहुर्त, पल अथवा एक समय का एक क्रम के रूप में देखते हैं, जो कि आधुनिकता के अन्तिम छोर पर खड़ा मिलता है। इनके अनुसार वर्तमान समय की दुनियाँ को आधुनिक नहीं, उत्तर आधुनिक के रूप में देखना चाहिए। कुछ लोग इसे आधुनिक समरूपी शैली के विरोध में खड़ा एक शैली के रूप में देखना पसन्द करते हैं। इस नई शैली की विशेषता है जटिल विविधता जो कि हमें १९५० के बाद के साहित्य में एवं निर्माण और कला में देखने को मिलता है। कुछ लोग उत्तर आधुनिकतावाद को एक विचारधारा के रूप में देखते हैं। ये ऐसी विचारधारा है जो आधुनिकता के मूल तर्कों का बहिष्कार करके एक नूतन तर्कों की परम्परा की शुरुआत की है। इससे यह प्रतीत होता है कि उत्तर आधुनिकता के साथ अत्यन्त घनिष्ट सम्बन्ध है। इसीलिए पहले आधुनिकता के सम्बन्ध में चर्चा करना आवश्यक है।

साधारणत: आधुनिकता को एक समय के रूप में देखा जाता है। ये ऐसा समय है जो मध्ययुगीन अंधकार को तोड़कर मनुष्य को प्रकाशमय दुनियाँ की ओर ले आया। पाश्चात्य सभ्यता में मध्य युग को अंधकारमय माना जाता है। मध्ययुग में ज्ञान प्राप्ति के लिए मनुष्य के स्वतंत्र प्रयास को उत्साहित नहीं किया जाता था बल्कि स्वर्गीयता एवं अलौकिकता के ज्ञान का आधार माना जाता था।

आधुनिकता ने इस तरह के विचारधार को सम्पूर्ण ध्वस्त करके एक नूतन तर्क परम्परा को शुरू किया। इसी के आधार पर नई राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक सोच बनी।

साधारत: आधुनिकता के तीन मूल आधार रहे हैं– विचारशीलता, वैज्ञानिकी, वस्तुनिष्टता, सिद्धान्तों का निर्माण।

ये आधुनिकता का अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। इसके अनुसार मनुष्य का किसी भी स्वर्गीय, आध्यात्मिक या आलौकिक शक्ति द्वारा अपने आपको परिचालित करना एक कृत्तिमता है। मनुष्य एक विचारशील प्राणी है। उसे अपनी विचारशीलता, सोचने विचारने का, निस्पति लेने एवं शक्ति का प्रयोग स्वयं करना चाहिए। डेकार्टे (अँमूे) का कथन है, ठद्यू प्यह्व्यू पींदिा र्ंस्ठ (मैं सोचता हूँ इसीलिए मैं हूँ) मनुष्य की विचारशीलता को सभी ज्ञानों के केन्द्र में स्थापित करता है। देखा जाए तो विचारशीलता के ये सिद्धान्त मनुष्य को 'स्वयं' को स्थापित करता है। इसी 'स्वयं' सिद्धान्त के आधार पर विभिन्न राजनीति विज्ञान के विद्वानों ने 'मनुष्य प्रकृति' को एक तरह से देखना सम्भव समझते हैं।

आधुनिकतावाद का द्वितीय सैद्धान्तिक स्तम्भ है वैज्ञानिकी वस्तुनिष्ठता। इसके अनुसार मनुष्य को केवल उसी ज्ञान को मान्यता देनी चाहिए जो उसने अपने ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा ग्रहण किया है इसीलिए आधुनिकवाद ज्ञान प्राप्ति के विभिन्न वैज्ञानिक पद्धतियों पर अधिक ध्यान देता है। इसके अनुसार मनुष्य अपनी दुनियाँ के सम्बन्ध में वस्तुनिष्ठ होकर ज्ञान संग्रह कर सकता है। इसका मतलब मनुष्य को अपनी मूल्य बोधों को, भावनाओं को और अपनी इच्छाओं को अलग रखकर ज्ञान संग्रह करना सम्भव है। इसी सैद्धान्तिक स्तम्भ ने आधुनिकवाद में व्यवहारवाद के विमर्श को स्थान दिया था।

आधुनिकवाद का तीसरा महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक स्तम्भ है विश्वास जिसमें मनुष्य सम्बन्ध, मनुष्य, समाज,

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

मनुष्य की दैनिक व्यवहार, क्रिया, प्रतिक्रिया एवं मनुष्य के चरम लक्ष्य के बारे में सिद्धान्त निर्माण करना सम्पूर्ण रूप से सम्भव हो। जैसा कि हम जानते हैं कि सिद्धान्त निर्माण का लक्ष्य है वास्तविकता को विश्लेषित करना, व्याख्या करना एवं उसके आधार पर पूर्वानुमान करना। इस तरह का सिद्धान्त मार्क्स ने निर्मित किया, जिसके द्वारा उन्होंने मनुष्य के प्रारम्भिक मूल विकास की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन किया। पुन: उन्होंने हमें यह विश्वास दिलाया कि मनुष्य के समस्याओं का अन्त सम्भव है। उनके इस सिद्धान्त को हम मार्क्सवादी सिद्धान्त कहते है। उसी तरह हेगेल (पुात) ने इतिहास को एकरेखीय प्रक्रिया के रूप में देखा।

आधुनिकवाद का मानना है कि इतिहास को पृष्ठभूमि मानना अति आवश्यक है। इतिहास में हमें शुरुआत मिलती है और विकास का तर्क भी मिलता है। इस तरह से आधुनिकवाद ऐतिहासिकता (Historicism) को मान्यता देता है। ये भी याद रखना आवश्यक है कि आधुनिकवाद एक ऐसा सिद्धान्त निर्माण करने में विश्वास रखता है जिसका सार्वभौमिक प्रयोग किया जा सकता है। अर्थात् प्राकृतिक विज्ञान के सिद्धान्तों जैसा समाजशास्त्र में भी ऐसा सिद्धान्त बनाया जा सकता है जो सब लोगों के लिए सभी समय के लिए तथा सभी स्थान के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

उत्तर आधुनिकता ने आधुनिकता के विभिन्न सैद्धान्तिक स्तम्भों पर प्रहार किया। इसके अनुसार आधुनिकवाद सीना तान कर मनुष्य की जिस विचारशीलता को, ज्ञान की जिस वस्तुनिष्ठता को भव्य वर्णन अथवा महावृत्तान्त रचना करने में हमें एक ऐसे समय पर लाकर खड़ा कर दिया जहाँ हमने दो विश्वयुद्धों को मानव सभ्यता को ध्वस्त करते हुए देखा। फिर आधुनिकवाद के इसी नशे ने वस्तुवादिता को चरम स्तर पर ले आया। इसके द्वारा केवल एक संस्कृति (जो कि पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता) का वर्चस्व स्थापित होता है। इस आधुनिकतावाद ने हमें सिखाया कि सभी समस्याओं

का एक तरह का समाधान हो सकता है जो कि सम्पूर्ण मिथ्या है। इसने हमें ये सभी सिखाया कि सब मनुष्यों की, प्रकृति ही एक प्रकार है जो कि मिथ्या है। इसमें हमें यह भी सिखाया कि मनुष्य अपनी मूल्य बोधों को अलग रखकर सिद्धान्त निर्माण कर सकता है, ये भी मिथ्या है। इसलिए उत्तर आधुनिकवाद में विश्वास करने वाले विद्वानों ने आधुनिकवाद को केवल एक पाश्चात्य प्रोजेक्ट के रूप में देखा।

सर्वप्रथम इसको आधुनिकवाद की एक कड़ी समालोचना के रूप में देखा जा सकता हैं। ये सवाल उठता है कि मनुष्य के विचारशीलता पर जो आधुनिकवाद का सबसे बड़ा दावा रहाहै, इसके अनुसार ऐसा कोई ज्ञान नहीं है जो मनुष्य के अनुभूति से प्रभावित नहीं होता है। इसका मतलब जिसे हम विचारशीलता मानते हैं वो प्रत्येक मनुष्य के अपने अनुभूति से बनता है। चूँकि प्रत्येक मनुष्य की अनुभूति उसके सन्दर्भ पर आधारित होता है इसीलिए कोई सार्वभौमिक विचार मनुष्य से अपेक्षा नहीं की जा सकती।

इसके दो मतलब निकलते है। एक तो ये ज्ञान की वस्तुनिष्ठता पर सवाल उठाता है। उत्तर आधुनिकवाद का यह मानना है कि वस्तुनिष्ठ ज्ञान असम्भव है। हमें मान लेना चाहिए कि सभी ज्ञान व्यक्तिनिष्ठ होते हैं, जो कि मनुष्य की भावनाएँ, मूल्यबोधों से प्रेरित होते हैं। दूसरा ये कि अगर मनुष्य का कोई एक विचार नहीं हो सकता, अगर हर मनुष्य का विचार अपने सन्दर्भ पर आधारित है तो हमें किसी एक दृष्टिकोण की खोज में जाना ही नहीं चाहिए। उत्तर आधुनिकता अनेक व विभिन्न दृष्टिकोण में विश्वास रखता है, क्योंकि उत्तर आधुनिकता कोई एक दृष्टिकोण से सम्पूर्ण वास्तविक संसार का व्याख्या करता हुआ सिद्धान्त हो असम्भव है। ये अलग-अलग दृष्टिकोणों से विभिन्न सिद्धान्तों को बनाने में विश्वास रखता है। सभ्यता के हर प्रयास में कोई एक नहीं अनेक विमर्श (जो कि एक दूसरे से अलग है, चलते रहते हैं। इसका मानना है कि जो

शक्तिशाली विमर्श होता है वह आपको लोगों के सामने सत्य के सिद्धान्त के रूप में प्रदर्शित करता है, पर कोई जरूरी नहीं है कि सत्य उसी के पास हो। इस तरह के विमर्शों के पास हो सकता है जो शक्तिशालीा नहीं है और इसीलिए अपने आपको स्थापित नहीं कर पाते हैं।

इस तरह से उत्तर आधुनिकता आधुनिकतावादी सिद्धान्तों को 'महान वृत्तान्त' एवं 'भव्य वर्णन' के रूप में समालोचन करता है जिसको अंग्रेजी में Metanarrative और Grand Narrative कहते है। ल्योतार्द्ध का कथन है कि ''उत्तर आधुनिकवाद का सबसे प्रमुख परिभाषा है कि ये महत वृतान्तों पर अविश्वास करता है। (Post Modernism is marked by "An incredulity towards meta narratives") इसका मतलब यह है कि उत्तर आधुनिकवाद उन सभी विचारधाराओं को अविश्वास के साथ देखता है जो ऐसी सार्वभौमिक सिद्धान्तों पर आधारित है, जिनके दृष्टि में समाज एवं दुनियाँ एक सुव्यवस्थित सम्पूर्णता के रूप में हैं। उत्तर आधुनिकवादियों के नजर में पूरा समाज एवं सारी दुनियाँ (विखरा हुआ) था (ऊँसहू) नजर आता है।

उत्तर आधुनिकवादी विद्वान ज्ञान की खोज के लिए

विखण्डन की पद्धति का प्रयोग करते हैं विखण्डन पद्धति को सबसे ज्यादा 'दरिका' ने १९६० में प्रयोग किया। इसके अनुसार कोई भी वस्तु का एक स्थिर या जन्मजात अर्थ नहीं होता है। उसको हम अर्थ देते हैं। जैसे कि एक पेड़ को हम पेड़ Tree या या वृक्ष के नाम से पुकारते हैं और हर समाज में उससे सम्बन्धित अर्थ की रचना करते हैं। इसका मतलब इन्सान (मनुष्य) हर वस्तु को अपने अनुसार अर्थ देता है। सारी वस्तुएँ सांस्कृतिक रचनाएँ है। कोई भी वस्तु के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें उसके ऊपर से सांस्कृतिक अर्थों के विभिन्न परतों को हटाना पड़ेगा। विखण्डन पद्धति का यह मानना है कि हर वस्तु को अर्थ देने के पीछे एक द्विगुणी विभाजन की प्रक्रिया कार्यरत् है।

उत्तर आधुनिकवाद की अलग-अलग समालोचना हुई है। इसके सबसे बड़े समालोचक रहे हैं वे लोग जो आधुनिकवाद के पक्ष में बात करते हैं। इनमें बहुत सारे उदारवादी हैं और कुछ दक्षिणपंक्षी जो उत्तर आधुनिकवाद को हारे हुए वामपंथियों द्वारा पाश्चात्य सभ्यता के ऊपर एक अन्तिम प्रहार के कोशिश के रूप में देखते हैं। इनका मानना है कि उत्तर आधुनिकता में रचनात्मकता बिल्कुल ही नहीं है, अगर है तो केवल स्थायी एवं बसे हुए वस्तुओं को अस्थाई एवं तोड़ देना। वामपंथी विद्वान भी उत्तर आधुनिकतावाद की काफी गंभीरता के साथ समालोचना करते है।

अंतत: यह कहा जा सकता है कि उत्तर आधुनिकतावाद समकालीन समाज को देखने का एक अलग नजरिया रहा है। हालांकि इसके पीछे की राजनीति को समझने की भी जरूरत है।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- हमारी नैतिक प्रकृति जितनी उन्नत होती है, उतना ही उच्च हमारा प्रत्यक्ष अनुभव होता है, और उतनी ही हमारी इच्छा शक्ति अधिक बलवती होती है।
- मन का विकास करो और उसका संयम करो, उसके बाद जहाँ इच्छा हो, वहाँ इसका प्रयोग करो - उससे अति शीघ्र फल प्राप्ति होगी। यह है यथार्थ आत्मोन्नति का उपाय। एकाग्रता सीखों, और जिस ओर इच्छा हो, उसका प्रयोग करो। ऐसा करने पर तुम्हें कुछ खोना नहीं पड़ेगा। जो समस्त को प्रपत होता है, वह अंश को भी प्राप्त कर सकता है।

वैदिक कालीन समाज में नारी

- डा. शैलजा सिंह

नारी चेतना रूप है । तीव्र से तीव्र परिवर्तन भी उसके लिए स्वाभाविक है । उसके लिए यह रोजमर्रा का क्रम है । बेटी आज अपना घर छोड़ती है और कल बहू बनकर एकदम नये वातावरण में पहले से बिलकुल भिन्न जीवन-क्रम अपना लेती है । दोनों जीवनों में जमीन-आसमान जैसा अन्तर होता है, पर वह उसे स्वाभाविक रूप से निभा लेती है । कर्त्तव्य की माँग के अनुसार अपने आपको ढाल लेने की अद्‌भुत क्षमता नारी को जन्म से ही प्राप्त है ।

नारी सदा से ही देव-संस्कृति में शिल्पी, जननी विधाता के रूप में सम्मान पाती रही है । वैदिक समाज में उनका महत्वपूर्ण एवं समुचित स्थान था । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र और प्रत्येक स्तर पर उनके महत्वपूर्ण विचार आमन्त्रित व सम्मानित होते थे । बिना किसी भेद के सबको परमात्मा के अंश जीवात्मा के रूप में देखा जाता था । अथर्ववेद में प्रमाणित है कि -

त्वं स्त्री त्वं पुमानासित्वं कुमार उतवा कुमारी ।
त्वं जीर्णोदण्डेनवञ्चसि त्वं जातो भवसि विश्वतोमुखः॥

अर्थात्, हे जीवात्मा ! तू स्त्री, तू पुरूष, तू लड़का अथवा लड़की है । तू जीर्ण स्तुति किया गया होकर दण्ड सामर्थ्य से चलता है । तू सब ओर मुखवाला (बड़ा चतुर) होकर प्रसिद्ध होता है ।

वैदिकयुग में बालकों के समान बालिकाओं का भी यज्ञोपवीत संस्कार होता था और वे भी ब्रह्मचर्यपूर्वक जीवन व्यतीत करती हुई शिक्षा प्राप्त किया करती थी । स्त्रियों के शिक्षित होने का ही यह परिणाम था कि यज्ञ सदृश धार्मिक कृत्यों में पत्नी अपने पति का हाथ बँटाती थी। उसके बिना यज्ञ पूर्ण नहीं हो सकता था ।

अनेक स्त्रियाँ वेदमंत्रों की रचयिता या द्रष्टा भी हैं जिनमें लोपशा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, सिकता, विवस्वान पुत्री यमी, पुलोम पुत्री शची, काम गोत्रीया श्रद्धा, ब्रह्मवादिनी जुहू, अम्भृण पुत्री वाक्, सूर्या, इन्द्राणी, कक्षीवान, पुत्री घोषा, अर्चनाना, गौरवीति अपाला, असंगभार्या तथा अंगिरा-पुत्री शाश्वती आदि उल्लेखनीय है । इन विदुषी कन्याओं को 'ऋषी' उपाधि से विभूषित किया गया और उनके मनोभावों को सम्मान्य स्थान दिया गया । ऋग्वेद के एक सूक्त में पौलोभी शची द्वारा अपने मनोभाव इस रूप में प्रकट किये गये - ''मैं ज्ञानवती हूँ । मैं मूर्धन्य हूँ । मैं तजस्वी वक्तृत्व करने वाली हूँ, मैं शत्रु का विनाश करने वाले हैं, मेरी पुत्री तेजस्विनी है, मै सर्वत्र विजयी हूँ, मेरी प्रशंसा पति के विषय मे है या मैं सदा अपने पति की प्रशंसा करती हूँ । इन मन्त्रों से स्पष्ट है कि वैदिकयुगीन स्त्रियाँ सुशिक्षित, ज्ञान सम्पन्न, तेजस्विनी तथा पति के अनुकूल व्यवहार प्राप्त करने की आशा करने वाली होती थी ।

शतपथ ब्राह्मण में रजा जनक (विदेह) की सभा का वर्णन है, जिसमें कुरु-पाञ्वाल के ब्राह्मण एकत्र हुए थे । वहाँ वाचकनवी (कुशल वक्तृत्व वाली) गार्गी भी गयी थी और उसने महर्षि याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ भी किया । अनेक प्रश्न पुछने के पश्चात् गार्गी ने याज्ञवल्क्य से पूछा कि 'ब्रह्मलोक किससे ओत-प्रोत है ?' संभवतः याज्ञवल्क्य इसका उत्तर नहीं दे सके थे और वह यह कहकर चुप हो गये थे कि गार्गी अब अधिक न पूछो ।'' ऐतरेय ब्राह्मण में कुमारी गन्धर्वग्रहीता का उल्लेख है, जिसे वहाँ परम विदुषी तथा वक्तृता में प्रवीण कहा गया है । शतपथ ब्राह्मण के अनुसार याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी की रूचि सांसारिक सुख-भोग के प्रति न होकर अध्यात्म-चिन्तन तथा ब्रह्मविद्या में थी । जब याज्ञवल्क्य ने परिव्राजक होने का निश्चय किया तो उनकी इच्छा थी कि वे अपनी सब सम्पत्ति दोनो पत्नियों-मैत्रेयी और कात्यायनी में बाँट दें । यह जानकर मैत्रेयी ने कहा - यदि धनधान्य से परिपूर्ण सम्पूर्ण पृथ्वी भी मुझे प्राप्त हो जाये, तो उससे मैं अमृतत्व कैसे प्राप्त कर सकूँगी, जिससे मैं 'अमृत' (अमर) नहीं हो सकती, उसे लेकर मैं क्या करूँगी । तो ज्ञान आपको प्राप्त है, वही मुझे प्रदान कीजिए। यह सुनकर याज्ञवल्क्य ने जो ज्ञान मैत्रेयी को दिया, उसका विशद वर्णन शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। काशकृत्स्नी नामक एक महिला ने मीमांसा दर्शन पर एक ग्रन्थ की रचना की । महाभारत में ब्राह्मणी काशकृत्स्नी द्वारा प्रोक्त मीमांसा का उल्लेख

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

मिलता है । रामायण के अनुसार सीता प्रतिदिन वैदिक सूक्तों द्वारा प्रार्थना किया करती थी और राम की माता कौशल्या रेशमी कपड़े पहनकर अग्निहोम के अनुष्ठान में तत्पर रहती थी, जिसमें वह स्वयं मन्त्रों का पाठ किया करती थी ।

महाभारत में उल्लेख है कि पाण्डवों की माता कुन्ती अथर्ववेद में निष्णात थी । स्त्रियाँ अध्यापन का कार्य भी किया करती थीं । पाणिनीय व्याकरण के अनुसार उपाध्याय की पत्नी को 'उपाध्यायनी' कहा जायेगा और जो स्त्री स्वयं अध्यापन का कार्य करे उसके लिए 'उपाध्याय' शब्द प्रयुक्त होगा । अतः स्पष्ट है कि प्राचीनकाल में स्त्रियाँ भी अध्यापन कार्य किया करती थीं ।

ऋग्वेद के एक मन्त्र से संकेत मिलता है कि सन्तान न होने पर पति के पश्चात् पत्नी को ही सम्पत्ति की स्वामिनी माना जाता था । इस मन्त्र में अन्योदर्य (अन्य स्त्री के गर्भ से उत्पन्न) सन्तान को दत्तक पुत्र बनाकर उसे सम्पत्ति प्रदान करना बहुत वाञ्छनीय नहीं माना गया है । इससे यह संकेत मिलता है कि दत्तक पुत्र की तुलना में स्त्री का सम्पत्ति पर अध्किार होना वैदिक युग में अभीष्ट था । भाई होने की दशा में पुत्री का पैतृक सम्पत्ति में कोई अधिकार नहीं माना जाता था । ऋग्वेद के एक मन्त्र के अनुसार 'तान्व' (औरस) पुत्र के होने पर उसकी बहिन 'रिक्थ' (पैतृक सम्पत्ति) में कोई भाग प्राप्त नहीं करती । पर यदि माता-पिता की सन्तान केवल कन्यायें ही हों, तो वे ही पैतृक सम्पत्ति की अधिकारिणी मानी जाती थी ।

विवाह हो जाने पर भी कन्या धन प्राप्त करने के लिए पितृकुल में आया करती थी । यदि कोई कन्या विवाह न करें तो पितृकुल में ही रहे तो भाई होने की दशा में भी पैतृक सम्पत्ति में उसका हिस्सा माना जाता था । ऋग्वेद के एक मन्त्र में प्रार्थना की गयी है कि हे इन्द्र ! मैं आपसे उसी प्रकार धन की याचना करता हूँ जैसे कि माता-पिता के साथ रहने वाली कन्या घर से अपना हिस्सा माँगती है । धीरे-धीरे इस दशा में परिवर्तन के भी प्रमाण मिलते हैं । इस प्रकार वैदिककालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति उत्कृष्ट एवं परम सम्मानित थी ।

वस्तुतः नारी जीवन की ज्योति है । प्राणों का संबल है, उसे वही सम्मान मिलना चाहिए, जो युगों-युगों से दिया जा रहा है । मानव जाति के अस्तित्व का मूल आधार, नारी शक्ति की देवी रूप में स्थापना ही धरती पर स्वर्ग के अवतरण का आधार बन सकती है । यही आत की सबसे बड़ी सभ्यता, सामाजिकता, नागरिकता एवं मानवता है कि पुरूष नहीं के प्रति अपना संकीर्ण दृष्टिकोण बदले और उसके आध्यात्मिक तत्त्वों, साहस, नैतिकता, सहनशीलता, विवेक चातुर्य, त्याग, बलिदान, समर्पण आदि से अपने आपको राष्ट्र एवं समाज को सुखी एवं समुन्नत बनाये । युग परिवर्तन का भी महान प्रयोजन पूर्ण करने के लिए सर्वतोभोक्त उसी मातृ शक्ति को जाग्रत करना चाहिए, उसकी को बढ़ाना चाहिए और विश्वशांति के उपयुक्त वातावरण बनाने की उसी से याचना करनी चाहिए ।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- पहले स्वयं सम्पूर्ण मुक्तावस्था प्राप्त कर लो, उसके बाद इच्छा करने पर फिर अपने को सीमाबद्ध कर सकते हो। प्रत्येक कार्य में अपनी समस्त शक्ति का प्रयोग करो।
- सभी मरेंगे - साधु या असाधु, धनी या दरिद्र - सभी मरेंगे। चिर काल तक किसी का शरीर नहीं रहेगा। अतएव उठो, जागो और सम्पूर्ण रूप से निष्कपट हो जाओ। भारत में घोर कपट समा गया है। चाहिए चरित्र, चाहिए इस तरह की दृढ़ता और चरित्र का बल, जिससे मनुष्य आजीवन दृढ़व्रत बन सके।
- सन्यास का अर्थ है, मृत्यु के प्रति प्रेम। सांसारिक लोग जीवन से प्रेम करते हैं, परन्तु सन्यासी के लिए प्रेम करने को मृत्यु है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम आत्महत्या कर लें। आत्महत्या करने वालों को तो कभीमृत्यु प्यारी नहीं होती है। संन्यासी का धर्म समस्त संसार के लिए निरन्तर आत्मत्याग करते हुए धीरे-धीरे मृत्यु को प्राप्त हो जाना।

परम्परा से आधुनिकता की ओर- भारत के विशेष संदर्भ में

-डॉ. हसन बानो

वर्तमान कान में भारतीय समाज के अनेक पहलुओं में सामाजिक परिवर्तन देखा जा सकता है। इस सामाजिक परिवर्तनों के लक्ष्यों की अनेक प्रकार से व्याख्या की गयी है। किसी भी समाज के आयाम, काल एवं परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं, क्योंकि मनुष्य की आवश्यकता उसे ढंग से कार्य करने पर बल देती रहती है ताकि उसे अपने जीवन को संचालित करने में कठिनाई का अनुभव न हो और उसकी समस्त सामाजिक आवश्यकताएँ पूरी होती रहे। यही कार्य का ढंग मनुष्य की आदत बन जाती है और इसी आदत की निरंतरता परम्परा में परिवर्तित हो जाती है। प्रकृति के शाश्वत नियम के अनुसार कोई भी स्थिति स्थिर अवस्था में नहीं रहती है। अर्थात् जब परम्परागत तत्वों की जगह नये तत्व स्थान ग्रहण करने लगते हैं तो इस प्रक्रिया को आधुनिकता कहा जाता है।

सन् 1860 में बर्लिन में सांस्कृतिक स्वतंत्रता की कांग्रेस का दसवाँ अधिवेशन मनाया गया और सर्वेक्षण द्वारा यह देखने का प्रयास किया गया कि राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और विचारों के क्षेत्र में स्वतंत्रता के आदर्श की कहाँ तक प्रगति हुई है? यह कहना गलत न होगा कि स्वतंत्रता ही आधुनिकता का मूल तत्व है।

डॉ. एस. सी. दूबे का मत है कि भारत में परम्परा और आधुनिकता विरोधाभास के रूप में मौजूद है। हमनें विकास की योजनाएँ बनायी हैं और यह पाया है कि परम्पराएँ उनमें बाधक सिद्ध हुई हैं। जातीयता व सांप्रदायिकता ने राष्ट्रीय दृष्टिकोण में रोड़ा पैदा किया है। धर्म-निरपेक्षता के मार्ग में पवित्रता और अपवित्रता की प्राचीन धारणा बाधक रही हैं। विवेक के विकास में धर्म और धार्मिक संस्कार तथा कर्मकाण्ड बाधक रहे हैं। प्रदत्त और अर्जित पदों का तालमेल नहीं बैठ पाया है। परम्परा प्रदत्त पदों को चाहती है तो आधुनिकता,भावात्मकता। हिन्दुओं के प्राचीन धर्म के सिद्धांत जैसे कर्म का सिद्धांत, जीवन चक्र का सिद्धांत, संस्तरण, खण्डात्मकता, परलोकवाद, पवितत्रता-अपवित्रता की धारणा, पुरुषों की प्रधानता तथा कौटुम्बिकता आदि को आधुनिकता के लिए त्यागना होगा। इसकी जगह कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन को अपनाना होगा। दूबे ने भारत में आधुनिकीकरण की कई बाधाओं का उल्लेख किया है। आज भारत परम्परा और आधुनिकता की द्धैध में फँसा है, उसके सामने एक द्वन्द है कि वह किस सीमा तक परम्परा को छोड़े और किस सीमा तक आधुनिकता को अपनाएँ।

एक ओर जहाँ परम्परा और आधुनिकता परस्पर सम्बन्धित हैं वहीं दूसरी ओर एक दूसरे को विरोधी रूप में भी देखते हैं। रूडोल्फ ने स्पष्ट लिखा है कि - वर्तमान सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तनों के विश्लेषणों में आधुनिकीकरण का प्रयोग प्रायः परम्परा के विरोधी प्रक्रिया के रूप में किया गया है। पाश्चात्य एवं गैर पाश्चात्य सामाजों की तुलना में भी दोनों अवधारणाओं का व्यवहार हुआ है। ऐसा माना जाता है कि समाज का उद्विकास-प्रगति एवं परिवर्तन सदा परम्परा से आधुनिकीकरण की ओर रहा है। बैन्डिक्स ने 'आधुनिक' की जगह 'विकसित' और 'परम्परागत' की जगह 'अनुगामी' शब्दों का व्यवहार किया है।

समकालीन समाज को पूर्णतया आधुनिक नहीं कहा जा सकता है। जहाँ अमेरिका की तुलना में भारतीय समाज अधिक परंपरावादी है जबकि भारतीय समाज की तुलना में अमेरिकी समाज अधिक आधुनिक है, परन्तु निरपेक्ष रूप में किसी भी समाज को पूर्णतया न तो परंपरागत न तो आधुनिकता की श्रेणी में रखा जा सकता है। प्रो. शिल्स लिखते हैं- यह दिखलाने से कोई भी अच्छा प्रयोजन पूरा नहीं होता मानो कि परंपरागत समाज और आधुनिक समाज में कोई अनुल्लंघनीय खाई है। परंपरागत समाज किसी भी प्रकार से पूरी तरह परंपरागत नहीं है। आधुनिक समाज किसी भी तरह से परम्परा से मुक्त नहीं है।

परंपरा सामाजिक विरासत है जो हजारों हजार साल पुरानी होती है और कोई भी समाज परंपरा के नितान्त अभाव में नहीं चल सकता। परन्तु कहीं पर परंपराओं में परिवर्तन मंद गति में तो कहीं पर तीव्र गति में दिखायी पड़ता है। दूसरे शब्दों में सामाजिक परिवर्तन का स्वाभाविक रूप ही आधुनिक काल में औद्योगिक क्रांति के कारण परंपरा से आधुनिकता की ओर विकास तीव्र गति से हुआ है, और समकालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और अर्न्तराष्ट्रीय परिस्थितियों के कारण आधुनिकता की ओर यह विकास अनिवार्य हो गया। परंपरा का महत्व इस कारण अधिक है कि यह हमें जीवन के प्रत्येक अंग में कार्य करने के अनुभव सिद्ध प्रतिमान देती है तथा आधुनिकता हेतु आधार को तैयार करती है।

* असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

Conscience, the Ultimate Weapon: Shashi Despande's The Last Enemy

- Dr. Naveen Kumar Vishwakarma

The novelist and story writer, Shashi Despande appears to be probing into the psyche of Duryodhan. Conscience is the sole important entity for human being. In fact, the story catches the mental state of Duryodhan after the war gets over and he wants to hide himself where he could rest for some moment. The Last Enemy is written in monologue. It is usual in this mode of expression that the working of the soul is laid before the audience. Additionally, it is uttered when something very significant has happened with the person and he tries to ponder over that or analyze the situation. It is a moment of psychological arousal in which the speaker becomes volatile to give his own point of view. In the words of Abrams, "a monologue is a lengthy speech by a single person…." Monologue is a technique of externalization of most intimate thoughts that a person is expected to express himself at the time of mental turmoil. The situation of Duryodhan, after the war, is highly precarious. Ironically, the person who expected to become the king has staked his life in the hands of his enemy. He clearly reckons the approaching death. Perhaps, this is why he is able to conceive those facts which he could not do in normal situations.

His understanding can be related to the idea of Emily Dickinson in her poem entitled "Success is Counted Sweetest"-Success is counted sweetest-By those who never succeed.

To comprehend a nectar Requires sorest need.

The quoted lines evidently reveal that the poet is of the view that significance of success can only be realized by a person who has not tasted it ever, likewise when a person is in dire need of something only then he realizes real worth of the same. Failures provide opportunity to the people to introspect themselves and value the taste of success. The victorious person forgets everything being happy with his success and celebrating it but those who have to embrace defeat suffer unlimited agonies pondering over time and again pros and cons of their failures. Then they begin to justify as well as perspectivize. their failures in larger terms which console them. Some mysteries of life are uncovered by them which cannot be experienced by victorious persons. There commences the stages of learning of workings of destiny, time, supreme power, metaphysical subjects etc. Same is the case of Duryodhan who could perceive the significance of death when he is on the verge of death. Had he realized it before the war, this situation would have been avoided. But nevertheless the author has viewed it with a different angle and is of the view that Duryodhan is now all set to die and mentally prepared to accept his defeat. At the same time he is able to foresee the significance of death. It is the liberating force and a natural remedy to all mortal troubles. William Shakespeare has expressed the same in his famous tragedy Hamlet thorough Hamlet, "Rest is silence." After death no one needs to bother the mortal problems. Hence Duryodhan getting awakened in conscience transcends the fear that was chasing him throughout the war time. At this very moment he recollects the past : And now, as if this memory had been the first breach in the wall of not knowing, not caring,

*Asst. Professor, English, DAV PG College, Varanasi

not remembering other memories surged in, flooding him, carrying him away into the past.

Duryodhana feels restless at the words of Acharyas who always praised Arjuna and Bhima and never said a word of praise for him. Although his friends regarded him as a great soldier as Bhima or Arjuna, he was ambitious to become the king. When he compares himself with his weak blind father, or that poor fool Yudhisthira as a king he is filled with scorn and genuine amusement.

His memory has always been dominated by the five brothers and Draupadi. They had been like thorns in his side. He could never reconcile himself with the idea that a woman having five husbands could be virtuous. He hates her like anything and holds her responsible for turning his relatives against him. Krishna's preferences for Arjuna has been haunting him ever since. Then he thinks about those who loved him, since he was loyal and generous man. People got attracted towards him. People like Karna, Bhishma and Drona died fighting for him. In the meanwhile he listens the sound as if some people are chasing something. Then it strikes to him that the sound that he is listening is the sound of his enemy approaching to him standing in the water and they would think him…..what? An animal, frightened and in pain, hiding itself?

Thereafter it comes to Duryodhan's mind why he did not die in the battle field while fighting. Was it there in his destiny to face this humiliation of being caught like an animal in a trap? Was this the thing for which he fought? Instead, he dreamt of royal glory, dignity and power. But life is full of irony which is beyond understanding for common human beings. Nobody like Duryodhana. Understands the schematization of fate in his life, So the thought of royalty is followed by the thought of dishonored, defeated man. These thoughts never got reflected to him throughout his life.

When he thinks of his present wretched situation he is filled with scorn : It was for this that he had been born to come and stand here, in the dirty waters of a lake, and be cold, lonely and alone. To know that this was the truth and rest was a dream out of which he had not been awakened.

This realization makes him feel proud because this realization is greater than becoming king. He becomes greater than his enemies in his own perception because he has faced a fearful truth without fear. He was filled with sublime elation because he has defeated the most powerful enemy, the last enemy. He listens the sounds nearing him envisaging that they would humiliate him by such abusive words as cowards, wretch, and frightened animal. All of a sudden he gathers strength and comes out to face his dreadful enemies. He had to fight with Bhima who he disgusted to the last extent. Bhima would be the victor gloating over his dead body celebrating his victory over him. On the contrary, Duryodhan thinks how foolish it would be for Bhima, imaging himself as victor.

Bhima would hardly understand what he discerned few moments ago. He thinks that Bhima would hardly understand the value of death. It is the death that is final truth. It is death that deserves to be aspired for because it is the ultimate destination of man. Rest is silence.

Works cited

Despande Shashi, The Intrision and Other Stories. London: Penguine Books. 1993.

All the quoted lines of the story are from the above work.

Empowering Rural Women through Panchayati Raj

- Sarika Verma

Panchayati Raj was in existence during the Vedic period in ancient India and worked well as the people carried out their personal and official duties based on dharma. After Independence, the Government of India, under the influence of Mahatma Gandhi, was committed to set up Panchayati Raj system to provide real swaraj to the people of rural areas. After passing many recommendations of various committees the 73rd Constitutional Amendment Bill was passed in December 1992. With the passing of 73rd Constitutional Amendment Act, Panchayati Raj institutions ushered in a new era as they got constitutional status and assured 33% reservation for women in grass-roots democracy on the one hand and decision making in the process of rural development on the other.

In the difficult art of politics and public activities women have shown their skills and abilities since ancient times in India. Today, women in India are participating in an increasing number at the highest levels of political and legal fields, and in the decision making process. In spite of tremendous push and pressure of the power and struggle, women have shown considerable skills in holding highly responsible positions as President, Prime Minister, Chief Ministers, Finance Ministers, Government of States, Ambassadors, Delegates to International Bodies, Members of Parliament and Legislative Assemblies, etc. Empowering of women presupposes a dynamic and democratic change in the perception and expectation from women-in our society. To help women, to attain economic independence is the first priority for such a change. Panchayati Raj is the best system for empowering women and its efficient working, clean image and activism can be the basis for good, governance. In case of women gram pradhan representatives, prior association with any form of politics was low, and for most women the act of contesting the first election signaled their entry into active politics. Whatever prior association they had was of a limited nature. Overall, 93% male pradhans reported performing their primary role of organizing and attending gram sabha meetings. Though in smaller numbers than male pradhans, 86% female pradhans reported executing this important role of being a local panchayati raj functionary. However, the participation of women citizens of the village was quite low (less than 25%). The selection of beneficiaries for different schemes is usually done during gram sabha meetings (56%). But at least one-third (31%) of the time, these lists are prepared ahead of the meetings and are present for mere approval by the gram sabhas. Elected representatives (81%) mentioned that most of the time the programme guidelines

*Research Scholar, BHU, Varanasi.

related to drawing up the list of beneficiaries appears to be adhered to. However, the community's perception about beneficiary selection for different schemes and its implementation were not that high. Training in 'Rules and Regulations of Panchayats' and in 'Roles and Responsibilities of Panchayats' are very critical for better performance, but these were attended by only 57% and 43% of the representatives respectively. Irrespective of gender and position, three-fifths apparently felt the need for training on 'Rules and Regulations of Panchayats'. It was found that overall elected women representatives were functioning within an enabling environment at the level of the village, community and the household. The positive impact of working as a panchayati raj functionary is evident from the fact that a sizeable proportion of women representatives perceive enhancement in their self-esteem (79%), confidence (81%) and decision making ability (74%). While no gender discrimination in panchayats was mentioned by 60% of the elected women representatives, acceptability in panchayat meetings and enabling them to raise issues freely was mentioned by 94% women members. . Educated women representatives showed a significant positive correlation with better performance than those who were illiterate. It was suggested that younger and educated women should be encouraged to join politics. 43% of the women elected did not receive any training. Hence training should not only be made mandatory for all elected representatives, but it should also be organized regularly. Women can become better performers by virtue of being politically more aware and experienced, thus effort should be made not only to maintain the representation of women in politics in terms of their percentage, but also their ability in politics.

REFERENCES :

1. A.K. Sinha, 2004: Panchayati Raj and Empowerment of Women. New Delhi: Northern Book Centre.

2. Human Development Report, 1997, U.N.D.P.

3. Mohan Shantha (et al), 2004: Women and political participation in India, Baseline Report. International Women's Rights Action Watch Asia Pacific, Malaysia.

4. Thematics Journal of Arts & Culture, Vol 1. Issue 4. Jan 2012. pp. 61-63.

5. United Nations Development Fund for Women (UNIFEM), Sep. 2006, News Release.

Yojana august 2012.

सूचना का अधिकार : प्रजातांत्रिक हथियार

-- रेनू यादव, रवि सिंह

प्रजातंत्र अर्थात् एक ऐसी राजकीय प्रशासनिक व्यवस्था जिसमें राज्य के समस्त नागरिक अपने चयनिय प्रतिनिधियों के द्वारा राज्य की शाासन व्यवस्था का प्रभावी संचालन करते है। यह आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है कि प्रतिनिधिगण अपने चयनकर्ताओं के प्रति उत्तरदायी हो, जिसके लिए एक प्रभावी संवाद व्यवस्था में बहुत सी ऐसी जानकारियाँ भी होती है जिनको यदि समस्त नागरिकों को दे दी जाय तो इससे राष्ट्र के मौलिक, आर्थिक अथवा भौतिक वस्तुस्थिति के विरुद्ध इस्तेमाल होने का डर होता है, फिर भी ज्यादातर प्रशासनिक संरचनाओं की जानकारियाँ ऐसी दी जाती हैं जिन्हें यदि आम नागरिक को दी जाएँ तो यह राष्ट्र के चेतना अवस्था के लिए उपयोगी हो सकती हैं। अभी तक के शासन व्यवस्था में सरकार अर्थात् जन प्रतिनिधियों के द्वारा संचालित शासनिक व्यवस्था की ज्यादातर जानकारियाँ ऑफिसीयल सीक्रेट के नाम पर आम नागरिक को मुहैय्या नहीं करायी जाती है ऐसी परिस्थिति में सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 का आना सम्पूर्ण शासनिक व्यवस्था का पटाक्षेप करता है जो राष्ट्र हित में एक अच्छा कदम है।

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 जम्मू एवं कश्मीर को छोड़कर पूरे देश में लागू होता है तथा राष्ट्र के समस्त नागरिक को, कुछ सूचनाओं को छोड़कर जो किसी भी लोक अधिकारी के पास (पब्लिक अथॉरिटी) उपलब्ध हो को प्राप्त करने का कानूनी अधिकार प्रदान करता है; यही नही लोकाधिकारी मांगी गयी सूचनाओं को प्रदान करने में बिना किसी उपयुक्त कारण के असमर्थ रहता है तो अधिनियम के अन्तर्गत उस पदाधिकारी को दण्डित करने का भी प्रावधान है। स्वाभाविक रूप से आज की तिथि में कोई भी लोक सेवक वह बड़ा हो अथवा छोटा अपने उत्तरदायित्व से मुँह नहीं मोड़ सकता।

उक्त अधिनियम के आगमन से पूर्व भी आम नागरिक को यह संवैधानिक अधिकार प्राप्त थे परन्तु लोकसेवकों को उत्तरदायी ठहराने एवं उनको दण्डित करने की कोई वैधानिक व्यवस्था नहीं थी। परिणामस्वरूप लोक सेवक मनमाना करने में सफल हो जाते थे परन्तु आज परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं तथा लोक सेवक अपनी वास्तविक स्थिति पहचानने लगे हैं।

ब्रिटिश शासन काल से चले आ रहे कानून की दुहाई देकर नागरिकों को लोक अधिकारी महत्वपूर्ण सूचनाओं को गोपनीय बनाकर उसका भयादोहन करते रहे थे। लार्ड कर्जन के समय बनाया गया कानून ऑफिसीयल थे सीक्रेट अधिनियम भी इन्हीं में से एक है। इसके अनुसार सरकारी दस्तावेजों को साधारण जनता से गोपनीय रखने का उद्देश्य देश की सुरक्षा व एकता को बनाये रखना था किन्तु व्यवहार में वे हर तथ्य को गोपनीय बनाने की फिराक में रहते थे। इसी कारण नागरिकों को न केवल अपने मामले में बल्कि सार्वजनिक मामलों में भी सच्चाई का पता नहीं चल पाता था। वर्तमान अधिनियम के अन्तर्गत प्रत्येक लोक अधिकारी का यह दायित्व होगा कि नागरिक द्वारा माँगी गई सूचनाएँ उसे प्रदान करें तथा सभी दस्तावेजों का विवरण रखे जो परिचालन की अपेक्षा के अनुरुप हो। इन दस्तावेजों को ठीक तरीके से कैटलागिग तथा सूचीबद्ध होना चाहिए। तथा ऐसे अन्तराल पर प्रकाशित होना चाहिए जैसा कि सरकार या सक्षम अधिकारी निहित करे। इस अधिनियम का उद्देश्य प्रशासन में खुलापन, पारदर्शिता तथा उत्तरदायित्व को बढ़ाना है धारा 5 के अनुसार प्रत्येक लोक प्राधिकारी इस अधिनियम के लागू होने के 100 दिन के भीतर इतने केन्द्रीय और राज्य सूचना अधिकारियों की नियुक्ति करेगा जितने आवश्यक हों। ये सूचना अधिकारी किसी भी व्यक्ति को सूचना प्रदान करेगें जो इसके लिए आवेदन दे। कोई भी व्यक्ति जो सूचना प्राप्त करने के इच्छुक हैं वह इसके लिए लिखित या इलेक्ट्रानिक मीडिया द्वारा हिन्दी या अंग्रेजी में लोक सूचना को आवेदन देगा (धारा–6)। लोक सूचना अधिकारी आवेदन पाने के पश्चात् यथाशीघ्र किन्तु 30 दिन के भीतर विहित शुल्क के भुगतान पर या तो सूचना देगा

* शोध छात्रा, राजनीतिशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
* शोधछात्र, अर्थ ाास्त्र विभाग, डीएवी पीजी कालेज, बीएचयू, वाराणसी।

अथवा धारा 8 और 9 के अन्तर्गत विहित कारणों के आधार पर इन्कार कर देगा। किन्तु जहाँ सूचना किसी व्यक्ति के प्राण एवं स्वतंत्रता से सम्बन्धित है उसे आवेदन के पश्चात् 48 घंटे के भीतर प्रदान कर दिया जाना चाहिए। धारा 8 और 9 में उन परिस्थितियों का उल्लेख किया गया है जिसके आधार पर सूचना देने से इन्कार किया जा सकता है। लोक सूचना अधिकारी के निर्णय से पीड़ित व्यक्ति 30 दिनों के भीतर ऐसे अधिकारी के पास अपील कर सकेगा जिसको विहित किया जाए (धारा–12)। धारा 23 के अन्तर्गत यह उपबन्ध है कि इस अधिनियम के अन्तर्गत किसी भी आदेश के विरुद्ध किसी न्यायालय में कोई भी मामला नहीं लाया जा सकता। धारा 24 में उन संगठनों का उल्लेख जिनके विरुद्ध यह अधिनियम लागू नहीं किया जायेगा अर्थात् केन्द्रीय सरकार द्वारा दूसरी अनुसूची में विनिर्दिष्ट गुप्तचर या सुरक्षा सम्बन्धी संगठन। धारा 20 के अधीन यह उपबन्ध है कि सूचना अधिकारियों द्वारा बिना उचित कारण के आवेदन लेने या सूचना न देने पर केन्द्रीय सूचना आयोग सम्बन्धित अधिकारी पर 250 रूपये प्रतिदिन की दर से जुर्माना लगा सकता है जब तक सूचना नहीं प्रदान की जाती है। धारा 12, 13 और 14 के अन्तर्गत केन्द्रीय सूचना आयोग के गठन, सेवा शर्तें और पदच्युति से सम्बन्धित उपबन्ध है। धारा 15, 16 और 17 के अधीन राज्य सूचना आयोग के गठन उनकी पदच्युति से सम्बन्धित उपबन्ध दिये गये हैं।

परन्तु वर्तमान में सूचना के अधिकार का दुरुपयोग भी किया जा रहा है। प्रायः कुछ ऐसी सूचनाएँ मांगी जाती है जो उनके लिए किसी काम की नहीं होती या फिर एक ही आवेदन पर अनावश्यक और असंख्य सूचनाएँ मांग ली जाती है, जिन्हें प्रदान करने में अधिकारी को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है जिससे बहुत समय की बर्बादी होती है और जिन सूचनाओं का वर्तमान में कोई महत्व नहीं होता है।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि सूचना का अधिकार अधिनियम पारित हो जाने से प्रेस की स्वतंत्रता भी निश्चित रूप से सशक्त हो गयी है क्योकि अभी तक प्रायः देखा गया था कि गोपनीयता कानून का आधार बनाकर सरकारी दस्तावेजों से प्रेस को दूर रखने का प्रयास किया जा रहा था। प्रेस आम नागरिक की ओर से उससे सम्बन्धित व सार्वजनिक हित से जुड़े मामलों को उद्घाटित करके लोकतंत्र को मजबूत करता है।

भ्रष्टाचार को मिटाने तथा पारदर्शिता लाने में सूचना का अधिकार एक सशक्त माध्यम के रूप में काम करता है जिसमें हाल ही में कई कैबिनेट मंत्रियों जैसे– ए.राजा, सुरेश कलमाड़ी एवं श्रेणी 'ए' के लोकसेवक आदि के द्वारा बड़े पैमाने पर घोटालों को उजागर किया गया है तथा अगर अन्ना हजारे द्वारा समर्थिक जनलोकपाल पारित हो जाता है तो सूचना का अधिकार एवं जनलोकपाल विधेयक मिलकर देश के 70 से 80 फीसदी भ्रष्टाचार एवं घोटालों को कम करके हमारे प्रजातांत्रिक व्यवस्था को स्वच्छ एवं पारदर्शी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे तथा देश को लोक कल्याण की राह पर ले जाते हुए विधि का शासन स्थापित करेंगे। निःसंदेह सूचना का अधिकार देश में पारदर्शी और उत्तरदायी प्रशासन की स्थापना करने के लिए एक सराहनीय कदम है।

संदर्भ ग्रन्थ–सूची

1. डॉ0 जयनारायण पाण्डेय : भारत का संविधान, सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी, इलाहाबाद, 2006, पृ. 166–167.

2. हरकिशन संतोषी : दलितों के दलित, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 2009, पृ. 247–248.

3. कुरुक्षेत्र : अप्रैल 2009, पृ. 23.

4. सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005. सनदर्शिता, प्रथम संस्करण, नवम्बर 2010. काशी जनसूचना फाउण्डेशन वाराणसी.

5. सूचना के अधिकार 'आग्रह' वर्ष–1, अंक–11, नवम्बर 2011, प्रकाशक– काशी जनसूचना फाउण्डेशन, वाराणसी.

6. रिसर्च जर्नल ऑफ आर्ट, मैनेजमेंट एण्ड सोशल साइंसेज, वाल्यूम–3, सितम्बर 2011

काशी की तीर्थयात्राएँ

-विनोद कुमार

काशी इतिहास और परंपरा दोनों ही दृष्टियों से विश्व की प्राचीनतम् नगरियों में से एक है, जिसका महत्व धर्म और संस्कृति के समन्वयमूलक जीवन प्रवाह के कारण विश्व की अन्य किसी भी प्राचीन नगरी के तुलना में अत्यधिक है। विश्वेश्वर की नगरी काशी में गंगा का सर्वाधिक माहात्म्य है। काशी ही विश्व की एक मात्र नगरी है जो एक नगर है, जनपद है, प्रदेश है और राजधानी भी रही है। शिव और गंगा की पावन एवं दिव्य उपस्थिति में जहाँ मोक्षदा काशी को भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक रूप से पवित्रता का पर्याय माना जाता है। काशी शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम अथर्ववेद के पिप्पलाद शाखा में पाया जाता है और इसके बाद शतपथ ब्राह्मण में तथा बाद में महाजनपदकाल से इसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व विद्यमान हो जाता है।

काशी में पंचदेवपूजन की परंपरा सदैव ही रही है। केवल एक देवता का पूजन करने वालों की संख्या प्रायः नगण्य ही दिखती है। तपस्वियों के अतिरिक्त प्रायः सभी लोग यहाँ पंचदेव-पूजन करने आते हैं। यह परंपरा तीर्थयात्राओं में भी स्पष्टता से विद्यमान है।[1]

यात्राओं में कुछ नैत्यिक, नैमित्तिक और विशेष पर्वों पर होती है। नित्य की यात्राओं में भी शारीरिक शक्ति तथा समय की उपलब्ध का ध्यान रखना पड़ता है। इस प्रकार छोटी-बडी सभी प्रकार की यात्राओं का वर्णन तथा उनका क्रम पुराणों एवं परम्पराओं में मिलते हैं। काशीवास करने वाले लोग जिनको धार्मिक कृत्यों तथा यात्राओं के लिए अधिक समय उपलब्ध था बड़ी यात्राएँ करते थे। अन्य लोग छोटी यात्राओं में ही संतोष कर लेते थे। परन्तु कोई न कोई यात्रा प्रतिदिन आवश्यक मानी जाती थी और धर्मप्राण काशीवासी उसको आज भी अनिवार्य मानते हैं।[2] काशीखण्ड में[2] यह विशेष रूप से उल्लिखित है-

न वन्ध्यं दिवस कुर्याद्विना यात्रा क्वचित्कृती।[3]

काशी में आज भी रूढ़ि रूप में ही सही लेकिन यह निवर्तमान है। इसके अतिरिक्त एक पंचतीर्थी यात्रा भी विशेष रूप से उल्लिखित है। एक और यात्रा जो काशी को पवित्रता प्रदान करती है- 'पंचक्रोशी यात्रा' जो एक दम आधुनिक काल में विकसित हुई है। जिसकी सीमा में वाराणसी के सभी मंदिर विद्यमान हैं और यह अपने पांच पड़ाव में निहित है। यह यात्रा मणिकर्णिका घाट से प्रारम्भ होकर दक्षिण-पश्चिम कंदवा को जाती है, वहाँ से राजातालाब के दक्षिण भीमचण्डी के मंदिर को फिर वहाँ से पुल पार कर पाँचों पंडवा तालाब होते हुए शिवपुर को वहाँ से संगम के पास कपिलधारा और केटवा के मंदिर होते हुए फिर मणिकर्णिका पर समाप्त होती है।[4]

उपर्युक्त यात्राओं के अतिरिक्त एक तीर्थ से पंचतीर्थी यात्राओं तक का भी वर्णन है। एकायतन से चतुर्दश-आयतन तक की और उनके संयोग से बयालीस आयातनों का विधान है। इन यात्राओं के साथ-साथ विघ्नकर्त्ता विनायकों तथा क्षेत्र की चण्डिकाओं की यात्रा भी काशीवास में विघ्नों के निवारण के लिए कही गई है। जिनकी सूची एवं संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :-

1. नित्ययात्रा :- ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में इसका विधान यह है कि प्रातः काल उठकर ढुण्ढिराज, भवानी शंकर, कालभैरव, दण्डपाणी, छप्पन विनायक, आदिकेशव तथा नवचण्डिकाओं को मानसिक प्रणाम करके नित्य कर्म में लगे।

2. अन्तर्गृह-यात्रा :- यहाँ दो प्रकार की यात्रा का प्रचलन है -

(अ) विश्वेश्वर की अंतर्गृह-यात्रा।

(ब) केदारेश्वर की अंतर्गृह-यात्रा।

यह नित्य करने वाली यात्राए हैं :''अंतर्गृहस्य यात्रा वै

* (शोध छात्र) इति. विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

कर्तव्या प्रतिवासरम।''[5]

(अ) विश्वेश्वर की अंतर्गृह-यात्रा :

यह यात्रा बहुत छोटी नहीं है, अतएव जो लोग सांसारिक प्रपंच से निवृत्त होकर काशीवास करते हैं, यह विशेषतः उनके लिए है। वर्तमान समय में सैकड़ों व्यक्ति इस नित्य यात्रा को करते हैं और परवासी के लिए तो यह अत्यंत आवश्यक बताया गया है।

(ब) केदारेश्वर की अंतर्गृह-यात्रा :

यह यात्रा पहले हरिश्चन्द्र घाट पर स्नान करके प्रारम्भ होती थी परन्तु वहाँ श्मशान हो जाने से तथा केदारेश्वर का स्थान बदलने से अब केदारघाट पर स्नान करके और केदार जी के मंदिर में वर्तमान देवताओं के पूजन से प्रारम्भ होती है और सभी देवताओं के दर्शन पूजन के उपरांत पुनः केदारघाट पर स्नान तथा केदार के दर्शन पूजन से समाप्त होती है। तत्पश्चात् करीब 125 देवताओं के दर्शन विधान है।

3. एकायतन-यात्रा : एकायतन यात्रा का वर्णन 'सनत्कुमारसंहिता' में मिलता है। इसमें मणिकर्णिका-स्नान के उपरांत विश्वेश्वर-दर्शन का विधान है।

4. द्विरायतन-यात्रा : मणिकर्णिका में स्नान तथा मणिकर्णीश्वर का दर्शन-पूजन और ज्ञानवापी में स्नान तथा विश्वेश्वर का दर्शन-पूजन यही द्विरायतन यात्रा का क्रम है।

5. त्रिरायतन-यात्रा : इस यात्रा में अविमुक्तेश्वर, स्वर्लीनेश्वर (नया महादेव, प्रहलाद घाट पर) तथा मध्यमेश्वर (मैदागीन के उत्तर) का दर्शन-पूजन होता है।

6. चतुरायन-यात्रा : इस यात्रा में मढियाघाट वरुणातट पर शैलेश्वर, वरुणागंगासंगम के पास संगमेश्वर, प्रहलाद घाट के पास स्वर्लीनेश्वर तथा मैदागिन के उत्तर मध्यमेश्वर का दर्शन-पूजन करने का विधि-विधान है।

7. पंचायतन-यात्रा : इस यात्रा में कृत्तिवासेश्वर, मध्यमेश्वर, ओंकारेश्वर, कपर्दीश्वर और विश्वेश्वर का-पूजन होता है। लिंगपुराण के अनुसार ओंकारेश्वर के पाँचों अंगों को भी पंचायतन कहा जाता है तथा उन्हीं का दर्शन-पूजन पंचायतन यात्रा होती है।

8. षडंग-यात्रा : इस यात्रा में अविमुक्तेश्वर, स्वर्लीनेश्वर, ओंकारेश्वर, चण्डेश्वर, मध्यमेश्वर तथा कृत्तिवासेश्वर के दर्शन-पूजन क्रमवार होता है।

9. अष्टयतन-यात्रा : ईश्वरगंगी तालाब में स्नान तथा समीप के योगेश्वर महादेव का दर्शन-पूजन, तदुपरांत औसानगंज के गोलाबाग में उर्वशीश्वर की, खोवा बाजार में लांगलीश्वर की, काशीपुरा में महारानी बेतिया के मंदिर के पास आषाढीश्वर की, राजा दरवाजे में भारभूतेश्वर की, सिगरा में टीले पर त्रिपुरांतकेश्वर की, विश्वनाथ मदिर के समीप अक्षयवट में नकुलीश्वर की तथा बडे देव पर पुरुषोत्तम भगवान के मंदिर में, त्र्यम्बकेश्वर की अर्चना इस यात्रा का क्रम है।

10. एकादश आयतन-यात्रा : ईश्वरगंगी तालाब में स्नान के बाद योगेश्वर, उर्वशीश्वर, नकुलीश्वर, आषाढीश्वर, भारभूतेश्वर, लांगलीश्वर, त्रिपुरांतकेश्वर, मनःप्रकामेश्वर, प्रीतिकेश्वर, मदालसेश्वर तथा तिल-पर्णेश्वर का दर्शन-पूजन इस यात्रा में होता है।

11. चतुर्दश आयतन-यात्रा : चतुर्दशायतन यात्रा में प्रत्येक मास की कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ करके चतुर्दशी तक एक-एक आयतन का नित्य दर्शन-पूजन करने का नियम है, परन्तु यह संभव न हो सके तो कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन पूरी यात्रा करनी चाहिए।

12. उत्तर दिक्-यात्रा या दक्षिण दिक्-यात्रा :

(अ) उत्तर दिक्-यात्रा या उत्तर मानस-यात्रा : यह यात्रा मुक्तिमण्डप से आरम्भ होकर दण्डपाणी और मोदादि पंच विनायकों के दर्शन के बाद विश्वनाथ के दर्शन-पूजन का विधान है। इसमें लगभग 102 देवताओं के दर्शन होते हैं।

(बा) दक्षिण दिक्-यात्रा या दक्षिण मानस-यात्रा : यह यात्रा विश्वेश्वर के दर्शन से प्रारम्भ होकर लगभग 98 देवी-देवताओं के दर्शन उपरांत समाप्त होती है।

13. जलतीर्थों की यात्राएँ :- पुराणों में जलतीर्थों का वर्णन मिलता है। जिनके मुख्यतः निम्नलिखित यात्रा का विवरण प्रस्तुत है -

(क) एकतीर्थी यात्रा - मणिकार्णिका में नित्य स्नान

करना चाहिए।

(ख) द्वितीर्थी यात्रा - प्रातः पंचगंगा दोपहर में मणिकर्णिका में स्नान करना चाहिए।

(ग) त्रितीर्थी यात्रा - पहले दशाश्वमेध पर प्रयागतीर्थ पर पंचगंगा तथा बाद में मणिकर्णिका में ।

(घ) चतुस्तीर्थी यात्रा - पिलिप्पिला तीर्थ, पंचगंगा, मणिकर्णिका तथा अंत में ज्ञानवापी में स्नान करें।

(ङ) पंचतीर्थी यात्रा - इसका वर्णन स्पष्ट नहीं मिलता।

(च) षडंग तीर्थ यात्रा - वरुणासंगम पर पादोदक तीर्थ, असीसंगम, मणिकर्णिका, ब्रह्मेश्वर के समीप ब्रह्महृद तथा पंचगंगा इन छह तीर्थों के स्नान को षडंगतीर्थी कहते हैं।

14. नवगौरी-यात्रा : यह यात्रा प्रत्येक मास के शुक्लपक्ष की तृतीया को होती है, परन्तु चैत्र शुक्ल-तृतीया का विशेष माहात्म्य है। प्रतिपदा से नवमी तक प्रत्येक दिन एक-एक गौरी का क्रम से पूजन होता था।

15. नवदुर्गा-यात्रा : दुर्गाकुण्ड की दुर्गा जी की यात्रा प्रत्येक अष्टमी तथा चतुर्दशी को होती है और यदि इन दिनों मंगलवार पड़ जाए तो माहात्म्य बढ़ जाता है। तथा दोनों नवरात्रों में प्रतिदिन एक-एक देवीपीठ की यात्रा क्रम से होती है।

16. विघ्नेश्वर-यात्रा या विनायक-यात्रा : लिंगपुराण में इस यात्रा के दो रूप दिखाई पड़ते हैं। एक तो तीर्थ में वर्तमान विनायकपीठों की अर्चना के रूपों में तथा दूसरा इस उद्देश्य से की विघ्नकर्त्ता गणेश काशीवास में विघ्न न करें।

17. विष्णु-यात्रा : काशी में प्रत्येक एकादशी को विष्णुयात्रा की परिपाटी है। उस दिन लोग अपनी शक्ति तथा सुविधा के अनुसार विष्णुपीठों का दर्शन-पूजन करने का विधि-विधान बनाया गया है।

18. आदित्य-यात्रा : काशी में 14 आदित्यपीठ हैं, जिनकी यात्राओं के दिन अलग-अलग हैं, लेकिन रविवार को आदित्य यात्रा सर्वत्र ही होती है और यदि उस दिन षष्ठी या सप्तमी भी मिल जाए, तो बहुत पवित्र भोग माना जाता है।[6]

19. भैरव-यात्रा : 'कृत्सकल्पतरू' में भैरवयात्रा का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता लेकिन काशीखण्ड में आठों दिशाओं में भैरवों की स्थापना का वर्णन है। परन्तु वर्तमान यात्राक्रम में यह दिशाओं वाली बात नहीं मिलती। यह एक शोध का विषय है।[7]

20. सप्तर्षि-यात्रा : काशीखण्ड के अट्ठारहवें अध्याय में सप्तर्षियों द्वारा स्थापित शिवलिंगों का स्थान-निर्देश तथा माहात्म्य मिलता है। शिष्टाचार से ऋषिपंचमी के अतिरिक्त शुक्लपक्ष की सभी पंचमियों को भी यह यात्रा होती है।

21. द्वादश-यात्रा : यह सोमनाथ के मान मंदिर घाट से प्रारम्भ होकर 12 तीर्थों का दर्शन के उपरान्त अंत में विश्वेश्वर के दर्शन से समाप्त होता है।

22. सप्तपुरी-यात्रा : अयोध्यादि सातो पुरियाँ काशी में वर्तमान है। उन पुरियों की यात्रा होती है। यह यात्रा नित्य करने का विधान है लेकिन इसकी विशेषता यह है कि इसमें किस ऋतु में किस पुरी की यात्रा करना चाहिए। यह भी यहाँ उल्लिखित है। यह सब पुराणों में वर्णित है।

23. पंचक्रोशी-यात्रा : यह ऊपर वर्णित है।

24. विविध-यात्राएँ : विशेष यात्राओं के अतिरिक्त बहुत सी यात्राएँ ऐसी हैं, जो विशिष्ट माह में तथा विशेष दिन/तिथियों में सम्पन्न की जाती है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. सुकुल पं कुवेरनाथ वाराणसी वैभव, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पृ0 175।
2. वही।
3. काशीखण्ड 100/101।
4. डॉ. मोतीचन्द्र, काशी का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी पृ0 302।
5. काशीखण्ड 100/76।
6. काशीदर्पण, पृ0 136 का हिन्दी में अर्थ।
7. त्रि0से0 पृ0 165।

आत्महत्या : एक विश्लेषण

रागिनी मिश्रा

''जिन्दगी कितनी खुबसूरत है, ये देखने के लिए हमें ज्यादा दूर जाने की जरूरत नहीं है जहाँ हम अपनी आँखें खोल लें वहीं हम इसे देख सकते हैं।''

कवि की उपरोक्त पंक्तियों में जीवन के प्रत्येक क्षण को बहुत ही सुन्दर बताया गया है। अगर ध्यानपूर्वक हम इन पंक्तियों को पढ़े तो इसमें एक बात छिपी हुई है, कि हम अपनी आँखों से उस सुन्दरता को देखें। कहा भी जाता है कि कोई चीज सुन्दर नहीं होती और न ही भद्दी होती है। यह केवल देखने वाले के न.जरीये पर निर्भर करती है। हमारा जीवन भी कुछ ऐसा ही है। कोई इसे पल-पल सुन्दर ढंग से जीता है तो कोई इससे दूर भागता है और स्वयं को खत्म कर देता है। राष्ट्रीय अपराध अभिलेख शाला (एन.सी.आर.बी.) के सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार पिछले वर्ष लगभग एक लाख पैंतीस हजार व्यक्तियों ने आत्महत्या कर अपना जीवन समाप्त कर दिया। एन.सी.आर.बी. ने बताया कि लगभग एक घंटे में 15 लोग आत्महत्या करते हैं और 371 लोग एक दिन में। भारत में मरने वाले प्रति एक लाख लोगों में से ग्यारह प्रतिशत लोगों की मृत्यु का कारण आत्महत्या होती है। यदि आत्महत्या करने वाले लोगों की उम्र पर ध्यान दिया जायें तो प्रायः उसमें 15 वर्ष से 45 आयुवर्ग तक के सभी स्त्री-पुरुष आते हैं। आँकड़े बताते हैं कि महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों कि संख्या आत्महत्या के मामलों में अधिक पाई जाती है।

व्यक्ति के जीवन का यह समय (15-45 वर्ष) असीम ऊर्जा एवं साहस से परिपूर्ण होता है। यह चट्टान को भी रेत बनाने की ताकत रखता है। असंभव को भी संभव कर दिखाता है। फिर ऐसा क्या हो जाता हैं कि वही व्यक्ति एक

समय में इतना दुर्लब हो जाता है कि वह अपने जीवन को ही मिटा देता है। आत्महत्या के अनेक मामलों का अध्ययन करने पर पाया गया है कि 95 प्रतिशत स्थितियों में एक मुख्य वजह तनाव और अवसाद होता है। व्यक्ति के ऊपर अनेक तरह के दबाव इसी समय काल में होते है, जैसे-पढ़ाई का, अच्छे परिणम का, मनपसन्द विषय के साथ अच्छे कालेज में प्रवेश पाने का, माता-पिता की उम्मीदों पर खरा उतरने का, अपनी पहचान बनाने का एक सम्मानजनक नौकरी पाने का, एक बढ़िया रहन-सहन स्तर बनाने का इत्यादि। ये सभी चीजे हमारे जीवन में एक अहम् भूमिका निभती हैं, और इन्हें हासिल करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रयास करना चाहिए। प्रयास और मेहनत से हीं व्यक्ति अपनी इच्छित वस्तु को प्राप्त करता है और सफल हो जाता है। किन्तु कई बार हमारे प्रयास और कड़ी मेहनत के बावजूद भी। हमें कोई एक सफलता नहीं मिल पाती है, तब हमें तनाव उत्पन्न होता है और यह धीरे-धीरे बढ़कर अवसाद का रूप ले लेता है, जो व्यक्ति को मानसिक रूप से बीमार बनाता है और व्यक्ति उस एक असफलता के कारण इतना अधिक तनाव में आ जाता है कि वह अपने पीछे की सभी सफलता को भूल जाता है। और हमेशा उसी एक असफलता के विषय में सोचता है। जब तक यह सोच सीमित रहती है व्यक्ति अन्य कार्यक्रमों का नियोजन करता है, लेकिन जब यह सोच उस पर प्रभावी हो जाता है, तो व्यक्ति के सभी कार्य प्रभावित हो जाते हैं, और तब व्यक्ति अपने अन्य सभी कामों में अपना पूर्ण योगदान नहीं दे पाता है। इसके फलस्वरूप इसे दूसरी असफलता मिलती है। और ठीक इसी तरह तीसरी और उसके बाद असफलता का सिलसिला जारी रहता है। तब व्यक्ति चारों तरफ से तनाव में घिर जाता है। तनाव की मात्रा बढ़ने से व्यक्ति में धीरे-धीरे अवसाद की उत्पत्ती हो जाती है और व्यक्ति अपने आप को एक नकारात्मक आवरण

से ढका हुआ पाता है। व्यक्ति खुद को अयोग्य एवं मूल्यहीन समझने लगता है। वह स्वयं का नकारात्मक मूल्यांकन करने लगता है, उसे लगता है कि उसके सभी मित्र एवं साथी सफलता की सीढ़िया चढ़ गए और वह पीछे रह गया।

अवसाद से ग्रसित व्यक्ति खुद को अपने दोस्तों, रिश्तेदारों, परिवारजनों, सहयोगी, साथी तथा समाज से दूर करने लगता है। वह सदैव अकेले में रहना चाहता है। वह हमेशा नकारात्मक बातें करता है। खुद को असहाय समझता है और उसे लगता है कि वह किसी योग्य नहीं है। उसका जीवन व्यर्थ हो गया। क्योंकि उसने वांछित सफलता नहीं प्राप्त किया। अवसादी व्यक्ति को ऐसा लगता है कि उसके दोस्त, रिश्तेदार, परिवार के सदस्य और समाज उसे एक असफल एवं अयोग्य व्यक्ति समझेगें। ऐसे में व्यक्ति किसी का भी सामना नहीं करना चाहता हैं

* एम. ए. चतुर्थ सेमेस्टर (मनोविज्ञान), डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

और धीरे-धीरे वह निराशा के उस गहवर में पहुँच जाता है, जहाँ उसे मृत्यु ही उसकी संगिनी लगती है। अतंतः व्यक्ति आत्महत्या का रास्ता चुनता है, और अपने इस अमूल्य जीवन को खत्म कर देता है। इसके अतिरिक्त पारिवारिक टूटन, सम्बन्ध-विच्छेद, यौन-शोषण, धोखा, किसी प्रिय की मृत्यु, प्राकृतिक आपदा आदि परिस्थितजन्य संकट से उत्पन्न तनाव की अवसाद का रूप ले लेते है, और व्यक्ति का समायोजन न स्थापित होने के कारण आत्महत्या का रास्ता चुन लेता है।

अनेक प्रकार के स्त्रोतों से मिले आँकड़े बताते है कि 1982 में आत्महत्या दर लगभग 6 प्रतिशत भी जो बढ़कर 2012 में लगभग 12 प्रतिशत हो गई है। 1982 में 2012 की अपेक्षा हमारे पास न तो इतने विकसित साधन थे और न ही इतनी सारी जानकारियाँ, फिर भी उस समय आत्महत्या की दर कम थी। आज जब हम इतने विकसित हो गये। हमारे पास इतनी सारी विज्ञान की देने और उपलब्ध जानकारियाँ हैं, कि हम प्रत्येक समस्या को पहले ही भाप लेते है, हर समस्या के समाधान का एक से अधिक विकल्प होता है। तब भी आत्महत्या दर बढ़ रही है।

आज के इस दौर में प्रत्येक व्यक्ति अपना एक-एक क्षण कार्य में लगा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति विकास के पथ पर

तेजी से अग्रसर हो रहा है, वह अपनी जरूरत को पूरा करने के साथ-साथ अपनी मनोकामनाओं के पूर्ति के लिए दौड़ लगा रहा है। उसे खुद ही नही पता है कि वह दौड़ कर कहाँ जाना चाहता है। आज हमारे पास स्वयं के लिए ही समय नहीं होता है कि हम थोड़ा आराम से बैठकर नाश्ता कर लें या शाम की चाय सपरिवार सभी के साथ में पी ले। आज का प्रत्येक व्यक्ति स्व-केन्द्रित होता है। उसके पास किसी की बात सुनने का या किसी की समस्या को हल करने में मदद करने का समय ही नहीं है।

व्यक्ति के साथ समस्यायें आज से पहले भी थीं और आज से जटिल भी थीं, क्योंकि उस समय समाज में इतनी प्रगतिशीलता न थी, फिर भी इतना न तनाव था और न ही इतनी आत्महत्या की घटनायें। तब परिवार संयुक्त होता था। यदि कोई एक व्यक्ति किसी समस्या से परेशान रहता था तो घर का कोई न कोई सदस्य इसे पहचान लेता था और फिर सभी सदस्य मिल कर समस्या का समाधान कर देते थे। आज एकल परिवार में तीन चार लोग रहते हैं। और सब अपने में व्यस्त होते है। आज हम इलेक्ट्रानिक उपकरणों से घिर गये हैं। हम घर के सदस्यों, परिजनों एवं रिश्तेदारों से दूर मशीन के पास बैठकर मशीनी मनुष्य बर कर रह गये हैं।

व्यक्ति अपने जीवन में छोटे-छोटे लक्ष्यों कर निर्धारण जीवन को गतीशील बनाने के लिए करता हैं न की जीवन की धारा को रोकने के लिए। प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति की एक अमूल्य रचना है, प्रत्येक में एक विशिष्ट गुण मौजुद है, मूल्यहीन तो ईट-पत्थर भी नहीं हैं। किसी कार्य में यदि हम बार-बार असफल हो जायें तो इसका अर्थ यह नहीं कि हम अयोग्य है। कहा गया है कि असफलता महज एक अवसर है, फिर से नयी शुरूआत करने का इस बार और बुद्धिमानी से और अपनी मंजिल तक पहुँचने का ..... चाणक्य कहते है, कि कोई काम शुरू करने से पहले स्वयं से तीन प्रश्न कीजिए - (1.) मैं यह क्यों कर रहा हूँ? (2.) इसका परिणाम क्या होगा? एवं (3.) क्या मैं सफल होऊगाँ? और जब गहराई से सोचने पर इन प्रश्नों के सन्तोषजनक उत्तर मिल जायें, तभी आगे बढ़े। चाणक्य के

तीनों ही प्रश्न किसी भी कार्य की सफलता के लिए आवश्यक है। जब व्यक्ति कोई काम, लक्ष्य एवं परिणाम के विषय में सोचें बिना ही करता है, तो उसमें एक भटकाव एवं असंतोष उत्पन्न होता है। चाणक्य का तीसरा प्रश्न अति महत्वपूर्ण है, ''क्या मैं सफल होऊगाँ'' अर्थात् इस प्रश्न से तात्पर्य व्यक्ति के व्यक्तिगत गुणों से है जो उसे प्रकृति द्वारा दी गई है। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ विशेष गुण विद्यमान होते हैं, जिनसे जुड़े कार्यों में व्यक्ति सफलता प्राप्त कर सकता है। अपने में निहीत गुणों के विपरीत कार्यों में व्यक्ति को

असफलता हाथ लगती है। अतः विपरीत गुणों के कार्यों को करने के पूर्व हमें अपने अन्दर उससे सम्बन्धित गुणों को विकसित करना चाहिए। व्यक्ति के जीवन का कोई भी लक्ष्य उसकी अपनी जिन्दगीं से बडा और मूल्यवान नहीं होना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को उसके जीवन में केवल सफलता ही सफलता या केवल असफलता ही नहीं मिलती है।

जीतो ऐसे, जैसे कि तुम्हें इसकी आदत हो, हारो ऐसे जैसे कि आनन्द उठाने के लिए बदलाव किया हो-यही सुखमय जीवन का एक मंत्र है।

आत्मसंघर्ष एवं स्वनिर्माण

पूर्णेन्दु शेखर

प्रत्येक मनुष्य के अतःकारण में एक संघर्ष चलता रहता है और यही संघर्ष व्यक्ति की उन्नति का आधार होता है। व्यक्ति आजीवन इस संघर्ष का सामना करता है। यह संघर्ष उसके आत्मोन्नति के लिए होती है। यही संघर्ष मनुष्य का मनुष्य से परिचय करवाती है। एक व्यक्ति का उसके आत्म से परिचय करवाती है। व्यक्ति बनाती है। सुदृढ़ व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

यह संघर्ष है व्यक्ति के आत्म का। व्यक्ति के अन्दर दो तरह की प्रवृत्तियाँ कार्य करती है। एक आसुरी प्रवृत्ति है जो व्यक्ति को संकीर्णता की तरफ ले जाती है, और दूसरी दैवीय प्रवृत्ति की तरफ उन्मुख करती है। सकीर्णता तम कूप है और सम्पूर्णता ज्योतिर्मय संसार। संकीर्णता विच्छेद है आत्म का जबकि सम्पूर्णता आलिंगन है स्वयं का। संकीर्णता सीमित है जबकि सम्पूर्णता असीमित। संकीर्णता बंधन है जबकि सम्पूर्णता सन्तुष्टि का नाम।

व्यक्ति का यह संघर्ष कोई नया नहीं है। यह संघर्ष सदियों से चलता रहा है और सदियों तक चलता रहेगा। इसी संघर्ष में तो सृष्टि का सार छिपा है। यहीं से व्यक्ति के विकास की प्रक्रिया आरम्भ होती है और इसी संघर्ष का प्रतिफल ही आत्मसिद्धि है। जब कोई इस संघर्ष में हारने लगता है, अपना विश्वास खोने लगता है, अपने मन को दृढ़ नहीं बना पाता, तब संकीर्णता उस पर हावी हो जाती है और व्यक्ति उस संकीर्णता रूपी घोर तम के कूप में घिर जाता है और वह सीतिम हो जाता हैं और उस व्यक्ति के विकास की गति रूक जाती है। जब किसी नदी के जल के प्रवाह को अवरुद्ध कर दिया जाता है तब वह मैली हो जाती है, प्रदूषित हो जाती है और महामारी पैला सकती है। ऐसा ही मनुष्यों के साथ भी होता है। जब मनुष्य के विचार करने, सोचने, समझने, अनुभव करने, अध्ययन करने आदि शक्तियों को संकीर्णता अवरुद्ध कर देती है, तब उस व्यक्ति का मन भी मलिन हो जाता है। वह समाज का प्रदूषक तत्व भी बन जाता है और वह व्यक्ति पूरे समाज को विकृत कर सकता है।

सच तो यह है कि इस संकीर्णता और सम्पूर्णता के संघर्ष रूपी मंथन से उत्पन्न अमृत से ही सुदृढ़ व्यक्तित्व का निर्माण होता है और उससे उत्पन्न विष से समाज विरोधी व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

इस संघर्ष में हिस्सेदारी प्रत्येक मनुष्य करता है। जन्म से ही वह इस संघर्ष का प्रतिभागी होता है। यहाँ सबसे दिलचस्प बात यह है कि यह सघर्ष मनुष्य के बाहरी दुनिया में नहीं चलता है। इस संघर्ष में घातक हथियारों की जरूरत नहीं पड़ती है। नारों और हड़तालों की इसमें कोई आवश्यकता नहीं। इस संघर्ष का एक ही उत्तम हथियार या साधन है और वह है - 'मन का निग्रह।'

जी हाँ, यह मन ही अपनी सबसे बड़ी कमजोरी है और अपनी सबसे बड़ी ताकत भी। यह मन ही मेनका है और मन ही मोक्ष का साधन भी। यह मन ही इच्छाओं का इन्द्रजाल है और मन की इच्छाँए सुखाभास से परिपूर्ण भी है। मन की इच्छाओं की पूर्ति से आनन्द की प्राप्ति होती है।

मगर सावधन! इस मन के वशीभूत मत हो जाइये। माना मन की इच्छाओं से सुख की प्राप्ति होती है परन्तु यह क्षणिक है। मन के वशीभूत होना संकीर्णता का साथ देने जैसा ही है। मन केवल अपना हित ही देखता है। यह केवल अपनी बात ही मानता है। इसके अपनों की सीमाएँ बहुत संकीर्ण है। संवेदना रहित है। इसे अपना दर्द तो दिखायी देता है, परन्तु दूसरे के दर्द से इसे कोई संवेदना नहीं। दूसरों के अरमानों को कुचलकर अपने महत्वाकांक्षा रूपी रथ को गति देना ही मन की सबसे बड़ी विशेषता है।

मन के वशीभूत होना ही संकीर्णता है और मन पर विजय प्राप्त कर लेना ही सम्पूर्णता।

परन्तु यह क्या? यहाँ तो दूसरा संघर्ष दिख पड़ता है।

* एम.ए. (मनोविज्ञान) चतुर्थ सेमेस्टर, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

मन का निग्रह, नतलब कि मन पर विजय प्राप्त करना। मतलब खुद पर विजय प्राप्त करना, खुद से ही संघर्ष, खुद को ही पराजित करके। स्वयं को ही जीतना स्वयं को ही हराकर.....।

जी हाँ अब हम इस संघर्षरूपी, कुरूक्षेत्र के मध्य में खड़े हैं। यही तो असली संघर्ष है। यद्यपि दोनों संघर्ष एक-दूसरे के पूरक दिखाई देते हैं, परन्तु ये एक ही संघर्ष के दो पक्ष हैं।

जैसे सोने को आग में तपा-तपा कर पीटने से सोने में चमक आती है। उसी प्रकार इस संघर्ष में तपकर व्यक्ति का निर्माण होता है। यह संघर्ष व्यक्ति को व्यक्ति से साक्षात्कार करवाता है। व्यक्ति को व्यक्ति होने का भाव होता है। इस संघर्ष का प्रतिफल ही आत्म ज्ञान और आत्मसिद्धि है। सन्तोष, सन्तुष्टि, परानुभूति होती है तब जाकर व्यक्ति उपयोगी होता है तब जाकर कहीं व्यक्ति के सुदृढ़ व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात है कि यह संघर्ष आजीवन चलता रहता है। चूँकि यह आदि संघर्ष है। अतः यह जन्म, जन्मान्तर तक चलता रहता है। सदियों से इन दैविय-आसुरी शक्तियों का संघर्ष चलता रहा है और चलता रहेगा। यह संघर्ष निर्णायक नहीं है, इस संघर्ष से अमृत पाने का एक उत्तम मार्ग है- अनवरत इस संघर्ष का हिस्सा बने रहना। हमेशा अपने अन्दर तक संघर्ष का अनुभव करना।

सच पूछा जाये तो इस जीवन का मुख्य उद्देश्य इसी सम्पूर्णता को प्राप्त करना है। यह भी सच है कि इस सम्पूर्णता को कोई सत् प्रतिशत प्राप्त भी नहीं कर सकता। पर कुछ हद तक वो प्राप्त कर ही सकता है। इस 'कुछ हद' में ही जीवन की सफलता निहित होती है।

प्रत्येक व्यक्ति का यह परम कर्त्तव्य है कि वह एक कुशल योद्धा की भाँति इस संघर्ष में अपना सर्वश्रेष्ठ संघर्षशील गुण का परिचय दे। यह संघर्ष ही जीवन की गति है। यह संघर्ष ही प्रकृति की सबसे अनमोल देन है। यह संघर्ष ही ईश्वर का वरदान है।यही मनुष्य के अस्तित्व का आधार है। इस संघर्ष के बिना व्यक्ति, व्यक्ति नहीं।

यह संघर्ष व्यक्ति के अन्तकरण में चलता रहता है और मनुष्य की दृष्टि हमेशा बाहरी दुनिया में गोता लगाती है। अतः इस बाहरी दुनिया का भी प्रभाव उसके अन्दर के संघर्ष पर पड़ता है। अतः जिसे अपनी जीवन यात्रा सम्पूर्णता की ओर ले जानी हो और अपना समुचित उन्नति करना हो, तो उसे अपनी दृष्टि इस बाहरी दुनिया से हटाकर अपने अन्दर की दुनिया में चल रहे महासंग्राम पर केन्द्रित करना होगा।

डवलपमेन्ट

-मानसी दुबे

देश मे डवलपमेन्ट हो रहा है,
अमीरो का काम अर्जेन्ट हो रहा है,
गरीब बेचारा साइलेन्ट हो रहा है,
देश को बेचने का ऐग्रीमेन्ट हो रहा है,
देश मे डवलपमेन्ट हो रहा है।

बच्चा बाप से इन्टेलीजेन्ट हो रहा है,
घर-घर में पार्लियामेन्ट हो रहा है,
शिष्य गुरू में ओबिडिएन्ट हो रहा है,
नेता सभा समाप्ती पर प्रेजेन्ट हो रहा है,
रिश्वत का कार्य हैन्ड टू हैन्ड हो रहा है,
देश मे डवलपमेन्ट हो रहा है,

चमचा अपनी जगह परमानेन्ट हो रहा है,
ईमानदार बेचारा सस्पेन्ड हो रहा है,
कार्यालय में रेस्टूरेन्ट हो रहा है,
देश मे डवलपमेन्ट हो रहा है,

बच्चा स्कल में एब्सेन्ट हो रहा है,
सिनेमा हॉल में प्रजेन्ट हो रहा है,
देश मे डवलपमेन्ट हो रहा है।

* एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) मनोविज्ञान विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

कविता

-लक्ष्मण जी यादव

थोड़ा तो ठहर जाते

तारे बन के तेरे आँगन को हम भी सजाते
पर थोड़ा तो ठहर जाते।
रोने के बहाने यूँ हम मुस्कुराते
पर थोड़ा तो ठहर जाते
बन खुशियों का सागर लहर-दर-लहर
हम भी लहराते।
पर थोड़ा तो ठहर जाते..
न होता गम जो तुम मेरी खुशी के खातिर
झूठा ही सही जरा सा मुस्कुराते
जन्म-जन्म की कौन माने
एक ही जन्म में सदिया बिताते
पर तुम थोड़ा तो ठहर जाते।
हम यूँ बन के चिराग अधेरों
मे न खो जाते
जो तुम थोड़ा और ठहर जाते।

माँ

दर्द भरी इबादतो से सुना है
तकदीर सँवर जाती है
झुक जाता है आसमाँ करता है
सजदे तेरे पहलू मे
मुस्कान बन मोती
होठो पें बिखर जाती है।
माँ तेरी दुआ ही तो है
जो मेरी बेरंग दुनिया में
नये-नये रंग सजाती है
क्योंकि तुम्ही हासिल मेरी
बन्दगी का
तुम ही मेरे अंधेरो का दिया और बाती है।

नारी

कोइै कैसे बताये उसके हालात क्या है
दिल की घुटन और उसके जज्बात क्या है
सब अपना सा लगता है
पर कोई क्या जाने अपने पन का एहसास
क्या है
सितम दर सितम उखडती है सांस
पर उसे क्या पता मेरी जिदंगी जीने
की आस क्या है
मर-मर के जो उठी तेरी रूसवाईयाँ
पर कोई पीर पराई क्या जाने
अधूरे पन का पुरा विश्वास क्या है
कोई कैसे बताये उसके हालात क्या है।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- किसी को उसकी योजनाओं में हतोत्साह नहीं करना चाहिए। आलोचना की प्रवृत्ति का पूर्णत: परित्याग कर दो। जब तक वे सही मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं; तब तक उनके कार्य में सहायता करो; और जब कभी तुमको उनके कार्य में कोई गलती नज़र आये, तो नम्रतापूर्वक गलती के प्रति उनके सजग कर दो। एक दूसरे की आलोचना ही सब दोषों की जड़ है। किसी भी संगठन को विनष्ट करने में इसका बहुत बड़ा हाथ है।

* बी.ए. तृतीय वर्ष (मनोविज्ञान) डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

क्या कहूँ

– विजय प्रताप सिंह

यार तुम भूले मैं क्या कहूँ?
जिस हृदय में तुम बसे उसे जग के कण-कण से कैसे कहूँ?
कण्ठों के द्वार से होठों पर आकर ध्वनियाँ निकल न पाती।
मन-मस्तिष्क में इच्छाएँ बनते-बनते थक जाती।।
आते स्वप्नों में मन समझता मिल गये कैसे कहूँ?
यार तुम भूले मैं क्या कहूँ

पंक्षी-पवन, शावन-शरद, बसन्त देते रहे तेरा सन्देशा।
तुम तो थे मेरे हमेशा।।
जब थे संग जिन्दगी थी निर्मल।
जाते ही जिन्दगी बन गयी कौतुहल।।
बिछड़ चले बादल-नीर की तरह कैसे कहूँ।
यार तुम भूले मैं क्या कहूँ।।

बीत जायेगी जिन्दगी तन्हाँ जो तुमने चलना।
दर्द हुआ था झीर-नीर के समान बिछड़ना।।
कितना सुन्दर था पल जब थे मिलन में।
आकर स्वप्नों में तुम्हीं बता दो एक पल में।
दु:ख की इस रजनी में कैसे रहूँ?।
यार तुम भूले मैं क्या कहूँ?।।

तन्हाइयों में इन्तजार करते-करते कट गये तन्हाँ भरे दिन।
अलको तले आते यादों के झिलमिलाते दिन।।
अब लगता नहीं मन उजड़े दरार में।
दो आरजू में कट गये दो इन्तजार में।।
दिन जिन्दगी के खत्म हुए और साम हो गयी किससे कहूँ।
यार तुम भूले मैं क्या कहूँ।।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- क्या तुम नहीं अनुभव करते कि दूसरों के ऊपर निर्भर रहना बुद्धिमानी नहीं है। बुद्धिमान व्यक्ति को अपने ही पैरों पर दृढ़ता पूर्वक खड़ा होकर कार्य करना चाहिए। धीरे-धीरे सब कुछ ठीक हो जाएगा।
- आओ हम नाम, यश और दूसरों पर शासन करने की इच्छा से रहित होकर काम करें। काम, क्रोध एवं लोभ - इस त्रिविध बन्धन से हम मुक्त हो जायें और फिर सत्य हमारे साथ रहेगा।
- न टालो, न ढूढ़ों - भगवान अपनी इच्छानुसार जो कुछ भेजें, उसके लिए प्रतीक्षा करते रहो, यही मेरा मूलमंत्र है।
- शक्ति और विश्वास के साथ लगे रहो। सत्यनिष्ठा, पवित्र और निर्मल रहो तथा आपस में न लड़ो। हमारी जाति का रोग ईर्ष्या ही है।
- मेरा आदर्श अवश्य ही थोड़े से शब्दों में कहा जा सकता है - मनुष्य जाति को उसके दिव्य स्वरूप का उपदेश देना तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे अभिव्यक्त करने का उपाय बताना।
- जब कभी मैं किसी व्यक्ति को उस उपदेशवाणी (श्री रामकृष्ण के वाणी) के बीच पूर्ण रूप से निमग्न पाता हूँ, जो भविष्य में संसार में शान्ति की वर्षा करने वाली है, तो मेरा हृदय आनन्द से उछलने लगता है। ऐसे समय मैं पागल नहीं हो जाता हूँ, यही आश्चर्य की बात है।

* बी.ए. (सामाजिक विज्ञान) तृतीय वर्ष

जागो और खौलो

-संजय कुमार उपाध्याय (संजू)

यह अकाट्य सत्य है कि पहले हमारे मध्यमवर्गीय एवं निम्नवर्गीय समाज में अधिकांश परिवारों में लड़कियाँ पैदा हुयी नहीं कि उनकी शादी की समीक्षा आरम्भ हो जाती थी। अब बदलते दौर में लोग अपने बेटे-बेटियों को मुकम्मल तालीम देते हुये नजर आ रहे हैं, किन्तु औरों और हम ने गाँव और शहर के अनेक युवाओं को देखा होगा कि जो पढ़ लिखकर सरकारी नौकरियों के प्रति अपनी कीमती जिन्दगी दाँव पर लगाते रहते हैं। इसके इन्तजार में कमोबेश वे खुद को अपने परिवार पर बोझ महसूस करने लगते हैं। जिस समाज में हमारे युवा एवं युवतियाँ स्वयं को बोझ महसूस करने लगे, उस समाज को दीपक लग जाता है तथा वह राष्ट्र कमजोर एवं बीमार हो जाता है।

मित्रों हमें ऐसे देश का निर्माण नहीं करना है जहाँ तरुणाई लेती हुयी जवानियाँ बुढ़ापे का शिकार हो रही हों। ऐ मेरे युवार मित्रों, जिन्दगी के व्यस्ततम बाजार में आप अपना स्थान जितना जल्दी हो सके, चुनकर आगे बढ़ते रहें। तभी यह वैश्विक समाज आपको कबूल करेगा। आज यदि चीन सम्पूर्ण विश्व के समक्ष प्रत्येक विधा में चुनौती दे रहा है तो उसका एक महत्वपूर्ण कारण है कि वहाँ के युवा वर्ग भिन्न-भिन्न विधा में तल्लीन है और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं जिसका असर वैश्विक बाजार पर बखूबी देखायी दे रहा है। मेरे मित्रों जब तक हम बीमार (बेरोजगार) रहेंगे तब तक हमारे देश की अर्थव्यवस्था कभी पटरी पर आ ही नहीं सकती।

मैंने स्वयं अनुभव किया है कि प्राय: लोग दूसरे व्यक्तियों को स्वयं से ज्यादा काबिल मानते हुए एक भय के चादर को लपेट लेते हैं। जबकि लोग ज्यादा मामलों में एक से होते हैं। मैंने जब समानता और असमानता का परीक्षण किया तो पाया कि सामने वाला आदमी भी मेरे जैसा ही है, उसे भी अपने परिवार और दोस्तों की याद आती है, वह भी तरक्की करना चाहता है। उसके पास भी समस्याएं हैं इसलिए अगर सामने वाला मेरे जैसा ही है तो उससे डरने की जरूरत नहीं है। क्योंकि सच ही कहा गया है कि –

एक ऐसी शान पैदा कर कि बातिल थर्रा-थर्रा उठे,
नज़र तलवार हो जाय, नफस झंकार हो जाये।
ये रोज़ो शब यह सुबहो शाम ये बस्ती ये वीराने,
सब ही बेदार है इन्साँ अगर बेदार हो जाये।

जिन्दगी मुस्कराने का नाम है और यह मुस्कुराहट कुदरत ने बख्शी है। अत: उसके अतिरिक्त दूसरा कोई बंदा आपके लबों से मुस्कुराहट नहीं छीन सकता। अत: सच ही कहा गया है कि–

हवादिस में उलझकर मुस्कुराना मेरी फितरत है,
मुझे दुश्वारियों में अश्क बरसाना नहीं आता।

अच्छी बात है, होना भी नहीं चाहिए। क्योंकि जिन्दगी में हर कदम-कदम पर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है अत: –

बहुत गुरूर तुझको ऐ सिरफिरे तूफाँ,
हमें भी ज़िद है कि दरिया को पार करना है।

हम युवा है, खौलना हमारी फितरत है, चूँकि खौलती चीजों का न तो कोई निश्चि घनत्व होता है, न ही आयतन और न ही क्षेत्रफल। अर्थात् वह किसी पूर्वाग्रह रूपी पारम्परिक मर्यादाओं से बँधा नहीं होता है। अत: जीवन के किसी भी क्षेत्र में आप पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ या मौन न रहें, अपितु परिवर्तनवादी बनें, क्योंकि प्रत्येक विधा में सुधार की असीमित संभावनाएँ होती हैं। सच ही कहा गया है कि–

हो गयी है पीर पर्वत, सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

* बी. ए. तृतीय वर्ष (उर्दू), डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

NSS (Who is God)

-आशीष कुमार साहू (दिव्यांश)

इस दुनिया में कई तरह के लोग होते हैं कुछ अपने बारे में सोचते हैं, कुछ अपनों के बारे में और कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो दूसरे के बारे में सोचते हैं। इंसान की सोच ही उन्हें औरों से अलग करती है। बचपन से ही हम भगवान-शैतान सुनते आ रहे हैं।

BUT WHO IS GOD

मेरे अनुसार सिर्फ अपने बारे में सोचने वाला शख्स समाज का कल्याण नहीं करता सिर्फ अपना करता है, अपना कल्याण तो सिर्फ शैतान ही देखते हैं। हाँ अपनों के बारे में सोचने वाला इंसान होता है और वो शख्स जो इन दोनों से ऊपर होता है। जो दूसरों के बारे में सोचते हैं वही, भगवान होता है। विभिन्न विद्वानों ने लेखकों ने इन्हें सुपर हीरो, मसीहा तो किसी ने फरिश्ता कहा है। लेकिन मैं तो उन्हें भगवान कहूँगा क्योंकि जिसे हम कभी देखे नहीं होते, उसे भगवान मान सकते हैं तो जो दिखायी दे उसे क्यूँ नहीं।

यह सोच बनने का कारण एक छोटी सी घटना है जिसने मेरे दिलों दिमाग को झकझोर कर रख दिया। हूआ कूछ यूँ था उस दिन– कालेज में एक बहुत ही जरूरी काम था। इसलिए मैं जल्दीबादी में कालेज जा रहा था। इसी जल्दीबाजी में मेरे साइकिल के सामने एक बुढ़िया आ गयी, मैंने उसे पूरी कोशिस के साथ बचाया फिर भी वो सड़क पर गिर गयी, उसके सिर से आवाज आयी धम्म....। कालेज पहुँचने की जल्दी उसपे से ये एक्सीडेन्ट। गलती किसकी थी पता नहीं पर नुकसान उस बुढ़ी औरत को हुआ, लेकिन अगर मैं वहाँ और रुकता तो नुकसान मुझे भी हो जाता।

दिमाग में तो आया कोई देख नहीं रहा है। साइकिल उठाऊँ और भाँगू। पर दिव्यान्स ने मुझे रोक लिया उसने मुझसे कहा जो अभी तुमसे हुआ वो गलती थी पर जो तुम अब करने जा रहे हो वो पाप होगा, जानबूझ कर की गयी गलती पाप होता है।

एक-एक करके मुझे वो सारी बाते याद आने लगी जो हमें NSS कैम्प में बतायी गयी थीं। मैंने उस बुढ़ी औरत को उठाया तब मुझे पता चला की वो मानसिक रूप से विक्षिप्त और देख भी नहीं सकती। तब मैंने सोचा मैं कितना बड़ा पाप करने जा रहा था, तभी उस औरत ने मेरा हाथ पकड़ लिया और रोने लगी.. कपार फोड़ देहलन... उसकी आवाज सुनकर वहाँ लोगों की भीड़ बढ़ने लगी। तभी मन में यह बात आयी जब दिव्यांश है साथ तो डरने की क्या है बात।

भीड़ में कुछ लोगों ने कहा तुम जाओ ये बुढ़िया पागल है पर मेरा मन नहीं माना मैंने उसे वहाँ से उठाया और फिर उसे एक चाय की दुकान से चाय पिलाया तब चाय वाले से पता चला की उस बुढ़िया का लड़का की उसे अपने घर से निकाल दिया है। इसलिए ही तो मैंने कहा की शैतान सिर्फ अपने बारे में सोचता है। जब हम किसी का अच्छा नहीं कर सकते तो उसका बुरा करने का हक भी हमें कौन दे देता है?

NSS कैम्प के शिविर के दौरान मैंनें कई बातें सिखीं और खुद से वादा किया था की इन बातों को निजी जिन्दगी में उतारूँगा। इस घटना का अन्त उसी का परिणाम था। NSS कैम्प और दिव्यांश के बारे में जानने के लिए पढ़े 2013 के प्रभा का लेख Non stop speed (NSS).

अब बारी NSS के दूसरे शिविर की। एक बार फिर बेनिया बाग मैदान में प्रवेश कर गये। दलित बस्ती में लोगों और उनमें हुए परिवर्तन को देखकर हमें बहुत अच्छा लगा कि ये परिवर्तन हमारे मेहनत का फल था। बाकी का NSS कैम्प का कार्यक्रम पिछले कैम्प की भांति ही चला। बस्ती के लोगों की दशा और दिशा सुधारने के लिए एक बार फिर दुगुने जूनून के साथ कार्य में लग गये। दोस्तों, छोटे भाईयों और सर लोगों का खूब प्यार मिला इसलिए मैं इस ऩ्एए के कैप को कभी नहीं भूल पाऊँगा। पिछले कैम्प की तरह मैंने नाटक का निर्देशन और अभिनय किया और प्रथम पुरस्कार मुझे मिला। शिविर के अन्तिम दिन हमारा मन बहुत उदास था, कारण था कैम्प और कालेज में मेरा अन्तिम साल। दोस्तों से बिछड़ने का दर्द हमें अभी से सताने लगा। शायद मेरे आँसू देखकर ऊपर वाले से भी नहीं रहा गया और वो भी रो पड़ा क्योंकि पानी बरसना चालू हो गया। मैं बारिश में भीग गया तब दोस्तों ने पूछा कि क्यूँ भींगे, तब मैंने कहा- मैं बारिस में भींगता हूँ ताकि कोई पहचान ना सके ये आँसू है या पानी। उन्हीं में से एक भाई बोल पड़ा आशीष भईया ये साल तो आपका अन्तिम साल है। कालेज में हम लोग आपसे मिलेंगे कैसे मैंने, कहा कालेज से जा रहा हूँ आपके दिलों से नहीं। मैंने उन्हें अपना NSS बैच दिया और कहा दुनिया गोल है। कहीं का कहीं कभी ना कभी हमारी मुकालात आप सबसे होगी ही बस अपने इस भाई को भूलियेगा मत। (जरूर पढ़े NSS का प्रथम भाग 2013 का प्रभा)

* बी. ए. तृतीय वर्ष (अर्थशास्त्र), डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

स्वामी विवेकानन्द और उनका संदेश

-मोहित अवस्थी

अपने ज्ञान से सम्पूर्ण विश्व को रौशन करने वाले स्वामी विवेकानन्दजी का जन्म 12 जनवरी 1863 ई0 को कलकत्ता के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। इनके पिता श्रीमान विश्वनाथ दत्त तथा माता श्रीमती भुवनेश्वरी देवी जी थी। पिता जी वकील तथा माता धर्मपरायण घरेलू महिला थीं। विवेकानन्द जी पर इन दोनों का प्रभाव एक साथ पड़ा। वह धार्मिक भी थे और तार्किक भी। बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। ये बचपन में खेलकूद तथा पूजा-पाठ में उत्कृष्ट थे।

तार्किकता का समावेश होने के कारण ईश्वर की खोज में इनका मिलन गुरू श्री रामकृष्ण परमहंस जी से हुआ, जिनके विवेकानन्द जी शिष्य बन गये।

विवेकानन्द जी का उद्देश्य जन-जीवन निर्माण था। इन्होंने अपने 39 वर्ष के अल्पजीवन मे ही भारतीय संस्कृति को पराकाष्ठा तक पहुँचाने का प्रयास किया। 1893 ई0 को शिकागो सर्वधर्म सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व कर भारतीय संस्कृति का परचम सम्पूर्ण विश्व में फहराया।

विवेकानन्द जी का सम्पूर्ण जीवन कठिनाइयों से भरा रहा और ऊँचे आदर्श होने के कारण उन्होंने जीवन में कभी भी हार नहीं मानी। अपने युवा जीवन मे ही धरती से विदा लेने वाले इस महान व्यक्तित्व को हमें आदर्श मानकर उनकी शिक्षा को जन-जन तक पहुँचाने से हमारे समाज का नवनिर्माण होगा तथा इससे हमारा राष्ट्र फिर से विश्वगुरू बन सकता है।

कोई भी राष्ट्र अगर अपने आपको शक्तिशली बोलता है तो इसके पीछे वहाँ के युवाओं का हाथ होता है। युवा किसी भी देश की मूल संरचना में अहम हिस्सा होते हैं। उनके डगमगाने से सम्पूर्ण देश चरमरा जाता है।

गर्व की बात है कि हमारे राष्ट्र में आज लगभग इक्यावन करोड़ युवा हैं और इसके साथ ही स्वामी विवेकानन्द जी जैसे अद्वितीय ऐतिहासिक व्यक्ति प्रेरणाश्रोत के रूप में विद्यमान हैं। जरूरत है उनके संदेश को जन-जन तक पहुँचाने की जिससे हमारा राष्ट्र अद्वितीय लक्ष्य को प्राप्त कर सम्पूर्ण विश्व में एक नया आयाम स्थापित करे।

विवेकानन्द जी के विचार ऊँर्जा से भरे हुए हैं तथा यह एक अलग ऊर्जा प्रदान करते हैं। विवेकानन्द जी कहते हैं कि 'सदा विस्तार ही जीवन है तथा संकोच मृत्यु।'

हमे सीखने की प्रबल इच्छा के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए। हमें कभी भी नकारात्मक नहीं सोचना चाहिए क्योंकि व्यक्ति के सोच की जीवन पर प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति जैसा बनना चाहता है वैसा बन जाता है सिर्फ और सिर्फ अपनी सोंच के कारण।

अपने जीवन में एक आर्दश रखना अति आवश्यक है। बिना आर्दश के जीवन अंधकार मय रहता है। और उस आर्दश को पाने के लिए पूरी एकाग्रता के साथ कार्य करते रहना चाहिए। जब हम शरीर के सर्वोंगों से एकाग्र होकर कार्य करेंगे तो अपने लक्ष्य को कम समय में ही प्राप्त कर सकते हैं। जिस प्रकार से सिद्ध पुरुष अपने एक ही जीवन में वह सब कुछ पा लेता है जो कि साधारण पुरुष कई जन्म लेने के बावजूद भी नहीं पा पाता।

अपने लक्ष्य को पाने के लिए हमें आत्मविश्वास के साथ कार्य करना आवश्यक है। बिना आत्मविश्वास के दुनियाँ की कोई भी वस्तु हमारे भाग्य को नहीं बना सकती। और अगर कोई चीज हमारे भाग्य को बना सकती है तो वह है हमारे अन्दर स्थिति शक्ति। जिसे हम आत्मविश्वास, आत्म बल के रूप में पुकार सकते हैं। अगर हमारा आत्मबल मजबूत हो तो असाधारण कार्य भी साधारण हो जाता है। अतः हमें आत्मविश्वास और आत्मबल के साथ अपने लक्ष्य को पाने के लिए आगे बढ़ते रहना चाहिए। हमें तब तक नहीं रूकना चाहिए जब तक कि हम अपने लक्ष्य को न पा जायें।

हम चाहें बार-बार असफल ही क्यों न हो जाएँ फिर भी

* बी.ए.-।।।, डी. ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

एक बार और प्रयास करना चाहिए। विवेकानन्द जी कहते हैं कि सहस्त्र बार हम असफल हो जाए तो क्या, हमें एक बार और प्रयास करना चाहिए। अपने लक्ष्य को पाने के लिए कठिनाई का सामना करने के लिए हमे हमेशा तैयार रहना चाहिए। हमें भागना नहीं चाहिए। क्योंकि जितना हम भागेंगे, कठिनाई उतना ही हमारे पीछे आयेंगी।

हमें सोचना चाहिए कि अब तक जो हमारे साथ हुआ उसे भूलकर आगे बढ़ना ही हमारा ध्येय हैं विवेकानन्द जी कहते हैं कि गलतियाँ ही हमें सिखाती है। वे जोर देकर कहते हैं कि दुनियाँ में कोई भी चीज इतनी बुरी नहीं है कि उसका पुनः निर्माण हो। हम जैसे भी है ठीक है लेकिन हमें और अच्छा होने की जरूरत है।

हमें तार्किकता से किसी चीज को ग्रहण करना चाहिए, न की आस्था से। तभी हम कुछ अलग कर सकते हैं।

अतः हम युवाओं को अपने राष्ट्र के उत्थान के लिए तत्पर रहना चाहिए। और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूर्णतः समर्पित, आत्मविश्वास, आत्मबल युक्त आशावान, जीवन जीना चाहिए।

प्रेरण पद कुछ शब्दों में कहा जाए तो स्वामी विवेकानन्द जी का जीवन ही हमारे लिए एक संदेश है। बस आवश्यकता है उसे समझने की। उसे जीवन में उतारने की। अगर हम विवेकानन्द जी के कुछ ही उपदेशों को जीवन में उतारते हैं तो वह दिन दूर नहीं जब हम विश्व में अपना एक अहम स्थान प्राप्त कर लेंगे।

विवेकानन्द जी के शब्दों में -

मेरी आशा,विश्वास तुम्हीं लोग हो। मेरी बातों को ठीक-ठीक समझकर उसी के काम में लग जा। उपदे्श तो तुझे अनेक दिये कम से कम एक उपदे्श को भी तो काम में परिणत कर ले। बड़ा कल्याण हो जाएगा। दुनिया भी देखे की तेरा शास्त्र पढ़ना तथा मेरी बातें सुनना सार्थक हुआ है।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- 'बसन्त की तरह लोग का हित करते हुए' – यहि मेरा धर्म है। ''मुझे मुक्ति और भक्ति की चाह नहीं। लाखों नरकों में जाना मुझे स्वीकार है, बसन्तवल्लोकहितं चरन्तः - यही मेरी धर्म है।''
- हर काम को तीन अवस्थाओं में से गुजरना होता है - उपहास, विरोध और स्वीकृति। जो मनुष्य अपने समय से आगे विचार करता है, लोग उसे निश्चय ही गलत समझते हैं। इसलिए विरोध और अत्याचार हम सहर्ष स्वीकार करते हैं; परन्तु मुझे दृढ़ और पवित्र होना चाहिए और भगवान में अपरिमित विश्वास रखना चाहिए, तब ये सब लुप्त हो जायेंगे।
- यही दुनिया है। यदि तुम किसी का उपकार करो, तो लोग उसे कोई महत्व नहीं देंगे, किन्तु ज्यों ही तुम उस कार्य को बन्द कर दो, वे तुरन्त (ईश्वर न करे) तुम्हें बदमाश प्रमाणित करने में नहीं हिचकिचायेंगे। मेरे जैसे भावुक व्यक्ति अपने सगे - स्नेहियों द्वारा सदा ठगे जाते हैं।
- जो सबका दास होता है, वही उनका सच्चा स्वामी होता है। जिसके प्रेम में ऊँच - नीच का विचार होता है, वह कभी नेता नहीं बन सकता। जिसके प्रेम का कोई अन्त नहीं है, जो ऊँच-नीच सोचने के लिए कभी नहीं रुकता, उसके चरणों में सारा संसार लोट जाता है।

भ्रष्टाचार

-रजनीश कुमार

आज हमारे देश में भष्ट्राचार व्यापक रूप से व्याप्त हो गया है। भष्ट्राचार हमारे देश को दीमक की तरह लग गया है। हमारे भारत देश को खोखला करता जा रहा है

भष्ट्राचार का मतलब काले धन से होता है। जो गलत ढँग तथा असवैधानिक रूप से कमाया जाता है। हमारे देश में सरकारी और गैर-सरकारी विभागों में इसका चलन देखने को मिल जाता है। आज देश में प्राइवेट सेक्टर हो या सरकारी। कोई भी विभाग हर जगह भष्ट्राचार देखने को मिल जाता है।

भष्ट्राचार का जन्म मनुष्य के निजि स्वार्थों तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के कारण उत्पन्न होता है। आज हर मनुष्य पैसे कमाने की होड़ मे है वो चाहे असवैधानिक रूप से क्यों न हो, चाहे देश का सत्यानाश ही क्यों न हो मगर अपना निजी स्वार्थ और आवश्यकताएँ जरूर पूरा होना चाहिए।

आज हमारे देश में नेताओ से लेकर नीचे स्तर तक के सभी लोग भ्रष्ट हैं। आज हम जिन नेताओं को अपना कीमती वोट देकर देश का कार्य भार देते हैं वो देश के नाम पर या विकास के नाम पर आए हुए पैसे से अपने पार्टी फंड या अपना विकास करते हैं। ऐसे भष्ट्र नेतओं के कारण देश में कई घोटाले हो गए हैं, वो चाहे 2जी घोटाला हो या रेल घोटाला या कोयला घोटाला यह सब घोटाले भष्ट्राचार के उदाहरण हैं।

भष्ट्राचार को खत्म करने के लिए देश के लोगों को और इन नेताओं को अपने निजी स्वार्थों और अपनी आवश्यकताओं से ऊपर उठकर देश के विकास और समाज के विकास के बारे में सोचना होगा। आज भगत सिंह, स्वामी विवेकानन्द, सुबाषचन्द्र बोस, महात्मा गाँधी जैसे महान राष्ट्रप्रेमी और देश को स्वतंत्रता दिलाने वाले इन वीर सपूतों के विचारो से प्रेरणा लेकर देश से भष्ट्राचार को खत्म किया जा सकता है। इन लोगों से हमें राष्ट्रप्रेम तथा नैतिकता का पाठ सीखना होगा।

हम युवापीढ़ी को भी भष्ट्राचार को खत्म करने मे योगदान देना होगा क्योंकि किसी भी देश की शक्ति 'युवा' होते है। भष्ट्राचार को खत्म करने के लिए हम युवाओं को सत्ता में आना होगा तथा विभिन्न उच्च विभागों में सम्लित होना होगा, तब जाकर भष्ट्राचार को खत्म किया जा सकता है। देश हमारा है, इसलिए कदम भी हमे उठाना पड़ेगा।

आज हम देखते हैं कि जापान, सिंगापुर इत्यादि क्षेत्रफल मे छोटे देश हम से ज्यादा विकसित हैं। इसका कारण वहाँ भष्ट्राचार कम है तथा वहाँ के लोगों में देश के विकास की भावना है। ''कोई देश परफेक्ट नही होता है बल्कि उसे परफेक्ट बनाना पड़ता है।'' आओं हम सब मिलकर भष्ट्राचार रूपी राक्षस से अपनी धरती माँ को मुक्त कराएँ और आने वाली पीढी पर भष्ट्राचार का छाया भी न पड़ने दें।

h

* बी.ए. (तृतीय वर्ष), डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

दहेज बुरी प्रथा है

-दीपक कुमार शर्मा

जिनके पास कुछ भी नहीं है, उन्हें कई हजार चाहिये।
जिनके पास साइकिल है, उन्हें तो कार चाहिये।।
फिर कैसे करेगा गरीब परिवार, शादी अपने बेटी का।
जिनके पास ठिकाना नहीं, दो पहर के रोटी का।।
हो जाये लाखों का कर्जदार वह, या बेच दे जागीर सारी।
पूरा करे दहेज वरन्, रखा रहे बेटी कुँवारी।।
मामूली सी चोट नहीं लगती, दौलत के हथियार से।
दहेज बुरी प्रथा है, मिटा दो इसे संसार से।।

फिर जाती है शादियाँ, जब दहेज हो जाता है कम।
अंधकारमय हो जाता है वह पल, छा जाता है गम।।
लुट जाती है सारी इज्जत, फूट जाती है सारी किस्मत।
टूट जाती है सारी उम्मीदे, भूल जाती है सारी हिकमत।।
आखिर इसमें दोष क्या हैं, बेचारी अबला नारी का।
दोषी तो है वह दहेज प्रथा, जो बसा न सका घर एक कुमारी का।।
उस दिन बहती है आँसुओं की नदियाँ, नैनों के धार से।
दहेज बुरी प्रथा है, मिटा दो इसे संसार से।।

वह दिन गुजरता है कैसा, एक बाप और भाई पर।
शर्म आती है उन्हें, अपनी दौलत औ कमाई पर।।
माँ बहने रोती हैं उस दिन, खून के आँसू।
दुल्हन आत्महत्या के लिये, हो जाती है जिज्ञासू।।
इसीलिये तड़पती हैं बेटियाँ, जीवन भर ससुराल में।
सैकड़ों खुदकुशी कर रही, हर एक साल में।।
आखिर कब तक वंचित रहेंगी बेटियाँ, अपने अधिकार से।
दहेज बुरी प्रथा है, मिटा दो इसे संसार से।।

हिन्द देश

जहाँ मन्द-मन्द कलियॉ मुस्कायें।
पंक्षी सुर मे गीत सुनाये।।
झूम झूमकर मयूर नाचता।
औ सुगन्धित रज शीतल हवायें।।

परम मनोरम सूरज की लाली।
चारों तरफ छायी है हरियाली।।
गंगा जमुना की पावन धारा।
अति अनुपम कश्मीर निराली।।

सागर नदियाँ झरनों का हलचल।
पर्वत पठार वन मरूस्थल।
और सुखमय जीवन जीता सारा जन।
वह है प्यारा हिन्द वतन।।

* बी.ए. तृतीय वर्ष (कला संकाय) हिन्दी विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

पंडित की शर्त

– बाबू लाल

एक गाँव में एक पंडित जी और उनकी पत्नी रहते थे। पंडित जी भीक्षा माँगकर अपनी आजीविका चलाते थे। एक बार उन्हें भीक्षा में बेसन मिला तो उन्होंने घर आकर पत्नी से बोला, 'आज भिक्षा में बेसन मिला है पूड़ी खाने की इच्छा है।' रात में उनकी पत्नी ने पूड़ियाँ बनाई। कुल नौ पूड़ियाँ बनी थी, खाने वाले दो आदमी। पंडित जी बोले–बेसन मैं मांगकर लाया था मैं पाँच पूड़ी खाऊँगा। तब उनकी पत्नी बोली-पूड़ियाँ मैंने बनाई है मैं पाँच पूड़ी खाऊँगी। इस तरह आपस में दोनों लड़ पड़े। तब पंडित जी ने शर्त रखी कि जो कल देर से जागेगा, वही पाँच पूड़ी खायेगा, जो पहले जगेगा वह चार पूड़ी खायेगा। शर्त मंजूर हुयी, दोनो सो गए।

सुबह देर तक पंडित का दरवाजा नहीं खुला तो गाँव वाले आपस में बात करने लगे कि आज पंडित को क्या हुआ अभी तक जगे नहीं। सभी लोग जाकर पंडित का दरवाजा खटखटाए अंदर से कोई आवाज नहीं आयीं तो लोगों ने दरवाजा तोड़कर देखा तो दोनों लोग सोवे थे, जगाने पर कोई नहीं जगे, तो लोगों ने सोचा कि ये दोनो मर गए। सभी लोग क्रिया कर्म में जुट गए। दोनों लोगों की टिक्ठी सजी और ले जाने के लिए नौ लोग चलें।

कुछ दूर जाने पर पंडित ने जोर से खिझे हुए स्वर में बोले– अरे उठो! तुम्हीं पाँच खा लो, मैं चार खा लूँगा। इतना सुनते ही नौ के नवों आदमी टिक्ठी वहीं पटकर भाग खड़े हुए। गाँव के सनसनी फैल गयी कि पंडित और उनकी पत्नी प्रेत हो गए हैं। वह आदमियों को खाने की बात कर रहे थे।

इधर पंडित और उनकी पत्नी किसी तरह अपने को छुड़ाकर, कफन से ही तन ढँककर गाँव की ओर चलें। गाँव वाले उन्हें दूर से देखते ही ढेले-पत्थर से मारने लगे। किसी तरह जान बचाकर दोनो भागे। आगे जाकर दोनो रोने लगे, उन्हें इस हालत में रोते हुए एक सिपाही ने देखा। पास आकर उसने पण्डित से इस हालत में रोने का कारण पूछा तो पंडित ने पूरा बात बताई। यह सुन सिपाही जोर-जोर से हँसने लगा और उनको उनके गाँव पहुँचा कर लोगों को शांत किया।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- न संख्या-शक्ति, न धन, न पाण्डित्य, न वाक चातुर्य, कुछ भी नहीं, बल्कि पवित्रता, शुद्ध जीवन, एक शब्द में अनुभूति, आत्म-साक्षात्कार को विजय मिलेगी। प्रत्येक देश में सिंह जैसी शक्तिमान दस-बारह आत्माएँ होने दो, जिन्होंने अपने बन्धन तोड़ डाले हैं, जिन्होंने अनन्त का स्पर्श कर लिया है, जिनका चित्र ब्रह्मनुसन्धान में लीन है, जो न धन की चिन्ता करते हैं, न बल की, न नाम की और ये व्यक्ति ही संसार को हिला डालने के लिए पर्याप्त होंगे।

* बी.ए. प्रथम वर्ष, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

दौलत

– पीयूष कुमार पाण्डेय

दौलत जिसकी दुनिया है उसका दौलत ही भगवान है,
दौलत बिना है जीवन झूठा धरती भी शमशान है,
बाग चाहता फूल की दौलत नहीं चाहती पानी की,
दौलत के बल पर ही होती शादी देखो कानी की,
फिर सब क्यों न कीमत माँगे, अपने रूप जवानी की,
इस असमान दुनियाँ में कोई निर्धन है तो कोई धनवान है,
दौलत के बिना ही देखो धरती भी शमशान है
दौलत एक सुनहरी नागिन जहर भरी सौगात है
चार दिन की केवल चाँदनी फिर अँधेरी रात है
भला भरोसा इसका क्यो जो चंचल और दिवानी है
आज यहाँ कल वहाँ रहेगी दौलत बहता पानी है
पाप कराती इन्सानों से बेईमान बनाती है
आती है जिस शान से दौलत उसी शान से जाती है
माँ करती प्यार उसी से जो बेटा अधिक कमाता है
बिना रुपया के पास बेटे की गाली खाता है
बहन भेजती वहीं पर राखी जहाँ से रुपया आता है
नोट नहीं तो रोज मियाँ बीबी की जूती खाता है
हरिश्चन्द्र जैसे राजा को भी डोम के घर भिजवाती है
आती है जिस शान से दौलत उसी शान से जाती है
दौलत के कारण ही अंग्रेज भारत में आए
दौलत के लालच से ही लोगों ने देश के भेद बताए
स्वयं धर्मराज को भी बन्धुओं से लड़वाती है
आती है जिस शान से दौलत उसी सान से जाती है
भाई से भाई लड़ते हैं धन मालिक का नौकर हड़पते हैं
धन के अभाव में आदमी दुनिया से अनजान है
जिसके पास है पैसा देखो उसका ही सम्मान है
दौलत के बिना देखो धरती भी शमशान है
जिस गरीब के पास नहीं है पैसा रात को भूखे सोता है
सुबह में जाते काम को सब बच्चा फुटपाथ पे रोता है
वहीं से जाती गाड़ी अमीर की तनिक न विचलित होता है
अपने को अलग कराती है और गैरों को मिलाती है
कारण एक मात्र है दौलत सारे अपराध कराती है
आती है जिस शान से दौलत उसी शान से जाती है।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- वत्स, धीरज रखो, काम तुम्हारी आशा से बहुत ज्यादा बढ़ जाएगा। हर एक काम में सफलता प्राप्त करने से पहले सैकड़ों कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जो उद्यम करते रहेंगे, वे आज या कल सफलता को देखेंगे। परिश्रम करना है वत्स, कठिन परिश्रम्! काम कांचन के इस चक्कर में अपने आप को स्थिर रखना, और अपने आदर्शों पर जमे रहना, जब तक कि आत्मज्ञान और पूर्ण त्याग के साँचे में शिष्य न ढल जाय। निश्चय ही कठिन काम है। जो प्रतिक्षा करता है, उसे सब चीज़े मिलती हैं। अनन्त काल तक तुम भाग्यवान बने रहो।

* बी.ए. (आनर्स) आर्ट्स प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर), डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

मैं परवाना हो गया

—अजय शंकर गुप्ता

इश्क की गलियों से जो
गुजरा दिवाना हो गया
होश थे पुरजोर जिसके
वो भी बेगाना हो गया
इल्म लेकर के हजारों
आये थे बचने यहाँ
इल्म था न इल्म का
सर मुश्किल छुपाना हो गया।
जिसने भी बाजार समझा
आया दिल बेसाहने
बिक गये बाजार में इस
सब बेठिकाना हो गया
हम भी कहते फिरते थे
पागल पतिंगे है हुए
जब मिला कोई रूप प्यारा
दिल परवाना हो गया।।

मेरी आदत

—अमृत कुमार तिवारी

यूँ तो सब कुछ भुलाने की आदत मुझे,
क्यों न तुमको कभी भूल पाता हूँ मैं।।
गायकी का तो चेहरा न देखा कभी,
फिर भी हर पल तुम्हें गुनगुनाता हूँ मैं।
खुश हो तुम जो अगर मेरी तन्हाई में,
फिर क्यों तुमसे जुदा हो न पाता हूँ मैं।
तेरे आँसू तो लगते थे मोती मुझे,
अपने अश्कों को जल सा बहाता हूँ मैं।
यूँ तो सबकुछ भुलाने की आदत मुझे,
क्यों न तुमको कभी भूल पाता हूँ मैं।।
मैं नहीं बेवफा जो मैं खुद पर हसूँ,
इस शहर की हँसी और ठहाका हूँ मैं।
है गुजारिश न ख्वाबों में छेड़ा करो
नंगी आँखो से सपने सजाता हूँ मैं।
कभी करता था पूनम का मैं इन्तजार,
अब अमावश की यारी निभाता हूँ मैं।
यूँ तो सब कुछ भुलाने की आदत मुझे,
क्यों न तुमको कभी भुल पाता हूँ मैं।।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- यही रहस्य है। योग प्रवर्तक पंतजलि कहते हैं, ''जब मनुष्य समस्त अलौकिक दैवी शक्तियों के लोभ का त्याग करता है, तभी उसे धर्म मेघ नामक समाधि प्राप्त होती है। वह परमात्मा का दर्शन करता है, वह परमात्मा बन जाता है और दूसरों को तदरूप बनने में सहायता करता है। मुझे किसी का प्रचार करना है। जगत में अनेक मतवादों का प्रचार हो चुका है। लाखों पुस्तकें हैं, परन्तु, हाय! कोई भी किंचित् अंश में प्रत्यक्ष आचरण नहीं करता।''
- अकेले रहो, अकेले रहो। जो अकेला रहता है, उसका किसी से विरोध नहीं होता, वह किसी की शांति भंग नहीं करता, न दूसरा कोई उसकी शांति को भंग करता है.

* बी.ए. (आर्ट्स) ऑनर्स (द्वितीय सेमेस्टर), डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

* बी.ए. (द्वितीय सेमेस्टर), डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

शिक्षा अभियान

–अमृत वासन

हमने शिक्षा अभिमान चलाई
पढ़ लो बहना पढ़लो भाई
हमने शिक्षा अभियान चलाई
नहीं हम बाल मजदूरी करेंगे
नहीं करेंगे हम और खुदाई
हमने शिक्षा अभियान चलाई।
उस जमाने को क्यो भूले इन्सान
जब वे करते थे हमारा अपमान
पढ़ना लिखना अब है आसान
नहीं कोई अब है नादान
ऐसी हमने तरकीब लाई
हमने शिक्षा अभियान चलाई।
पढ़ लिख कर बनो महान
करो दुनियाँ के दु:खों का निदान
बड़ी मुश्किल से पत्थर पिघलाई
हमने शिक्षा अभियान चलाई।
बेटियाँ भी एक चिराग है
जो करती सबसे अनुराग है
नहीं करेंगे हम बेटियों की जल्द बिदाई
हमने शिक्षा अभियान चलाई।

हौसलों की उड़ान

-नवीन कुमार गोपालन

पथ पर भटकता पथिक
क्यों मैं कहलाऊँगा
सफलता की सीढ़ियों पर,
क्यों लड़खड़ाता रह जाऊँगा।।
आह नहीं मुझे कि,
कामयाबी ना मिली।
आश है मैं एक दिन,
अपनी मंजिल को पाऊँगा।।
सोचता हूँ क्या खेल खेले हैं,
किस्मत ने साथ मेरे।
अन्जान हूँ मैं अपनी किस्मत से,
और है भाग्य मुझसे परे।।
हक है मुझे,
दुनिया का दस्तूर मैं निभाऊँगा।
आशा है, मैं एक दिन,
अपनी मंजिल को पाऊँगा।।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- हर अच्छे, श्रेष्ठ और महान कार्य में तीन चरण होते हैं, प्रथम उसका उपहास उड़ाया जाता है, दूसरा चरण उसे समाप्त या नष्ट करने की हद तक विरोध किया जाता है और तीसरा चरण है, स्वीकृति और मान्यता, जो इन तीनों चरणों में बिना विचलित हुए अडिग रहता है, वह श्रेष्ठ बन जाता है और उसका कार्य सर्व स्वीकृत होकर अनुकरणीय बन जाता है।

* बी.ए. (आर्ट्स) ऑनर्स (द्वितीय सेमेस्टर), डी.ए.वी. कालेज * बी.ए. द्वितीय वर्ष (कला) द्वितीय सेमेस्टर

इन्सानियत का दर्द

– गुफरान हकीम

दिसम्बर की ठिठुरती हुई एक सुबह थी। कई दिनों से सूर्य दिखाई नहीं दिया था। पशु-पक्षी अपने-अपने आसियानों और घोसलों में पनाह लिये हुये थे। सड़के सुनसान थी। कहीं-कहीं कोई एक आदमी दिखाई पड़ता तो यह समझते देर नहीं लगती कि वह व्यक्ति अवश्य ही किसी महत्वपूर्ण अथवा आवश्यक कार्य से ही बाहर निकला है, वरना प्रत्येक व्यक्ति रजाइयों, कम्बलों एवं गर्म कपड़ों में दुबका हुआ नजर आ रहा था। जितने भी गर्म कपड़े थे उन सबको इन्सान अपने शरीर पर सजाना चाहता था।

मैं नाश्ता के बाद गर्म कपड़ों के साथ-साथ अपने उपर दो मोटे-मोटे कम्बल डाले हुये अपनी छोटी सी कोठरी में बैठा था। सामने मड़ई में मेरे जानवर बंधे हुये थे, उनमें बैल भी थे और गायें भी थी और भैंसे भी। उनमें से कुछ भैंसे ऐसी भी थी जिनका गर्म-गर्म दुध अभी मैंने गिलास भर कर पिया था, जिसकी मिठास और ताजगी अभी तक मैं महसूस कर रहा था। सारे जानवर अपने-अपने जबड़े चला रहे थे जैसे वह कुछ खा रहे हों। मुझे लगा कि इस प्रकार वह इस कड़ाके की ठंड में गर्मी का अनुभव करते होंगे। कुछ जानवर सूखे भूसे खाने में लगे हुये थे। मैं उन पशुओं को बड़े गौर से देख रहा था और ये सोच रहा था कि या अल्लाह! ये भी तो जानदार हैं क्यां इन्हें इस जानलेवा ठंड का एहसास नहीं होता? ऐसी ठंड जिसके प्रकोप से हड्डियाँ तकत काँप रही हैं, ये पशु अपने में मगन है, कोई चारा खा रहा है, कोई जबड़े हिलाने में मस्त है, कोई एक दूसरे को सींग मार रहा है, मानों उन पर इस कपकपाती ठंड का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ रहा है। हालांकि कुछ भैंसों के बाल खड़े हैं जो अवश्य ही इस का संकेत है कि ठंड का प्रलय उन पशुओं के शरीर को कुछ न कुछ प्रभावित जरूर कर रहा है।

मैं यह सोच रहा था कि उन पशुओं के शरीर को कुदरत ने कितना मजबूत और ठोस बनाया है कि उन्हें कड़कड़ाती ठंड का कोई एहसास नहीं होता। मैं इसी उधेड़बुन में लगा था और इन्सान और पशुओं में तुलना कर रहा था कि अचानक सामने दरवाजे पर एक आश्चर्यजनक दृश्य देखकर हैरान रह गया। मैंने देखा कि कभी-कभार मेरे घर पर आने वाला एक व्यक्ति केवल एक बनियान और धोती पहने हुये खड़ा है। और लोगों से बातें करते हुए मुस्कुरा भी रहा था। उसकी यह स्थिति देखकर मैं अन्दर से काँप गया। अभी तक ठंड हवा के झोंको ने मेरे शरीर को नहीं कपकपाया था मगर उस व्यक्ति को देखकर मेरी हड्डियाँ काँप गई थी। क्योंकि उसका अर्धनग्न शरीर ऐसी खतरनाक ठंड में स्वस्थ दिखाई पड़ रहा था, जो मेरे लिये एक अजूबे से कम नहीं था। मैं उसे देख गूंग सा हो गया था। उससे ठंड न लगने या ठंडक महसूस न होने का कारण पूछना ही चाहता था कि ठीक उसी समय मेरी अम्मी मुझे गर्म-गर्म चाय देने के लिये कोठरी में आ पहुँची।

अम्मी ने मुझे चाय थमाते हुये उस व्यक्ति की ओर देखा और लगभग चिखते हुये बोली माधो तुम? और इस हाल में?..... चूँकि ऐसी स्थितियों में स्त्रियाँ बड़ी नर्म-दिल साबित हुई हैं इस लिये वह बड़ी ही तेजी के साथ कुछ बड़बड़ाती हुई घर के अन्दर की ओर गई और तुरन्त बाहर लौटी तो उनके हाथ में वह फुल स्वेटर था जिसको मैंने दो दिन पहले खरीदा था और साइज बड़ी हो जाने के कारण एक ओर रख दिया था। स्वेटर लाते ही माँ ने माधो को थमाते हुए कहा जल्दी से इसे पहनो, भला ऐसी सर्दी में कोई इस तरह निकलता है? जब माधो स्वेटर पहन रहा था मैंने देखा कि उसकी आँखे डबडबा गई थी। स्वेटर पहनने के बाद उसने घोर आभार व्यक्त करते हुए कहा – भाभी मेरे पास और कोई कपड़ा हो तब तो पहनूँगा। आपने यह स्वेटर दिया है तो मैं अवश्य ही इसे पहनूँगा। स्वेटर उसके शरीर पर जाते ही मुझे ऐसा लगा जैसे कि मेरे नस-नस में गर्मी की लहर दौड़ गई हो।

एक बार फिर मैं सोचने लगा कि या अल्लाह! वह जानवर तो मेरे अपने हैं। इनमें से किसी का दूध पीते हैं किसी का घी खाते हैं, किसी के द्वारा हल चलाकर अपने लिये अनाज पैदा करते हैं, मगर इस कपकपाती ठंड में उन पशुओं का अस्तित्व मेरे लिये एक तमाशा मात्र और उनकी एक-एक हरकत को मैं केवल गौर से देख ही रहा था। परन्तु यह इन्सान जो न कोई मेरा सगा सम्बन्धी है और ना ही हम-मजहब है मगर फिर भी उसकी तकलीफ को होते देख यह एहसास हुआ कि मेरी अपनी तकलीफ दूर हो गई है। शायद यही इन्सानियत का दर्द है।

* बी.ए. द्वितीय वर्ष (कला), डी.ए.वी. पी.जी. कालेज, वाराणसी

शहीदों के शहादत को सलाम

—नलनीश मिश्र

शहीदों के शहादत को सलाम करते हैं
जो देश पे अपने आप को कुर्बान करते हैं
तिरंगे के लिए अपने आप मिट्टी में मिल गए,
बागों को छोड़कर, जंग की मैदान में खिल गए।
मौत से डरे नहीं, सत्य से हटे नहीं,
झूठ पर मिटे नहीं, सर कभी झुके नहीं
उन शहीदों की श्रद्धांजली के लिए,
हम उनको सलाम करते हैं।
शहीदों के शहादत को सलाम करते है।
भगत, आजाद, सुभाष को बिस्मिल, रोशन
आस्था के तिलक, लाहिड़ी, हमीद को
सदा सलाम करते हैं।
गाँधी जी का मूल मंत्र हे राम तिरंगा है
नेताजी का जय हिन्द भी यही तिरंगा है।
भगत जी का इंकलाब भी यही तिरंगा है।
हमीद के सीने में, अल्ला तिरंगा है।
उस तिरंगे के लिए, देश के लिए
जी जान कुर्बान करते हैं। हम उनको
सलम करते हैं।
शहीदों के शहादत को सलाम करते है।
आज कसम खातें है, आपक सबको
बताते है।
जब तक रहेंगे जिंदा आजाद मेरा
वतन होगा खून से तर-वतर यहीं
मेरा कफन होगा
मर गया तो क्या हुआ, अपने वतन के वास्ते।
बुल-बुल भी मरती हैं अपने चमन के वास्ते।.
आज भगत, आजाद के नारे, हमको जगाते हैं
वे रास्ते के शूल हमें गुमनामी की राह दिखाती हैं।
हम न मरेंगे, हम न झुकेंगे, तेरे रास्तों
पर चलेंगे।
हम भी लिये तलवार खड़े है - अब न डरेंगे
शहीदों के शहादत को सलाम करते हैं।

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- मेरी दृढ़ धारण है कि तुममें अन्धविश्वास नहीं है। तुममें वह शक्ति विद्यमान है, जो संसार को हिला सकती है, धीरे-धीरे भी अन्य लोग आयेंगे। 'साहसी' शब्द और उससे अधिक 'साहसी' कर्मों की हमें आवश्यकता है। उठो! उठो! संसार दु:ख से जल रहा है। क्या तुम सो सकते हो? हम बार-बार पुकारें, जब तक सोते हुए देवता न जाग उठें, जब तक अन्तर्यामी देव उस पुकार का उत्तर न दें। जीवन में और क्या है? इससे महान कर्म क्या है?
- मन और मुँह को एक करके भावों को जीवन में कार्यान्वित करना होगा। इसीको श्री रामकृष्ण कहा करते थे, ''भाव के घर की चोरी न होने पाये।'' सब विषयों में व्यवहारिक बनना होगा। लोगों या समाज की बातों पर ध्यान न देकर वे एकाग्र मन से अपना कार्य करते रहेंगे क्या तुने नहीं सुना, कबीरदास के दोहे में है– ''हाथी चले बाज़ार में, कुत्ता भोकें हज़ार, साधुन को दुर्भाव नहिं, जो निन्दे संसार'' ऐसे ही चलना है। दुनिया के लोगों की बातों पर ध्यान नहीं देना होगा। उनकी भली बुरी बातों को सुनने से जीवन भर कोई किसी प्रकार का महत् कार्य नहीं कर सकता।

* बी.ए. आनर्स (आर्ट्स) द्वितीय सेमेस्टर. डी.ए.वी. पी.जी. कालेज, वाराणसी

कभी मत भूलो

–अजय कुमार यादव

1) अवगुण नाव की पेंढी के छेद के समान है, जो चाहे छोटा हो या बड़ा एक दिन उसे डुबो ही देगा।
–कालीदास

2) अवसर उसकी मदद कभी नहीं करता, तो अपनी मदद नहीं करते।
–सफोक्लीज

3) दूसरों की गलतियों से सावधानी सीखना ही अधिक उचित है।
–साइरस

4) अवसर बुद्धिमान के पक्ष में लड़ता है।
–यूरोपिडीज

5) अच्छा दिल सोने जैसा मूल्यवान होता है।
–शेक्सपियर

6) प्रत्येक वस्तु मूल्यवान है, लेकिन जीवन सर्वोपरि है। जीवन की मुक्ति सद्‌गुण द्वारा ही सम्भव है।
–सन्त निर्मल जोशी

7) उस मनुष्य से अधिक कोई दरिद्र नहीं है। जिसके पास सिर्फ पैसा है। –एडविनपग

8) न्याय करना केवल ईश्वर का काम है, आदमी का काम तो केवल दया करना है। –फ्रांसिस

9) अतीत में जैसा भी कुछ कर्म किया गया है, वह भविष्य में उसी रूप में उपस्थित होता है।
–महावीर स्वामी

10) समय और सागर की लहरें किसी की प्रतिक्षा नहीं करती। –रिचर्ड ब्रेथ हेड

11) नीच की नम्रता के प्रति सावधान रहो। अंकुश, धनुष, साँप और बिल्ली झुककर ही वार करते हैं।
–महर्षि वाल्मीकि

12) व्यस्त व्यक्ति के पास आँसू बहाने का वक्त नहीं होता।
–बायरन

सफलता का रहस्य

सफलता एक आदत है। बचपन से ही सफलता की आदत बनाइए। मनुष्य के मन में ऐसी अद्‌भुत शक्तियों का भण्डार है, जिसकी कल्पना स्वयं मनुष्य भी नहीं कर सकता।

अब्राह्म लिंकन अमेरिका का वीर शक्तिशाली राष्ट्रपति समझा जाता है। वह एक निर्भीक व्यक्ति था। उनके वीरतापूर्ण साहसिक कार्यों के कारण ही संसार में उनका नाम अमर हो गया। किन्तु हम अगर उनके प्रारम्भिक जीवन पर ध्यान देते हैं तो हमें आश्चर्य होता है कि किस प्रकार लिंकन इतनी उन्नति कर गये?

क्या वे किसी पूँजीपति के पुत्र थे? नहीं। बेचारे अब्राह्म लिंकन के शिक्षा की उचित व्यवस्था भी नहीं थी। क्या वे बचपन में आराम और शान से रहे? नहीं। उनका बचपन अन्धकारमय था। बचपन से ही अन्य लोग उन्हें मन्द बुद्धिवाला कह कर पुकारते थे। उस समय उनका स्वास्थ्य बी उतना ठीक नहीं था। वे एक दुर्बल की भाँति प्रतीत होते थे। बचपन से ही माता-पिता भी लिंकन को मन्द बुद्धिवाला कहा करते थे और ये भी कहते थे, कि ना जाने आगे चलकर यह क्या करेगा? कुछ बनेगा की नहीं। लेकिन अब्राह्म लिंकन का यह सपना था कि मैं कुछ बनूँगा पर उनको पढ़ने के लिए उनके माता-पिता के पास पैसे नहीं थे। वे स्वयं मजदूरी करते और जो पैसा मिलता उससे पढ़ते। उनकी आर्थिक स्थिति उतनी चरमरा गयी थी, कि रात को घर पढ़ने के लिए उनके पास कोई साधन नहीं थे। इसलिए उन्हेंरात को बिजली के खम्भों में लगे बल्बों के उजालों में पढ़ना पड़ता था। उनका सपना था कि मैं एक दिन अमेरिका का राष्ट्रपति बनूँगा।

एक समय की बात है कि अब्राह्म लिंकन कुछ पुस्तकें एक दुकानदार से उधार लाये। और उसके अगले दिन पुस्तकों को वापिस करना था। लेकिन रात को बिजली के खम्भों के नीचे पढ़ते-पढ़ते सो गये। जब सुबह जगे तो देखा की ओस के कारण किताबें गीली हो गई। तब वह सारी घटना उस दुकानदार को जाकर बताए। लेकिन दुकानदार ने उन पुस्तकों के मूल्य चुकाने के लिए इनसे मजदूरी करवाया। कुछ

* बी.ए. (आनर्स) आर्ट द्वितीय सेमेस्टर, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

देर तक अपने भाग्य पर उन्होंने आँसू भी बहाया, लेकिन अपना इरादा नहीं बदला। इतनी मुसीबतों, कठिनाइयों, विरोधों के बावजूद भी अपने आत्मबल और उच्च-संकल्प शक्तियों के बल पर अब्राह्म

लिंकन ने उन्नति की थी। वे गरीब अल्पशिक्षित परिवार से होकर भी खुद शिक्षित होकर अमेरिका का राष्ट्रपति बने। उनकी आश्चर्यजनक उन्नति का कारण उनका आत्मविश्वास था। वे अपने मनोराज्य में हमेशा सोचा करते थे, कि हम ही संसार के वीर पुरुष हैं। उन्हें बचपन से ही अपनी वीरता और महानता पर विश्वास जम गया था। आप भी अपने संकल्प पर दृढ़ विश्वास रखिये। अपने कर्मों पर अखण्ड विश्वास रखिये। हर मनुष्य के अन्दर ऐसी अद्‌भुत शक्तियों का भण्डार है। जिनकी कल्पना स्वयं मनुष्य भी नहीं कर सकता। आप भी अपने मन पर पूर्ण विश्वास कीजिए। उसे बलवान बनाने का प्रयत्न कीजिए, शरीर भी उसकी आज्ञा मानेगा। फिर दुःख, चिन्ता, दुर्बलता, असफलता का अस्तित्व ही नहीं रहेगा। निर्बलता छोड़ दीजिए।

''भ्रम के अन्धकार से ज्ञान के प्रकाश में जागिये''

मदर्स डे

माँ Mother

–अजय कुमार यादव

माँ शब्द सिर्फ महसूस किया जा सकता है। इसे किसी भाषा या परिभाषा में बाँधना कठिन है। हर माँ सुपर होती है, क्योंकि अपनी जिन्दगी को ताक पर रखकर वह संतान को जन्म देती है।

M ''मेलोडियम है'' यानि उसके अन्दर गीत व संगीत भरा हुआ है। उसकी लोरी सुनकर ही हम हिलोरें लेते बड़े होते हैं। वह रोटी पकाती है तो उसकी चूड़िया खनखनाती हुई भोजन में संगीत का रस घोल देती है। जिससे उसका बनाया भोजन सबसे स्वादिष्ट बन जाता है।

O ''आउट लुक'' यानि माँ हमेशा अपनी आँखों में बसाकर रखती है। आँखों का तारा मानती है। वहीं, उसकी दृष्टि बालक से सूक्ष्म मनोभावों के कैमरे की तरह अपने दिल में उतार लेती है।

T ''ट्रेजरर'' यानी माँ बालक के लिए खजांची की तरह है। उसके खजाने में वात्सल्य तो भरा ही है, बचपन में दूध के भंडारण का प्राकृतिक - स्रोत भी वही है। कामधेनु की तरह उसका खजाना खाली नहीं होता। घर को बजट का बखूबी संचालन वही करती है।

H ''हेल्पफुल'' यानी वह हर मुश्किल में सहायक होती है। उससे आप अपने दिल की हर बात हर उलझन को कह सकते हैं और उसका समाधन पा सकते हैं।

E ''अर्थ'' यानी पृथ्वी की तरह सहनशीलता है, सृजनसील है माँ। धरती की तरह विशाल हृदय है उसका, उसमें गजब का धैर्य है। वह बड़े से बड़े कष्ट चुपचाप सहती है, लेकिन अपने बच्चों पर आँच नहीं आने देती।

R ''रिस्पान्सेबल'' यानी भगवान ने उसे एक जिम्मेदार इंसान के रूप में धरती पर भेजा है। घर के छोटे-छोटे कार्यों व छोटे बड़े सभी लोगों की विभिन्न प्रकार की जिम्मेदारियों को वही निभाती है।

।। ऐसी माँ को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।।

बी.ए. (कला) तृतीय सेमेस्टर, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

लापता बचपन

– राम विनय मौर्य

वह छोटा मजदूर का बेटा था-
महज छः वर्षों का .....,
तन पर फटे-पुराने मैले कपड़े..
और चेहरा उदास था।
एक चाय की दुकान पर
उसको देखा था मैंने
गिलास धोते और बर्तन
साफ करते हुए।
वह लोगों को चाय पिलाता
दुकानदार की डाँट और गाली भी सुनता ....,
महज छः वर्षों का, मजदूर का बेटा
पेट भरने के लिए, उसे यह सब था सहन करना ...।
मैंने सोचा.. इसका बचपन...,
जिस उम्र में होने चाहिए थे...
इसके हाथों में खिलौने, स्कूल की किताबें...,
हैं अब मजदूरी के सामान
तरस आया मुझे उस पर
हृदय द्रवित हुआ
आँखें आंसूओं से भरीं...
और मैं उसकी दीनता को .... कई
घण्टों तक देखता रहा।

ARTICLE OF COUEGE MAGAZING

- Himalaya Putra Bhattacharya

"Subah-E-Banaras
Thumri, Kajri and khayal
The ghaats have witnessed them all,
Each wave bears a silent testimony,
To the rich musical tradition of kashi.
Evening shadows in the horizon,
The river flows in tranquil oblivion.
On the banks gratified devotees,
Add their tribute to the Ganga Arti.
Dipped in gold by the morning sun,
Yet other subah-E-Banaras has begun.
To the sounds of konch bell mantras,
The river grant million absolutions.
Flames of hopes, dance in the night,
The river shimmers bathed in the light.
84 ghats from Rajghat to Assi,
Mesmerised by the spell of Dev Dipawali.

बी.ए. (कला) तृतीय सेमेस्टर, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

माँ होतीं ममता की सागर

-प्रिन्स चन्द पाण्डेय

माँ होतीं ममता की सागर।
इतना देती हमको आदर।।
न्याय, दया, करूणा की खान।
कितनी भावुक होती माँ।।

खुद अपने दुख सहती है।
कभी न लेकिन कहती है।।
पर हमको खुश रखती है।
प्यार वो इतना करती है।।

दिन भर है वो थकती रहती।
हरदम जैसे चलती रहती।।
कितना प्यार वो हमको देती।
खुशियों का संसार वो देती।।

अपने कम वो सोती है।
लेकिन फिर भी खुश होती है।।
हमको देती गहरी नींद।
गाकर अच्छे-अच्छे गीत।।

कितने प्यार से हमको रखती।
हरदम साथ लिए वो रहती।।
यदि हुआ मैं कभी निराश।
पूरा किया तब माँ ने आस।।

यदि कुछ वो खाने को पाती।
सबसे पहले हमें बुलाती।।
बड़े प्यार से हमें खिलाती।
उसके बाद फिर अपने खाती।।

माँ खुद भूखे रहती है।
कम खाकर ही सोती है।।
हैं पर भरती पेट हमारा।
लेकर सारे दर्द हमारा।।

खुद वो ठण्ड में सोती है।
फिर भी वो खुश होती है।।
हमको तो है वो ढक लेती।
ठण्ड से दूर है वो कर देती।।

गर्मी जब आ जाती है।
माँ को वो तड़पाती है।।
लेकिन मैं गर्मी से खोया।
माँ की शीतल छाँव में सोया।।

होती है माँ इतनी प्यारी।
देतीं है वो खुशियाँ सारी।।
नहीं है कोई इनकी समता।
होती इतनी गहरी ममता

विवेकानन्द जी के अनमोल वचन

- मन और मुँह को एक करके भावों को जीवन में कार्यान्वित करना होगा। इसीको श्री रामकृष्ण कहा करते थे, ''भाव के घर की चोरी न होने पाये।'' सब विषयों में व्यवहारिक बनना होगा। लोगों या समाज की बातों पर ध्यान न देकर वे एकाग्र मन से अपना कार्य करते रहेंगे क्या तुने नहीं सुना, कबीरदास के दोहे में है– ''हाथी चले बाज़ार में, कुत्ता भोकें हज़ार, साधुन को दुर्भाव नहिं, जो निन्दे संसार'' ऐसे ही चलना है। दुनिया के लोगों की बातों पर ध्यान नहीं देना होगा। उनकी भली बुरी बातों को सुनने से जीवन भर कोई किसी प्रकार का महत् कार्य नहीं कर सकता।

* बी.ए.-।।, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

जंग ए कश्मीर

- राम विनय मौर्य

जिस कश्मीर पर तेरी नज़र है-
वो कश्मीर हमारा ज़िगर है।
हटा ले अपनी बुरी नजर इस कश्मीर पर से,
क्योंकि ये कश्मीर, हम हिन्दुस्तानियों के
दिलों में बसा अपना घर है।

तू अपने घरों में पालकर नफ़रत के ढ़ेर,
बाहर वफादार बनता है।
दूसरों के घरों में घुसने की चाहत रखने वाले,
खुद को ईमानदार कहता है।
कैसे कर लें हम तुझपे विश्वास, तू इसके लायक नहीं,
क्योंकि तू हमेशा, पीछे से ही वार करता है।

सरहद पर खड़े होकर,
हम देश की शान के लिए लड़ते हैं,
हम हिन्दुस्तानियों को मौत का डर नहीं।
हम तिरंगे के कफ़न और हिन्दुस्तान के लिए मरते हैं।

जब सिर पर बाँध के कफ़न अपने
तिरंगे के साथ हम चलते हैं।
लगती है हमको अनगिनत गोलियाँ,
फिर भी नहीं हम डरते हैं-
इतना जुनून होता है इस देश की शान का हमको-
कि चिंगारी से शोला तक, हम बनते हैं।

* बी.ए.-III, डी.ए.वी.पी.जी. कालेज, वाराणसी

ABOUT THE COLLEGE

- Dr. Vimal Shankar Singh

The idea of an extension of the Banaras Hindu University in the heart of the city, originally conceived by Pt. Ram Narayan Mishra, an intimate follower of the Mahamana. who established the present D.A.V. College. It was further strengthened by the investment of Babu Gauri shankar Prasad jee and inspired by the Trustees of the Jagarnath Prasad Trust who execupted a will to the effect that 'The executers and the Trustees shall spend rupees one Lac or thereabouts for purchasing a piece of land in the year 1936 and erecting a suitable building thereon and shall keep invested on Govt. Securities Another Lac of rupees for the maitenance and management for the said institution". The will also says. "It is my earnest wish that the said institution when established should be affiliated with the Banaras Hindu University.

The College was established in 1938 as an Intermediate College recognised by Banaras Hindu University. it got degree status from the University in 1947 and permanent affiliation in 1954. The College started running undergraduate courses in the faculty of Arts. Social Science and Commerce.In 2008. University allowed the College to start Ph.D. (Reasearch) and Post Graduate courses initsally in four subjects namely. Commerce, Sociology, Economics and History and further in psychology, political Science, English The College is catering with distinction not only to the needs of the students of the eastern districts of U.P. but also the adjoining States too.

The College has been accredited by "NAAC" with Grade 'A'.

Faculty Members

Dr. Satya Deo Singh, Principal

(1) Faculty of Commerce :

1. Dr. Pradeep Kamal, Asso. Prof.
2. Dr. Vijay Kumar Lal Srivastava Asso. Pro.
3. Dr. Awadhesh Kumar Mishra, Asso. Pro.
4. Dr. Onkar Nath Dubey, Asso. Prof.
5. Dr. Sharad Kumar Sharma, Asso. Prof.
6. Dr. Vijay Nath Dubey, Asstt. Prof.
7. Dr. Birendra Kumar Singh, Asstt. Prof.
8. Miss Sakshi Chaudhary, Asstt. Prof.
9. Dr. Rahul, Asstt. Prof.
10. Sri Sanjay Sah, Asstt. Prof.

(2) Faculty of Social Science :

Department of Psychology :

1. Dr. Satya Gopal Jee, Asstt. Prof.
2. Dr. Richa Rani Yadav, Asstt. Prof.
3. Dr. Shailja Singh, Asstt. Prof.
4. Dr. Kalpana Singh, Asstt. Prof.
5. Dr. Akhilendra Singh, Asstt. Prof.
6. Dr. Kamaluddin Sekh, Asstt. Prof.

Department of History :

7. Dr. Hira Lal Pandey, Asso. Prof.
8. Dr. Pravesh Bhardwaj, Asso. Prof.
9. Dr. Vinod Kumar Chaudhary, Asst. Prof.
10. Dr. Pratibha Mishra, Asstt. Prof.
11. Dr. Sanjay Kr. Singh, Asstt. Prof.
12. Dr. Sobh Nath Pathak, Asstt. Prof.

Department of Sociology :

13. Dr. Vikramaditya Rai, Asstt. Prof.
14. Dr. Madhu Sisodia, Asstt. Prof.
15. Dr. Neha Chaudhari, Asstt. Prof.
16. Dr. Hasan Bano, Asstt. Prof.
17. Dr. Ziyauddin, Asstt. Prof.
18. Dr. Sushama Singh, Asstt. Prof.

* Asso. Professor & Head Deptt. of Economics, D.A.V. P.G. College.

Department of Political Science :

19. Dr. Arun Kumar Srivastava, Asso. Prof.
20. Dr. S.B. Singh, Asso. Prof.
21. Dr. Swati Sucharita Nanda, Asso. Prof.

Department of Economics :

23. Dr. Vimal Shankar Singh, Asso. Prof.
24. Dr. Pradip Kr. Sen, Asso. Prof.
25. Dr. Anoop Kr. Mishra, Asstt. Prof.
26. Dr. Alok Kr. Pandey, Asstt. Prof.
27. Shri Mugal Singh, Asstt. Prof.

(3) Faculty of Art :

Department of Hindi :

1. Dr. Sarvesh Kumar Singh, Asstt. Prof.
2. Dr. Rakesh Kumar Dwivedi, Asstt. Prof.
3. Sri Rakesh Kumar Ram, Asstt. Prof.

Department of English :

4. Dr. Sangeeta Jain, Asstt. Prof.
5. Dr. Indrajeet Mishra, Asstt. Prof.
6. Dr. Sri A.L. Ekka, Asstt. Prof.
7. Dr. Vandana Balchandani, Asstt. Prof.

Department of Sanskrit :

8. Dr. Lallan Prasad Jaiswal, Asso. Prof.
9. Dr. Mishri Lal, Asso. Prof.
10. Dr. (Smt.) Poonam Singh, Asstt. Prof.

Department of Philosophy :

11. Dr. Harishchandra Yadav, Asstt. Prof.
12. Dr. Satish Kumar Singh, Asstt. Prof.
13. Dr. Sarita Rani, Asstt. Prof.

Department of Urdu :

14. Dr. Habibullah, Asstt. Prof.

Department of AIHC & Arch. :

15. Dr. Prashant Kashyap, Asstt. Prof.
16. Dr. Seema, Asstt. Prof.
17. Dr. Mukesh Kumar Singh, Asstt. Prof.

Department of Physical Education

18. Mrs. Minu Lakra, Asstt. Prof.

ADMINISTRATIVE STAFF

(A) Office

1. Smt. Sudha Singh, Senior Asstt.
2. Sri Sunandan Bhattacharya, Steno/PA
3. Sri Kunwar Shashank Shekhar, Jr. Asstt.
4. Sri Anil Kumar Mishra, Jr. Asstt.
5. S. Prashant Singh, Jr. Asstt.
6. Sri Dudh Nath Verma, Daftari
7. Sri Shyamji Singh Kushwaha, Peon
8. Sri Girdhari Lal, Peon
9. Sri Ram Kishun Prajapati, Peon
10. Sri Sanjeev Singh, Peon
11. Sri Ram Bahadur Sharma, Peon
12. Sri Sanjeev Singh, Peon
13. Sri Arvind Peon
14. Sri Vijay, Sweeper
15. Sri Arvind
16. Sri Rajendra

(B) Finance Office :

1. Sri Ashwini Srivastava, Senior Assis.
2. Smt. Sapna Srivastava, Junior Assistt.
3. Sri Nitin Chandra Pathak, Junior Asstt.

(C) Scholarship & Statistics Section

1. Sri Dharma Pratap Singh, Sr. Asstt.
2. Sri Satyajeet Rawat, Jr. Asstt.

(D) Examination Section

1. Sri Om Prakash Singh, Sr. Asstt.
2. Sri Anil Kumar Ojha, Book Lifter
3. Sri Vasudeo Singh, Peon

(E) PG & Research Section

1. Sri Anil Kumar Mishra, Jr. Asstt.

(F) Psychology Laboratory :

1. Sri Dinesh Kumar

(G) Library Section :

1. Sri Krishna Kumar, Librarian
2. Smt. Ruchi Nanda, SPA
3. Sri Amar Dev Yadav, Lib. Asstt.

4. Sri Pradeep Kumar, Lib. Asstt.
5. Sri Sewa Ram, Lib. Asstt.
6. Sri Shankar Dayal Yadav, Lib. Asstt.

COMMITIES

The College has constituted a number of Committees to run the college smoothly and democratically.

Faculty members and staff members of the college are actively engaged in these committes of the College.

1. Internal Quality Assurance Commitee
2. College Committee
3. Library Committee
4. Students Advisor
5. Proctorial Board
6. Finance Committee
7. Teacher's Academic Advancements Committee
8. Admission Committee
9. Exam and Results Assessment Committee
10. Freeship Committee
11. Scholarship Committee (SC/ST)
12. Sports Committee
13. Hostel Committee
14. Placement Committee
15. Attendence Committee
16. Health and Sanitation Committee
17. Coordination Unit-N.S.S.
18. Coordination Unit-N.C.C.
19. Time- Table Committee
20. College Publication Committee
21. Cultural Committee
22. Grievance Redress Committee
23. Alumni Association
24. Stundents Exposure Committee
25. Academic Calandar Committee
26. Master Plan and Future Plan Committee
27. Display Committee
28. Plantation Committee
30. Creative Activities & Communication Skill Committee

(C) Contribution :

1. As Members in the above mentioned committees faculty members actively participate in the concened bodies in the wider interest of both college and university in solving related issues and problems.

ACADEMIC CURRICULUM

At present the college in running undergraduate courses in three Faculties Viz.

1. B.Com (Faculty of Commerce)
2. B.A. (Faculty of Arts)
3. B.A. (Faculty of Social Science)

The number of seats of B.Com, B.A. (Arts) and B.A. (Social Science) are 193,271, 287 in Part-I and the total no. of students in Under Graduate level are 579,813 and 861 respectively, comprising a total srtength of 2253. In addition, the college is undertaking postgraduate courses in six departments. The number of seats alloted by the University is 30 students in each PG subject and additional 3 students may take admssion on paid seat.

ADDMISION

BHU conduct, 'Joint Entrance Test' (UET, PET & CRET) for the undergraduate, Postgraduate and research students of the University as well as of its college and from this test admission in the colleges are done.

EXAMINATION :

Based on BHU's guidelines and directions, the examination system is as follows :

A. Internal Assesment in all the department.
B. Examinations are conductal by B.H.U. and in university campus its self.
C. Degree's and mark-sheets of the colleges of the BHU are issued by the University

under its name and mono.

NEW PROGRAMMES OF STUDY INITSATED BY THE COLLEGE

1. Augmenting/ strengthening educational environment by upgrading college and introduction of new courses.

   Running successfully Post Graduate Course and Ph.D. Reasearch in four Subjects, viz, Commerce, Econonics, Sociology, History and opening P.G. courses in three more subjects vig. Political Science, Psychology and English.

Add on Courses

Running Courses :

1. Under Graduate Diploma in Computer Application (UGDCA) permitted by B.H.U.
2. Travels & Tourism Management permitted by UGC and BHU.
3. Communicative English permitted by UGC and BHU.
4. Risk and Insurance Management permitted by UGC and BHU.

Newly Approved Course : College has got a near programme on "प्रायोजन मूलक हिन्दी एवं पत्रकारिता **From UGC.**

Imparting Communication Skill, through-

1. Spoken English Classes for UG&PG students.
2. Saskrit Sambhasan Classes -Ten day's shivir for speaking Sanskrit.

SODH :

Encouraging teachers to submit projects to UGC/ICSSR and to the college under the umbrella of 'SODH'.

I. On-going projects. (UGC/ICSSR Sponsored)

Major project - from UGC-

1. Dr. P.K. Sen and Dr. Anoop Kumar Mishra, Economics
2. Dr. V.K.L. Srivastava, Commerce
3. Dr. Indrajeet Mishra, English
4. Dr. S.D. Singh, Commerce
5. Dr. S.B. Singh, Pol. Science
6. Anup Kr. Mishra, Economics
7. Dr. V.D. Rai, Sociology
8. Dr. Poonam Singh, Sanskrit
9. Dr. Sarvesh Singh, Hindi

Minor Projects from UGC-

1. Dr. Mukesh Singh, A.I.H.C.
2. Dr. Satya Gopaljee, Psychology
3. Dr. Madhu Sisodia, Sociology
4. Dr. Alok Kr. Pandey, Economics

2. Establishing various forum, for Academic Activities-

a. Forum for Academic advancement for teachers.

b. SODH for augmenting research and C. research based lecture in the college, "Stri Vimarsh : A forum for female staff and girl students of the college,

c. 'Stri Vimarsh' A forum the fema be and girl students of the college.

3. Extraordinary Achievements :

1. DAV PG College got "A" grade by "NAAC".
2. Two UGC recognized study centres established in the College :

a) Gandhian Study Center.

b) Dr. Ambedkar Study Centre.

3. Remedial coaching for SC/ST/OBC (non creamy layer) Minorities established in the College & recognized by UGC.

CO- CURRICULAR and EXTRA CURRICULARACTIVITIES

Placement & Carrier Guidance : Universal Sompo Insurance Co. & Reliance India Insurance Co. have selected more than 15 students for job.

Extending Personal Guidance & conducting Aptitude Test for students.

Memorandum of Understanding (MoU signed with-

I. Arya Mahila P.G. College, Varanasi
ii. Janna Pravah, Varanasi.
iii. Ganga Seva Nidhi, Varanasi
iv. Universal Sompo Insurance Co. Ltd. Mumbai.

*** Cultural Event Organised-**

I. Teacher day
ii. Youth Fest "HARMONY"
iii. Participation in "SPANDAN" organised by BHU and Won 02 prizes.
iv. Chhatra Kavi Sammelan
v. Mushaira

*** Sports Events :** The College has organized several sports Events at College level. volley Ball Competition, Foot Ball, Cricket, Table Tennis, Badminton, Sports Meet.

* NSS : Operating 8 Units

* NCC : Operating 01 Unit Many students of the college are member of the University Team.

Campus Development

The College is equipped with the following infrastructure :

1. Hostel for Boys.
2. Library for students and staff equipped with more than 40,000 books, and 4500 on line journals and nearly 30 research jounals along with separate study rooms for teachers, PG students and research Scholars with computer, internet facilities and INFLIBNET.
3. College building accommodates three Faculties (Commerce, Social Science & Arts) and one computer Laboratory for UGDCA Programme and Travel & Tourism Management, Risk & Insurance Managements Language Lab.
4. Psychology Labrotory.
5. Big Play ground and sports equipment for Cricket, Hockey, Football, Voleyball & Badminton etc.
7. Language Lab.

Other Infrastructures

* Separate rest rooms for female teaching staff & girl students.

* Potable water with refrigeration.

* Separate staff rooms for PG Departments

* Provision of Generator, Invertors Fax, Digital Notice Board, LCD Projectors.

College Publications :

* Prabha

* Journal of Economics & Commece

* Shtri Vimarsh

* Broucher

* Voice of Commerce.

Strengthening information dissemination through :

* Brochure with all details about running courses and fee structures.

* Academic Calandar

* Digital Notice Board